मध्यप्रदेश/छत्तीसगढ़

RNI No.: MPBIL/2001/5256
DAVP Code : 128101
Postal Registration No. : Bhopal/MP/581/2021-2023

Publish Date : Every Month Dt. 05
Posting Date : Every Month Dt. 15
Rs. 10/-

जगत विज़न

वर्ष : 23 अंक : 12

5 अगस्त 2023

=

कायम रही परंपरा विश्वासघात की

- जयाजीराव सिंधिया 1857 में गद्दारी नहीं करते तो 100 साल पहले मिल जाती आजादी।
- अब 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पुश्तैनी परंपरा को कायम रख, गिरा दी थी कमलनाथ सरकार।

प्रेरणा स्त्रोत : स्व. श्री जगत पाठक

निर्भीक पत्रकारिता

संपादक	विजया पाठक
कार्यकारी संपादक	समता पाठक
दिल्ली संवाददाता	नीरज दिवाकर
पश्चिम बंगाल ब्यूरो चीफ	अमित राय
संवाददाता	अर्चना शर्मा
बिलासपुर संवाददाता	मणिशंकर पाण्डेय

सम्पादकीय एवं विज्ञापन कार्यालय

भोपाल

एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल
मो. 98260-64596, मो. 9893014600
फोन : 0755-4299165 म.प्र. स्वत्वाधिकारी,

छत्तीसगढ़

4-विनायका विहार, रिंग रोड, रायपुर

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक,

विजया पाठक द्वारा समता ग्राफिक्स एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल म.प्र. द्वारा कम्पोज एवं जगत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स प्लाट नं. 28 सुरभि विहार बीडीए रोड भेल भोपाल से मुद्रित एवं एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित संपादक विजया पाठक। समस्त विवादों का कार्यक्षेत्र भोपाल सत्र-न्यायालय रहेगा। पत्रिका में प्रकाशित किये जाने वाले संपूर्ण आलेख एवं सामग्री की जिम्मेदारी लेखक एवं संपादक की होगी।

E-mail : jagat.vision@gmail.com
Website: www.jagatvision.co.in

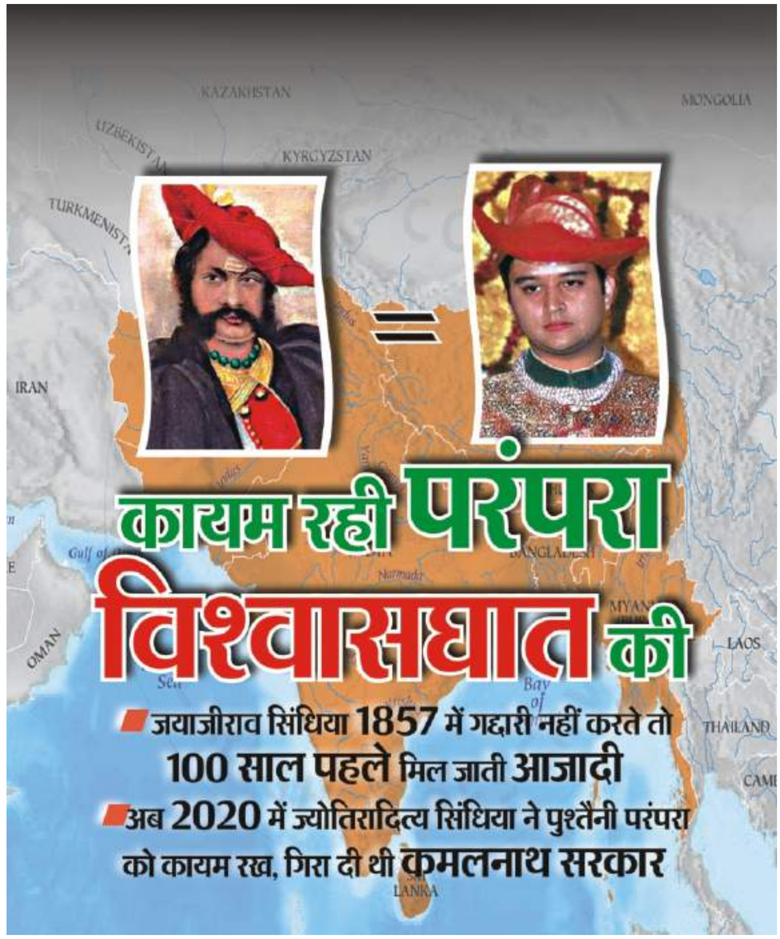

(पृष्ठ क्र.-6)

मणिपुर हम शर्मिंदा है?

पृष्ठ क्रमांक - 56

Lesser Known Heroes of India's first war of Independence (1857)

पृष्ठ क्रमांक - 62

The Great Betrayal of Shreemants Continues...

संपादकीय

पुश्तैनी परंपरा के संवाहक ज्योतिरादित्य

केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को बीजेपी में आये तकरीबन चार साल होने को हैं। इन चार सालों में ज्योतिरादित्य के साथ कई उतार-चढ़ाव हुए। मुख्यमंत्री की कुर्सी पाने की लालसा पाले सिंधिया को केन्द्रीय मंत्री बनाया। अब कुछ महिने बाद ही मध्यप्रदेश में विधानसभा के चुनाव हैं। सिंधिया की महत्वाकांक्षाएं फिर जागृत होने लगी हैं कि इस बार शायद सीएम का पद मिल जायेगा। वहीं बीजेपी भी सिंधिया के मामले में पसोपेश में है क्योंकि बीजेपी के अंदरूनी सर्वे में सिंधिया के कारण पाटी की स्थिति कमजोर हो गई है। खासकर ग्वालियर-चंबल क्षेत्र की 34 सीटों पर तो बीजेपी की स्थिति दयनीय है। सर्वे के मुताबिक यहां पर बीजेपी दहाई अंक में भी नहीं पहुँच पायेगी। जानकारों का मानना है कि ज्योतिरादित्य सिंधिया के कारण ही बीजेपी की ऐसी स्थिति हो रही है। अब बीजेपी की स्थिति ऐसी हो गई कि न तो वह निगल पा रही हे और न ही उगल पा रही है। हालात तो आने वालों महिनों में और बिगड़ने वाले हैं। क्योंकि जब प्रदेश में प्रत्याशियों के टिकिटों का बंटवारा होगा तब आपसी मारामारी और ज्यादा होगी क्योंकि हम जानते हैं कि सिंधिया काफी महत्वाकांक्षी और मौकापरस्त राजनेता हैं। वह जिस उद्देश्य और मकसद को लेकर बीजेपी में आये हैं यदि वह पूरा नही हुआ तो वह एक बार फिर विश्वासघात करने से नही चूकेंगे। गौरतलब है कि अवसरवादी राजनीति करने की सिंधिया की पुस्तैनी परंपरा है जो जयाजीराव सिंधिया से चली आ रही है। उसके बाद विजयाराजे सिंधिया, माधवराव सिंधिया और अब ज्योतिरादित्य सिंधिया। इन सभी ने अपने राजनीतिक हित साधने के लिए कभी भी समझौता नही किया है। हमने इतिहास पढ़ा है। इतिहास में दर्ज वाक्यों को जाना है, कैसे सिंधिया राजवंश पर 1857 की क्रांति में गद्दारी के दाग लगे हैं। वह दाग आज भी सिंधिया खानदान का पीछा नही छोड़ रहे हैं, छोड़ना भी नही चाहिए क्योंकि बात देश की आज़ादी की थी। हर हिन्दुस्तानी को सिंधिया की गद्दारी पर गुस्सा है। लेकिन विडम्बना देखिए आज बीजेपी सियासत के फायदे के लिए ज्योतिरादित्य सिंधिया को साथ रखे हुए हैं। जबकि इनके सबसे बड़े पुरोधा वीर सावरकर ने जयाजीराव सिंधिया को कितना भला-बुरा कहा है। मुझे लगता है कि शायद बीजेपी के नेताओं ने वीर सावरकर को नही पढ़ा है। यदि पढ़ा होता तो शायद सिंधिया को अपनी पार्टी में लेने के लिए हिचकते।

खैर, अब आने वाले समय में सिंधिया बीजेपी के लिए मुसीबत बनने वाले हैं। जिस तरह उन्होंने कांग्रेस को परेशान किया था अब वही स्थिति बीजेपी की होने वाली है। देखने वाली बात यह है कि बीजेपी सिंधिया को कैसे और कब तक झेल सकती है। क्या 2023 तक ही सिंधिया बीजेपी में होंगे? और क्या सिंधिया 2024 में बीजेपी से हटकर किसी अन्य पार्टी में अपना ठिकाना ढूंढ रहे होंगे?

विजया पाठक

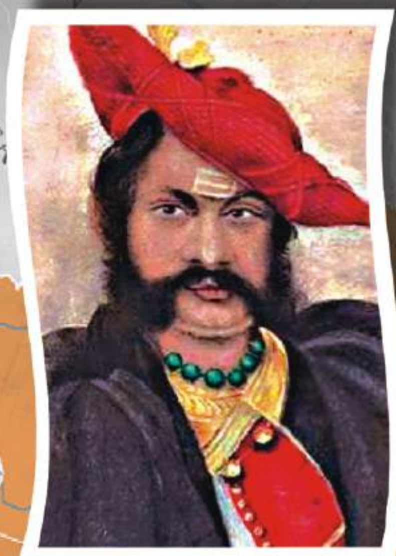

कायम रही परंपरा विश्वासघात की

- जयाजीराव सिंधिया 1857 में गद्दारी नहीं करते तो 100 साल पहले मिल जाती आजादी
- अब 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पुश्तैनी परंपरा को कायम रख, गिरा दी थी कमलनाथ सरकार

जब-जब देश के अंदर आजादी और 1857 की क्रांति की बात होती है, सिंधिया राज परिवार की गददारी को प्रमुखता से याद किया जाता है। 1857 का वह ऐसा दौर था जिससे पूरे देश में भारत की आजादी की अलख एक साथ जली थी। इस क्रांति की प्रेरणास्त्रोत थी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई। पूरे राष्ट्र में अंग्रेजों के विरूद्ध ऐसा माहौल कभी नहीं बना था। लेकिन एक राजवंश की गददारी और दगाबाजी ने इस पूरी क्रांति पर पानी फेर दिया था। यह राजवंश था ग्वालियर का सिंधिया राजवंश। सिंधिया की इसी गददारी पर देश के तमाम इतिहासकारों और लेखकों ने पुस्तकें लिखी हैं। इन पुस्तकों में सिंधिया खानदान की दगाबाजी पर तरह-तरह की बातें कहीं हैं। जिसका संक्षिप्त विवरण इस कवर स्टोरी में प्रकाशित कर रही हूं।

आजाद भारत के बाद की बात करें तो यहां पर भी सिंधिया राजवंश ने अपनी महत्वाकांक्षाओं और मौकापरस्ती के लिए भारतीय राजनीति का पूरा फायदा लिया है। इसकी शुरूआत की राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने। 1967 में जब मध्यप्रदेश में कांग्रेस की डीपी मिश्रा की सरकार थी। एक मामूली सी बात पर राजमाता सिंधिया ने 26 विधायकों को अपने पाले में कर डीपी मिश्रा की सरकार गिरा दी थी। और बाद में जनसंघ से जा मिली थी। इसके अलावा इनके ही पुत्र माधवराज सिंधिया ने भी कांग्रेस से बगावत करते हुए अपनी एक अलग पार्टी बना ली थी। हालांकि उनका यह प्रयास सफल नहीं हो सका और उनकी पार्टी बुरी तरह हारी। इसके बाद बात आती है वर्तमान राजनीति के राजनेता ज्योतिरादित्य सिंधिया की। जिन्होंने ने भी 2020 में अपने खानदान की परंपरा को जारी रखते हुए एक चुनी हुई सरकार को गिरा दिया था। अभी कुछ दिन पहले ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बयान दिया कि उनकी रगों में राजमाता सिंधिया का खून है, सिंधिया जी खून तो आपमें जयाजी राव सिंधिया का भी है, जिन्होंने देश से गददारी कर अंग्रेजों के सेवक बने। आपके वंशज जयाजी राव सिंधिया के बारे में भाजपा और संघ के पुरोधा वीर सावरकर ने अपनी किताब में कोबरा, गद्दार और कायर कहा। सिंधिया जी आपके बयान में आपने जो बोला उसे शुद्ध हिंदी में गद्दारी की कहा जायेगा। जैसे जयाजी राव ने देश और पेशवा के साथ किया, राजमाता ने तब कांग्रेस के साथ और अब आपने कमलनाथ की कांग्रेस सरकार के साथ किया।

याद कीजिए सुभद्रा कुमारी चौहान की वो पंक्तियां जो जयाजी और सिंधिया परिवार के लिए लिखा 'अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी रजधानी थी, बुंदेले हरबोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी'। 1857 क्रांति के इतिहास से संबंधित करीब-करीब सभी दस्तावेजों में सिंधिया राज परिवार को दोषी मढ़ा गया। वीर सावरकर, प्रतिभा रानाडे, टीआरई होम्स, हरलीन सिंह और राशिद किदवई सभी ने सिंधिया राज परिवार पर पेशवा और रानी लक्ष्मीबाई के साथ गद्दारी करना बतलाया है। साथ-साथ सिंधिया और अंग्रेजों की परम मित्रता का भी उल्लेख किया है। वास्तव में सिंधिया राज परिवार के कारण ही देश को 100 वर्ष बाद आजादी मिली। अगर यह 1857 की क्रांति में उस समय राव साहब पेशवा, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई समेत अन्य का साथ दे देते तो भारत 1857 में ही आजाद हो जाता। सिंधिया खानदान के बारे में झाँसी की रानी के वंशज ने कहा है कि अगर सिंधिया क्रांति में साथ देते तो देश 1857 में ही आजाद हो जाता। इसके साथ ही झांसी के लोग आज भी सिंधिया वंश से नफरत करते हैं। हमने झांसी जाकर देखा कि झांसीवासियों में सिंधिया वंश के

प्रति कितनी नफरत और अलगाव है। यहां के लोग सिंधिया वंश के सभी लोगों को गद्दार मानते हैं। यहां के लोगों को मानना है कि यदि झांसी मध्यप्रदेश का हिस्सा होती तो सिंधिया वंश की राजनीति कभी चमकती ही नही।

खैर, इतिहास अपने आपको दोहराता जरूर है। हम जानते हैं कि राजनीति में इतिहास का बड़ा महत्व रहता है। पर कभी-कभी राजनैतिक दल एतिहासिक गलती कर बैठ्ते हैं, जिसका अंदाजा उनको बाद में लगता है। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस से बगावत कर प्रदेश में भाजपा सरकार तो बनवा दी। लेकिन अब सिंधिया भाजपा के लिए परेशानी का सबब बन पड़ा है। भाजपा के लिए सिंधिया नाम ही अब गले की हड्डी बनता जा रहा है। जिस सिंधिया ने जो किया वो उसका अपना फैसला था पर आश्चर्य की बात यह है कि अपने आपको राष्ट्रभक्त कहने वाली भाजपा और संघ इस मामले में मौन क्यों है। सिंधिया राज परिवार के कारण भारत को 90 साल आजादी देर से मिली जबकि भाजपा ने सिंधिया परिवार को राजनीतिक शक्ति प्रदान कर रही है। संघ के ही पुरोधा वीर सावरकर ने जयाजी राव सिंधिया को कोबरा तक कहा है। आखिर क्रांतिकारियों के खून से रंगे सिंधिया वंशजों के पैलेस में जाकर भाजपा के शीर्ष नेता चांदी की थाली में खाना कैसे खा सकते हैं? भाजपा देश के साथ गद्दारी करने वालों को राजनीतिक शक्ति क्यों दे रही है। ज्योतिरादित्य सिंधिया को चुनी हुई सरकार से गद्दारी करने के इनाम के रूप में केंद्रीय मंत्री समेत मध्यप्रदेश भाजपा के प्रमुख नेता क्यों बनाया गया?

मध्यप्रदेश में पिछले 20 साल से भाजपा का शासन है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का दोहरा चरित्र भी सामने आ रहा है। एक तरफ वो गद्दार सिंधिया का साथ देते हैं, वहीं 1857 के क्रांति में सब कुछ होम करने वाले वीर तात्या परिवार की पेंशन बंद कर देते हैं। शर्म आती हैं कि जिन वीरों ने अपने प्राण, अपने राजपाठ अपने ऐशो-आराम को त्याग कर देश के लिए सब कुछ न्यौछावर कर दिया, उनकी पेंशन शिवराज सिंह सरकार और भाजपा ने बंद करवा दी। विडंबना है जिस रानी लक्ष्मीबाई ने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया उनके वंशज झांसी किले में टिकिट ख़रीद कर अंदर जाते हैं। अभी हाल में ही प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि मध्यप्रदेश चंद्रशेखर, राजगुरु और बिस्मिल का क्षेत्र है और कांग्रेस कन्हैया कुमार को प्रदेश में लाकर उनका अपमान कर रही है। वैसे विष्णुदत्त शर्मा जी अगर इन क्रांतिकारियों का आप सच में सम्मान करना चाहते हैं तो देश की आजादी के सबसे बड़े खलनायक सिंधिया राज परिवार से आए ज्योतिरादित्य सिंधिया को आप पार्टी से क्यों नहीं निकाल देते? भाजपा का यह दोहरा चरित्र क्यों? एक तरफ आप गद्दार सिंधिया राज परिवार का साथ दे रहे हैं। वहीं 1857 के यह राज परिवार जिन्होंने अपना सब कुछ देश के लिए बलिदान कर दिया, उनकी उपेक्षा की जा रही है। अगर वाकई में आप इनके सम्मान में कुछ करना चाहिए तो कम से कम उस गद्दार सिंधिया राज परिवार के समान इनका महल-किला, जमीन और जायदाद इनको लौटा देना चाहिए। जब सिंधिया राज परिवार के लिए पहले आपने कोविनेंट के तहत जायदाद में गड़बड़ी कर बहुत सारी प्रापर्टी उनके नाम करवा दी, ऐसे में कम से कम रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, राव साहब पेशवा की जायदाद वापस लौटानी चाहिए। क्योंकि 1948 में कोविनेंट की संपत्तियों की सूची से बाहर भाजपा की सरकारों ने इनके नाम करवा दी। अब केन्द्र और राज्य दोनों में भाजपा सरकारें हैं तो क्यों नहीं। इन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को उनका राजपाठ वापस किया जाए। इनकी संपत्ती इनको वापस की जाए।

विजया पाठक

1857 की क्रांति और भारत की आजादी एक-दूसरे से परस्पर संबंधित है, क्योंकि वहीं एक दौर था, जब देश के अंदर आजादी की अलख एक साथ जली थी। लेकिन देश के एक राजवंश की गद्दारी ने इस लौ को बुझा दिया था। निश्चित ही वह लौ जल जाती तो भारत 1947 में नहीं 1857 में ही आजाद हो जाता। साथ ही अखण्ड भारत को जो सपना था वह भी पूरा हो जाता। लेकिन जयाजीराव की अवसरवादी सोच ने इस सपने को पूरा नहीं होने दिया।

सिंधिया है गद्दार, कोबरा सांप, डरपोक और अंग्रेज भक्त

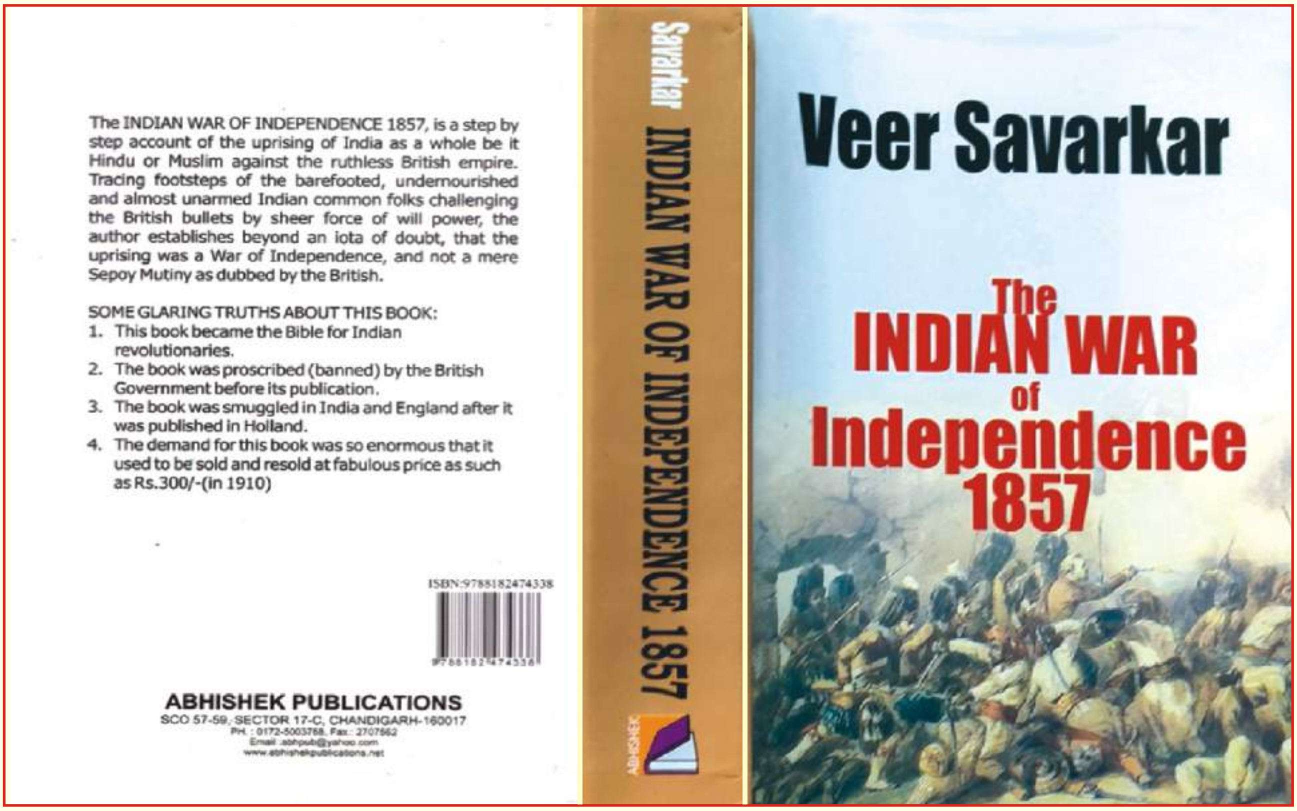

वीर सावरकर ने अपनी किताब द इंडियन वॉर आफ इंडिपेन्डेंस 1857 में भारत की पहली स्वतंत्रता संग्राम गाथा 1857 का विश्लेषण किया है। किताब में वीर सावरकर ने लिखा है कि जयाजीराव सिंधिया गद्दार, कोबरा सांप और अंग्रेज भक्त है। उल्लेखनीय है कि कैसे इस स्वतंत्रता संग्राम की पहली ज्वाला को बुझाने का काम अपनों ने ही किया था, जिसमें जयाजी राव सिंधिया अग्रणी रहे। अगर सिंधिया उस समय क्रांति में साथ देते तो पहले ग्वालियर फिर आगरा और कानपुर जीतकर अंग्रेजों को देश से बाहर कर दिया जाता। भारत को आजादी लगभग 100 वर्ष देर से मिलने का प्रमुख कारण सिंधिया राजघराने की गद्दारी रही थी।

सिंधिया परिवार का राजनीतिक सफर और मौकापरस्ती

विजयाराजे सिंधिया इंदिरा गांधी के खिलाफ 1980 में चुनाव हार चुकी हैं और वसुंधरा राजे सिंधिया भी भिंड से 1984 में चुनाव हार चुकी हैं। बीजेपी और संघ से इस

of the brave and true-hearted of all nations.'4

• • •

CHAPTER X

Ranee Lakshmi Bai

GIVE up my Jhansi? I will not. Let him try to take who dares! With this challenge the heroic Ranee of Jhansi rose against the British and as it is recorded in previous parts of this History she assumed the leadership of the Revolution, drove the English and began to rule at Jhansi as the Queen of the province. The forces of the Revolution wreaked a bloody vengeance on the English people and army and left not a trace of their rule at Sagar, Naogaon, Banda, Banapur, Shabgarh and Karki. The people everywhere hailed the Queen as their own. She then busied herself-in restoring order and peace in her liberated province.

The Ranee's daily life at this period has been described as follows :— 'The Bai got up at five in the morning and took a bath with fragrant *attar*. After dressing and she generally wore a *Chanderi Saree* of faultless white—she would sit for her daily prayers. First, she dropped the necessary water as a *prayaschitta* for keeping hair on her head after her husband's death; then, began to worship the *Tulsi* in the *Tulsi* grove. Then began the *Parthiva Puja* at which the Durbar musicians would sing in choir. *Puraniks* would then start reading the *Puran*. Then, Sirdars and dependants came and she returned their usual salutes. Being very keen of memory, even if a single man among the seven hundred and fifty who paid their respects to her in the morning was not present, the very next day, the Bai would not fail to inquire why he did not come the previous day.

4. Malleson's *Indian Mutiny*, Vol. IV, page 381.

Ranee Lakshmi Bai 441

The same terrible thunder is in her voice; her eyes are spouting forth the red flames of anger! Mardan Singh, Raja of Banapur, the enraged chief of Shahagarh, the brave Thakurs, with their lives in their hands, Sirdars of Bundelkhand, resolute as ever, with their many followers—all these hot incendiary elements in the interior of Jhansi are burning and flame-red. The flames leap up even as the *Jaripatka*; and look, the central figure of the whole fight is there, shining above all! Aye, she is the central idea, the flashing impersonation of Swaraj ! She is the inspiration, she is the incarnation of Liberty!

In spite of the barrenness of the country around, the English approached Jhansi. For, thanks to the loyalty of the Scindia and the Raja of Tehri, the force was throughout the operations abundantly supplied with grass, firewood, and vegetables.[2] As the Scindia and the Raja of Tehri are helping the Feringhis, surrounded as you are by treachery and disloyalty, betrayed by relations as by strangers, you have not the slightest hope of success. Why not then avoid extinction by surrendering to the English? But, surrender? And for the Ranee of Jhansi ? Dewan Lakshman Rao, Moro Punt Tambe, brave *Thakurs* and Sirdars, all heroes of Liberty, if you surrender, you will be saved; if you fight, you will die. Which will you choose?

Jhansi answered from her thousand mouths, sternly, in the words of the Scripture, 'As everyone who is born must die, why sully fair fame uselessly?'

So, it was determined to give battle to the English for the honour of the country. And Jhansi was busy by night and by day preparing for the fight. Brave men, there were many in her army; but trained men, there were very few. Want of discipline was very apparent. The Queen herself, however, led the whole army. On every rampart and every gate, she was moving about actively; she was standing where

2. Malleson's *Indian Mutiny*, Vol. V, page 110.

द इंडियन वार आफ इंडिपेंडेन्स 1857 नामक किताब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पुरोधा एवं विचारक वीर सावरकर ने 1908 में मराठी में लिखी जिसका 10 मई 1909 को अंग्रेजी संस्करण लंदन में प्रकाशित किया गया था। यह किताब 1857 में हुई भारतीय क्रांति का उल्लेख करने के उद्देश्य से लिखी गई थी। वीर सावरकर फ्री इंडिया सोसायटी लंदन की साप्ताहिक मीटिंग में किताब का कुछ अंश पढ़ा करते थे। किताब का अंग्रेजी संस्करण श्रीयुत वी.वी.एस.अय्यर के नेतृत्व में हुआ था। किताब के भाग-10 में पृष्ठ क्रमांक 435 से 470 में दर्ज ऐतिहासिक उल्लेख में 1857 की क्रांति में रानी झांसी लक्ष्मी बाई का व्यक्तित्व, शौर्य, पराक्रम के साथ-साथ सिंधिया परिवार की गद्दारी का विशेष उल्लेख किया गया है।

वीर सावरकर ने अपनी किताब के पृष्ठ क्रमांक 441 में सिंधिया की गद्दारी का वर्णन करते हुए लिखा कि "In spite of the barrenness of the country around, the English approached Jhansi. For, thanks to the loyalty of the Scindia and the Raja of Tehri, the force was through out the operations abundantly supplied with grass, firewood and vegetables. As the Scindia and Raja of Tehri are helping the Feringhis, surrounded as you are by Treachery and

परिवार के इतने गहरे संबंधों के बावजूद बीजेपी नेता इस परिवार को निशाना बनाने से बाज नहीं आते हैं। एक वक़्त था जब यह परिवार ग्वालियर इलाके में कम से कम 50 विधानसभा सीटों पर हार-जीत तय करता था, लेकिन अब ज्योतिरादित्य सिंधिया

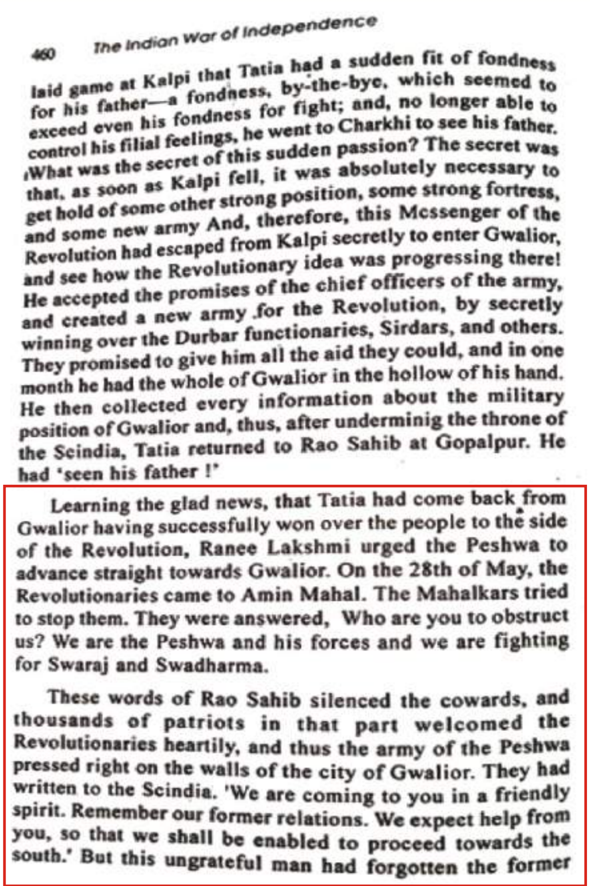

460 The Indian War of Independence

laid game at Kalpi that Tatia had a sudden fit of fondness for his father—a fondness, by-the-bye, which seemed to exceed even his fondness for fight; and, no longer able to control his filial feelings, he went to Charkhi to see his father. What was the secret of this sudden passion? The secret was that, as soon as Kalpi fell, it was absolutely necessary to get hold of some other strong position, some strong fortress, and some new army And, therefore, this Messenger of the Revolution had escaped from Kalpi secretly to enter Gwalior, and see how the Revolutionary idea was progressing there! He accepted the promises of the chief officers of the army, and created a new army for the Revolution, by secretly winning over the Durbar functionaries, Sirdars, and others. They promised to give him all the aid they could, and in one month he had the whole of Gwalior in the hollow of his hand. He then collected every information about the military position of Gwalior and, thus, after underminig the throne of the Scindia, Tatia returned to Rao Sahib at Gopalpur. He had 'seen his father !'

Learning the glad news, that Tatia had come back from Gwalior having successfully won over the people to the side of the Revolution, Ranee Lakshmi urged the Peshwa to advance straight towards Gwalior. On the 28th of May, the Revolutionaries came to Amin Mahal. The Mahalkars tried to stop them. They were answered, Who are you to obstruct us? We are the Peshwa and his forces and we are fighting for Swaraj and Swadharma.

These words of Rao Sahib silenced the cowards, and thousands of patriots in that part welcomed the Revolutionaries heartily, and thus the army of the Peshwa pressed right on the walls of the city of Gwalior. They had written to the Scindia. 'We are coming to you in a friendly spirit. Remember our former relations. We expect help from you, so that we shall be enabled to proceed towards the south.' But this ungrateful man had forgotten the former

disloyalty, betrayed by relations as by strangers, you have not the slightest hope of success". वीर सावरकर ने लिखा है कि सिंधिया और तहरी

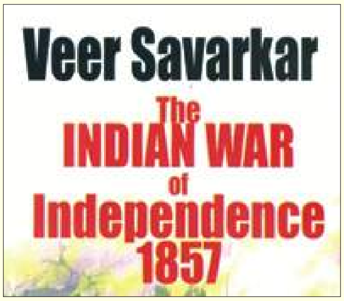

के राजा की अंग्रेजों की प्रति निष्ठा के कारण ही अंग्रेजी फौजों ने झांसी की ओर रूख किया, अंग्रेज सेना को लकड़ी, घास, सब्जी और रसद की भरपूर आपूर्ति सिंधिया और तहरी के राजा द्वारा सुनिश्चित की गई। सिंधिया और तहरी के राजा फिरंगियों की मदद कर रहे थे, रानी गद्दारी, निष्ठाहीनता और रिश्तों में धोखा खाकर झांसी में घिर गई थी।

पृष्ठ क्रमांक 452 में सावरकर लिखते हैं कि जब रानी लक्ष्मी बाई कलपी पहुंची तो सुबह श्री राव साहेब पेशवा के साथ मुलाकात में उन्होंने अपने पूर्वजों को याद किया। इस किताब में बड़ी सूक्ष्मता से झांसी रानी लक्ष्मी बाई, वीर तात्या टोपे, बांदा के नवाब (मस्तानी बाई के वंशज) का उल्लेख करते हुए स्वराज व स्वधर्म के लिये अंग्रेजों के खिलाफचरम शौर्य के साथ युद्ध के बारे में लिखा गया है। यह शौर्य गाथा पढ़ते ही बनती है।

पृष्ठ क्रमांक 460-461 में सावरकर ग्वालियर की तरफ कूच करते हुए पेशवा की फौज के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए लिखते हैं कि "Learning the glad news, that Tatia had come back from Gwalior having successfully won over the people to the side of Revolution, Ranee Lakshmi urged the Peshwa to advance straight towards Gwalior. On the 28th of May, the Revolutionaries came to Amin Mahal. The Mahalkars tried to stop them. They were answered, Who are you to obstruct us? We are the Peshwa and his forces and we are fighting for Swaraj and Swadharma. These words of Rao Sahib silenced the cowards, and thousands of patriots in that part welcomed the Revolutionaries heartily, and thus the army of the Peshwa pressed right on the walls of the city of Gwalior. They had written to Scindia.

वीर सावरकर ने लिखा है कि सिंधिया और तहरी के राजा की अंग्रेजों की प्रति निष्ठा के कारण ही अंग्रेजी फौजों ने झांसी की ओर रूख किया, अंग्रेज सेना को लकड़ी, घास, सब्जी और रसद की भरपूर आपूर्ति सिंधिया और तहरी के राजा द्वारा सुनिश्चित की गई। सिंधिया की गद्दारी, निष्ठाहीनता और रिश्तों में धोखा खाकर झांसी की रानी घिर गई थी।

अपने लोकसभा क्षेत्र गुना में ही विधानसभा की कुल चार सीटों पर जीत नहीं दिलवा पाते

हैं। ग्वालियर शहर में इस परिवार की कोई आलोचना करता है, लेकिन ग्वालियर शहर

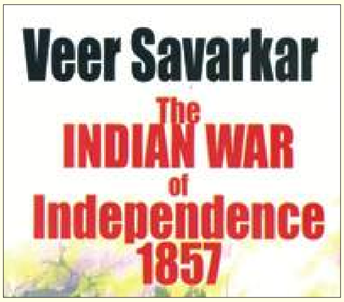

'We are coming to you in a friendly spirit. Remember our former relations. We expect help from you, so that we shall be enabled to proceed towards the south.' But this ungrateful man has forgotten the former relations. Well tha, remember the former and the present relations too' The ancestors of the Scindia were our servants, our Hujres-that was the former relation. And, the present relation? वीर सावरकर ने लिखा कि 28 मई 1857 में क्रांतिकारियों की पेशवाई फौज ने ग्वालियर के अमीन महल की तरफ कूच किया। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, राव साहब की अगवाई में इन क्रांतिकारियों का स्वागत ग्वालियर की जनता ने किया। अमीन महल में महालकर ने इनको रोकने की कोशिश की, राव साहब ने कहा कि तुम कौन हो जो हम को रोक सकते हो। हम पेशवा है और स्वराज और स्वधर्म के लिये युद्ध लड़ रहे हैं। राव साहब के ये शब्दों ने वहां उन कायरों को खामोश कर दिया। उसके बाद सिंधिया को संदेश भेजा गया कि हम यहां पर मैत्रीपूर्ण भावना के साथ आये हैं। आप हमारे पुराने रिश्तों को याद करें हम आपसे मदद चाहतें हैं ताकि हम दक्षिण की तरफ कूच कर सकें। पर इस एहसान फरामोश (सिंधिया) ने इस रिश्ते को भुला दिया। चलो ठीक है पुराने और आज के रिश्ते हम बतलाते है। सिंधियाओं के पूर्वज हमारे यहां पर नौकर थे। यह हमारा पुराना और आज का रिश्ता है।

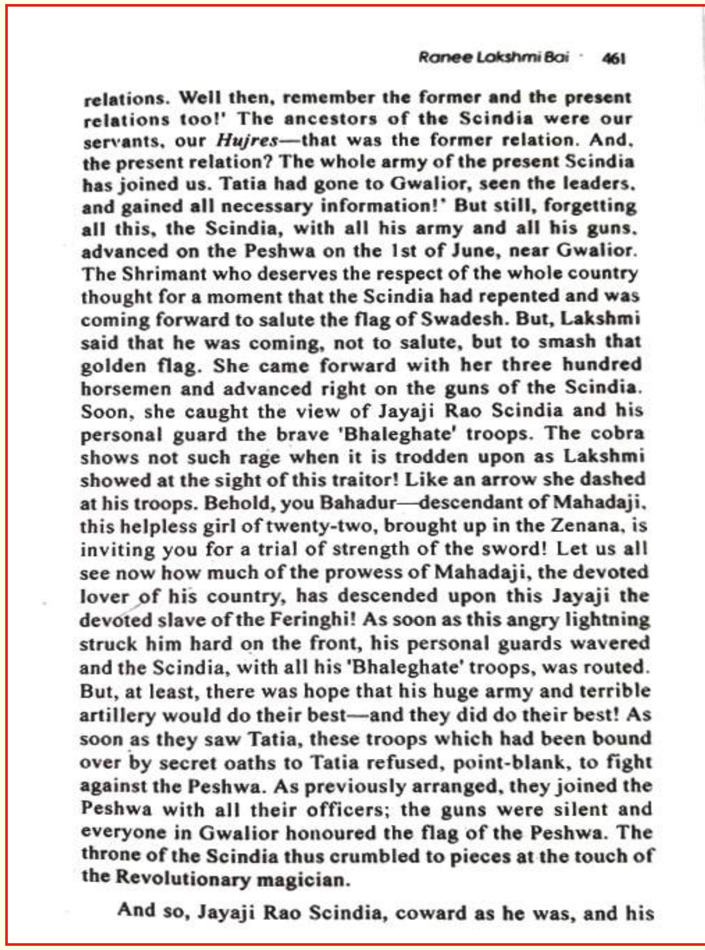

Ranee Lakshmi Bai · 461

relations. Well then, remember the former and the present relations too!' The ancestors of the Scindia were our servants, our *Hujres*—that was the former relation. And, the present relation? The whole army of the present Scindia has joined us. Tatia had gone to Gwalior, seen the leaders, and gained all necessary information!' But still, forgetting all this, the Scindia, with all his army and all his guns, advanced on the Peshwa on the 1st of June, near Gwalior. The Shrimant who deserves the respect of the whole country thought for a moment that the Scindia had repented and was coming forward to salute the flag of Swadesh. But, Lakshmi said that he was coming, not to salute, but to smash that golden flag. She came forward with her three hundred horsemen and advanced right on the guns of the Scindia. Soon, she caught the view of Jayaji Rao Scindia and his personal guard the brave 'Bhaleghate' troops. The cobra shows not such rage when it is trodden upon as Lakshmi showed at the sight of this traitor! Like an arrow she dashed at his troops. Behold, you Bahadur—descendant of Mahadaji, this helpless girl of twenty-two, brought up in the Zenana, is inviting you for a trial of strength of the sword! Let us all see now how much of the prowess of Mahadaji, the devoted lover of his country, has descended upon this Jayaji the devoted slave of the Feringhi! As soon as this angry lightning struck him hard on the front, his personal guards wavered and the Scindia, with all his 'Bhaleghate' troops, was routed. But, at least, there was hope that his huge army and terrible artillery would do their best—and they did do their best! As soon as they saw Tatia, these troops which had been bound over by secret oaths to Tatia refused, point-blank, to fight against the Peshwa. As previously arranged, they joined the Peshwa with all their officers; the guns were silent and everyone in Gwalior honoured the flag of the Peshwa. The throne of the Scindia thus crumbled to pieces at the touch of the Revolutionary magician.

And so, Jayaji Rao Scindia, coward as he was, and his

पृष्ठ क्रमांक 461 में सावरकर लिखते कि " The whole army of the present Scindia has joined us. Tatia had gone to Gwalior, seen the leaders, and gained all necessary information' But still forgetting all this, the Scindia, with all his army and all his guns, advanced in the Peshwa on the 1st of June, near Gwalior. The Shrimant who deserves

संघ के पुरोधा कहे जाने वाले वीर सावरकर ने जब सिंधिया राजवंश के जयाजीराव को कोबरा, डरपोक और अंग्रेज भक्त कहा, फिर वर्तमान बीजेपी सिंधिया घराने के ज्योतिरादित्य सिंधिया को अपनी पलको पर क्यों बैठाने पर तुले हुये हैं?

से बाहर कई लोग इस चीज़ को रेखांकित करते हैं कि माधवराव सिंधिया वाली

विनम्रता ज्योतिरादित्य सिंधिया में नहीं है। ज्योतिरादित्य सिंधिया की दादी चाहती थीं

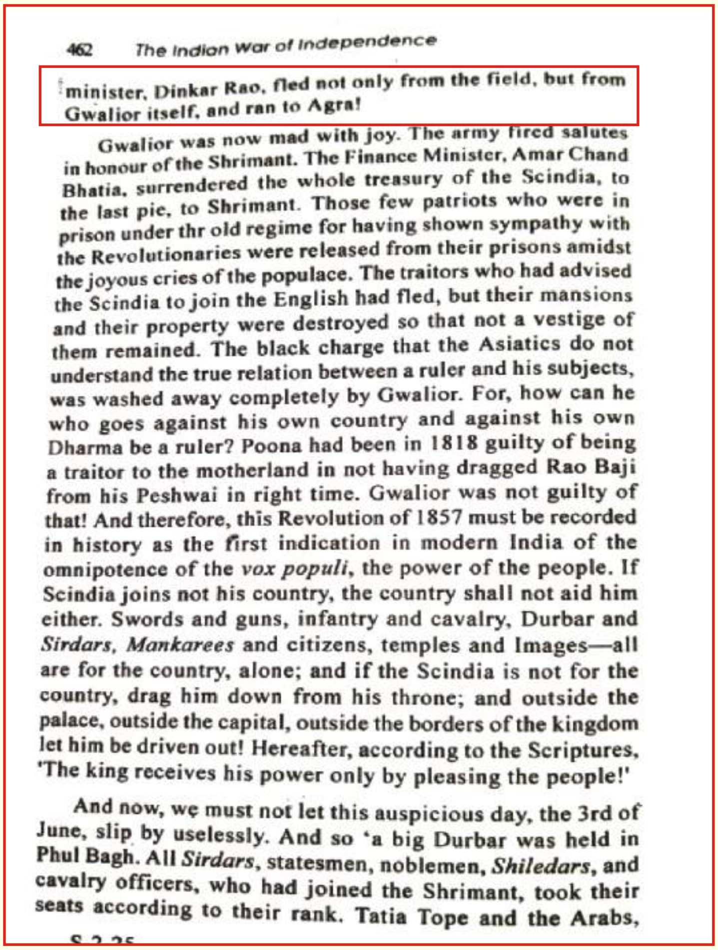
462 The Indian War of Independence

minister, Dinkar Rao, fled not only from the field, but from Gwalior itself, and ran to Agra!

Gwalior was now mad with joy. The army fired salutes in honour of the Shrimant. The Finance Minister, Amar Chand Bhatia, surrendered the whole treasury of the Scindia, to the last pie, to Shrimant. Those few patriots who were in prison under thr old regime for having shown sympathy with the Revolutionaries were released from their prisons amidst the joyous cries of the populace. The traitors who had advised the Scindia to join the English had fled, but their mansions and their property were destroyed so that not a vestige of them remained. The black charge that the Asiatics do not understand the true relation between a ruler and his subjects, was washed away completely by Gwalior. For, how can he who goes against his own country and against his own Dharma be a ruler? Poona had been in 1818 guilty of being a traitor to the motherland in not having dragged Rao Baji from his Peshwai in right time. Gwalior was not guilty of that! And therefore, this Revolution of 1857 must be recorded in history as the first indication in modern India of the omnipotence of the *vox populi*, the power of the people. If Scindia joins not his country, the country shall not aid him either. Swords and guns, infantry and cavalry, Durbar and *Sirdars*, *Mankarees* and citizens, temples and Images—all are for the country, alone; and if the Scindia is not for the country, drag him down from his throne; and outside the palace, outside the capital, outside the borders of the kingdom let him be driven out! Hereafter, according to the Scriptures, 'The king receives his power only by pleasing the people!'

And now, we must not let this auspicious day, the 3rd of June, slip by uselessly. And so 'a big Durbar was held in Phul Bagh. All *Sirdars*, statesmen, noblemen, *Shiledars*, and cavalry officers, who had joined the Shrimant, took their seats according to their rank. Tatia Tope and the Arabs,

the respect of the whole country thought for a moment that the Scindia had repented and was coming forward to salute the flag of Swadesh. But, Lakshmi said that

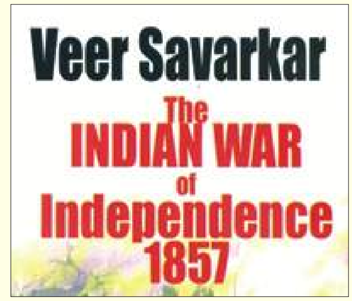

he was coming, not to salute, but to smash that golden flag. She came forward with her three hundred horseman and advanced right on the guns of the Scindia. Soon, she caught the view of Jayaji Rao Scindia and his personal guard the brave 'Bhaleghate' troops. The cobra shows not such rage when it is trodden upon as Lakshmi showed at the sight of this traitor, Like an arrow she dashed at his troops. Behold, your Bahadur-decendent of Mahadaji, this helpless girl of twenty-two, brought up in Zenana, is inviting you for a trial of strength of the sword. Let us all see how much of the prowess of Mahadaji, the devoted lover of his country, has descended upon this Jayaji the devoted slave of the Feringhi.

वीर सावरकर लिखते कि सिंधिया की पूरी फौज पेशवाओं के पास जाकर जुड़ गई। तात्या जब ग्वालियर गये वहां सारे नेताओं को देखा उनसे मुलाकात की सारी जानकारी ली, पर उसके बाद भी इन सबकों भूलाकर सिंधिया 1 जून को ग्वालियर के पास पेशवा की फौज के खिलाफअपनी पूरी फौज और तोपखाना के साथ खड़े हो गये। जिस श्रीमंत का आदर पूरा देश करता है उनको एक समय लगा कि सिंधिया को पछतावा हो रहा है और वह स्वदेश के झंडे को आदर देने आ रहे हैं। पर झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने इनके (सिंधिया) मनसूबों को भांपते हुए कहा कि श्रीमंत वह स्वराज के भगवे को कूचलने आ रहा है। ऐसा कहकर 300 घुड़सवारों की तुकड़ी के साथ झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने सिंधिया की फौज और तोपों पर धावा बोल दिया। जल्द ही उनको गद्दार जयाजी राव सिंधिया और उनकी वीर अंगरक्षक भालेघाटे टुकड़ी नजर आ गई। सावरकर ने

1857 में जयाजीराव सिंधिया ने रानी लक्ष्मीबाई को धोखा दिया
1967 में विजयाराजे सिंधिया ने कांग्रेसी मुख्यमंत्री डीपी मिश्रा को धोखा दिया
2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस के सीएम कमलनाथ को धोखा दिया

कि उनका पूरा परिवार भाजपा में रहे। लेकिन तमाम आंकड़े और तथ्य बतलाते हैं कि सिंधिया खानदान के सभी सदस्यों ने मौकापरस्ती और स्वार्थ की राजनीति की है।

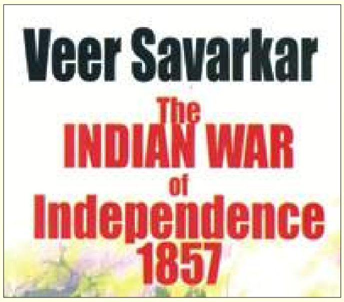

किताब में इस प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए लिखा कि "कोबरा" (जिसका उल्लेख उन्होंने जयाजी राव सिंधिया के लिये किया) कोबरा को कुचलने की इच्छा से लक्ष्मी बाई तीर की तेजी के समान उनकी तुकड़ी पर टूट पड़ी। उन्होंने ललकारा कि ऐ महादजी के वंशज 21 साल की लड़की जिसकी परवरिश जनाना खाने में हुई उसके सामने अपनी तलवार कौशल दिखाओं। अपना कौशल फिरंगियों के प्रेमी और दास जयाजीराव सिंधिया इस देश प्रेमी के सामने दिखाओ।

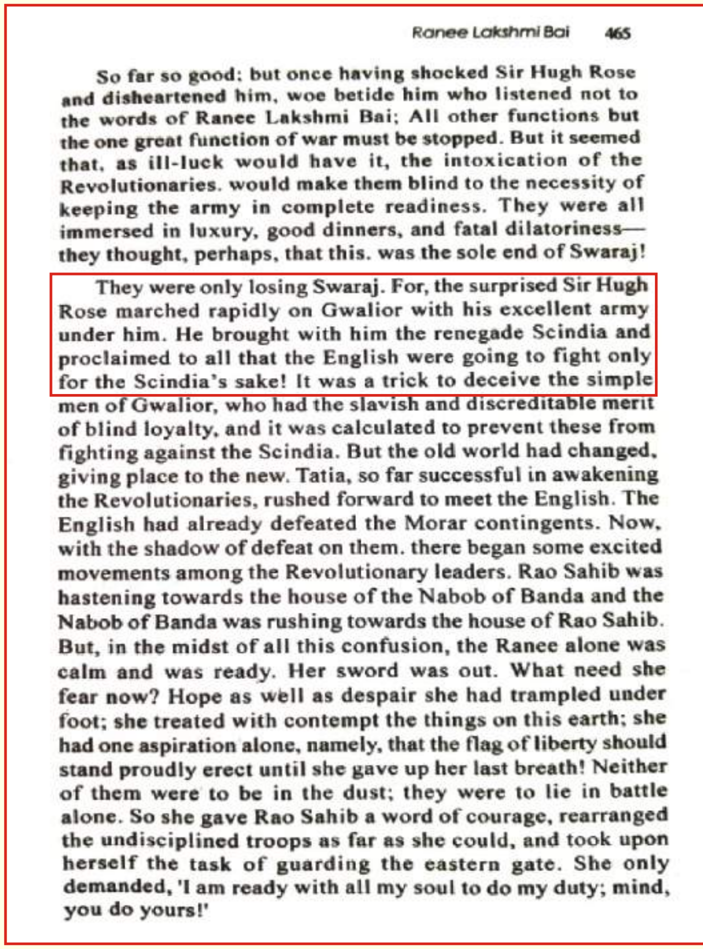
Ranee Lakshmi Bai 465

So far so good; but once having shocked Sir Hugh Rose and disheartened him, woe betide him who listened not to the words of Ranee Lakshmi Bai; All other functions but the one great function of war must be stopped. But it seemed that, as ill-luck would have it, the intoxication of the Revolutionaries, would make them blind to the necessity of keeping the army in complete readiness. They were all immersed in luxury, good dinners, and fatal dilatoriness—they thought, perhaps, that this. was the sole end of Swaraj!

They were only losing Swaraj. For, the surprised Sir Hugh Rose marched rapidly on Gwalior with his excellent army under him. He brought with him the renegade Scindia and proclaimed to all that the English were going to fight only for the Scindia's sake! It was a trick to deceive the simple men of Gwalior, who had the slavish and discreditable merit of blind loyalty, and it was calculated to prevent these from fighting against the Scindia. But the old world had changed, giving place to the new. Tatia, so far successful in awakening the Revolutionaries, rushed forward to meet the English. The English had already defeated the Morar contingents. Now, with the shadow of defeat on them. there began some excited movements among the Revolutionary leaders. Rao Sahib was hastening towards the house of the Nabob of Banda and the Nabob of Banda was rushing towards the house of Rao Sahib. But, in the midst of all this confusion, the Ranee alone was calm and was ready. Her sword was out. What need she fear now? Hope as well as despair she had trampled under foot; she treated with contempt the things on this earth; she had one aspiration alone, namely, that the flag of liberty should stand proudly erect until she gave up her last breath! Neither of them were to be in the dust; they were to lie in battle alone. So she gave Rao Sahib a word of courage, rearranged the undisciplined troops as far as she could, and took upon herself the task of guarding the eastern gate. She only demanded, 'I am ready with all my soul to do my duty; mind, you do yours!'

पृष्ठ क्रमांक 461-462 में सावरकर लिखते कि "As soon as this angry lightning struck him hard on the front, his personal guard 'Bhaleghate' troops was routed. But, at least, there was hope that his huge army and terrible artillary would do their best-and they did do their best. As soon as they saw Tatia, these troops which has been bound over by secret oaths to Tatia refused, point-blank, to fight against the Peshwa. As previously arranged, they joined the Peshwa with all their officers: the guns were silent and everyone in Gwalior honored the flag of Peshwa. The throne of the Scindia thus crumbled to pieces at the touch of the Revolutionary magician. And so, Jayaji Rao Scindia, coward as he was, and his minister, Dinker Rao, fled not only from the field, but from Gwalior itself, and ran to Agra.

वीर सावरकर लिखते कि रानी लक्ष्मी बाई एक बिजली के समान सिंधिया की फौज पर टूट पड़ी। इससे जयाजी के व्यक्तिगत अंगरक्षक भालेघाटे टुकड़ी अलग थलग पड़ गई। इसके बाद भी उनको उम्मीद थी कि उनकी यह विशाल सेना और तोपे अच्छा करेंगी और वास्तव में उन्होंने अच्छा किया, तात्या को देखते ही इस सेना को अपनी गुप्त शपथ याद आई और वे सब पेशवाई झंडे के नीचे आ गये। इस तरह गद्दार सिंधिया की गद्दी को इस क्रांति के जियालों ने छिन्न-भिन्न कर दिया और ग्वालियर में पेशवा झंडा फहराया गया। इस

भारत की आजादी पर भारी पड़ी थी सिंधिया गद्दारी। गद्दार राजवंश से बीजेपी की नजदीकि समझ से परे।

जहां इन्हें राजनीति से लाभ मिलने की संभावना प्रबल हुई उन्होंने पाला बदलने में देर नहीं की। वह चाहे राजमाता सिंधिया ही क्यों न हो।

466 *The Indian War of Independence*

She donned her usual military uniform, rode a noble steed, ctook out her gem-bestudded sword from the sheath, and ordered the army under her to march on. She made ready all the posts near Kotaki Serai which had been given to her care and when the English army was in sight, everywhere, trumpets and pipes, drums and *nagaras* rent the air. If only she had an army, equal in courage and daring to herself! Even the insubordinate and hesitating felt heroic under her influence and, with them and her select band of horsemen, she charged hard the English army! Her two female friends, Mandar and Kashi, also fought bravely by her side. May the sweet memory of these two patriotic girls—beautiful in appearance, with male attire put on, taking pleasure in fight—live in history along with that of their mistress as long as history lives! A general like Smith was charging the Ranee's army, but to-day the Ranee's bravery and daring were a sight to see. Like lightning, she moved about all day. The English attacked the solid phalanx a number of times. On every occasion she maintained her hold firm. Her army occasionally felt enthusiastic and attacked the British and cut down many of them. At last, Smith was forced to retire; he gave up the attempt of breaking the mass and began to turn to another side, leaving the nest of the cobra alone!

Thus closed the day and thus rose the 18th of the month! This day, the English had resolved to make desperate charges From all directions, they advanced on the fort, and tried their utmost. General Smith, forced to retire the day before, was very determined to-day and, aided by re-inforcements, he charged the same Jhansi side he had gone for the day before. Sir Hugh Rose thought that his presence was also absolutely necessary and so he was personally present with the force attacking the Jhansi side. The Ranee too was ready for him with all her forces. 'She was ready with all her soul to do her duty.' That day, she wore a *Chanderi* turban embroidered allover, a *tamamee* cloak, and *pyjamas*. A pearl necklace was round her neck. Her famous steed being tired that day,

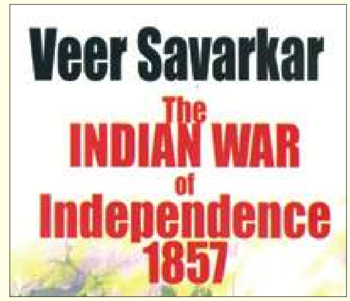

बीच डरपोक जयाजीराव अपने मंत्री दीनकर राव के साथ ग्वालियर से भागकर आगरा चले गये। क्रांति की इस जीत से ग्वालियर खुशी में झूम उठा। सेना ने श्रीमंत को सलाम किया वित्त मंत्री अमर चंद्र बांठिया ने श्रीमंत के सामने पूरा खजाना खोल दिया। इस बीच जिन गद्दारों ने सिंधिया के साथ अंग्रेजों का साथ दिया, सलाह दी वह भी भाग खड़े हुए। 1857 की क्रांति में देश का एक नया अध्याय प्रारंभ हुआ। जो राजा अपने देश के खिलाफ, अपने धर्म के खिलाफजाता है वह राजा कैसे हो सकता है। अगर सिंधिया ने देश का साथ नही दिया तो देश भी उसको शरण नही देगा। राजा की शक्ति उसकी प्रजा से आती है।

पृष्ठ क्रमांक 465 में सावरकर लिखते कि "For, the surprised Sir Hugh Rose marched rapidly on Gwalior with his excellent army under him. He brought with him the renegade Scindia and proclaimed to all that the English were going to fight only for Scindia's sake. वीर सावरकर लिखते कि सर हयूज रोज़ अपनी बेहतरीन फौज के साथ ग्वालियर मार्च करते है और उनके साथ स्व-पक्ष त्यागी सिंधिया भी थे, और अंग्रेजों ने यह ऐलान कर दिया कि वह युद्ध केवल और केवल सिंधिया के खातिर लड़ेंगे।

पृष्ठ क्रमांक 466 में सावरकर लिखते कि "Her army occasionally felt enthusiastic and attacked the British and cut down many of them. At last, Smith was forced to retire, he gave up the attempt of breaking the mass and began to turn to another side, leaving the nest of cobra alone" वीर सावरकर लिखते कि- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की उत्साहित सेना अंग्रेजों की सेना को काटती जा रही थी। रानी लक्ष्मी बाई की अदम्य शूरता एवं साहस के सामने अंग्रेज अधिकारी

बड़ा सवाल : जो राजवंश गुलाम देश का नहीं हो सका, वो आजाद देश का कैसे हो सकता है?

विजयाराजे सिंधिया- आज़ाद भारत में सिंधिया परिवार का राजनीतिक संबंध कांग्रेस और बीजेपी दोनों से रहा। राजमाता विजयाराजे सिंधिया जनसंघ से

जिन्हें मिलना चाहिए मान-सम्मान वो खा रहे दर-दर की ठोकरें और जिन्होंने की गद्दारी उन्हें मिली राजशाही

देश को आजाद करने में न जाने कितने वीरों-वीरांगनों और रजवाड़ो के राजाओं ने अपने प्राणों की आहूति दी और सब कुछ छोड़कर अपने आपको देश के लिए न्यौछावर कर दिया। लेकिन इसे विडंबना ही कहा जायेगा कि आज आजाद भारत में इन वीरों और राजवंशियों के अधिकांश वंशज दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर हैं। इन महावीरों के वंशज देश के विभिन्न हिस्सों में रहकर बमुश्किल अपने जीवन का निर्वहन कर रहे हैं। झांसी की रानी के वंशज, तात्या टोपे के वंशज, मस्तानी बाई के वंशज जहां-जहां भी रह रहे हैं उनके स्थिति वैसी नहीं है जैसी देश से गद्दारी करने वाले रजवाड़ो की है। जगत विजन की टीम ने इन वंशजों के लोग जहां रह रहे हैं उनसे मिलकर बातचीत की है। बातचीत के दौरान कई ऐसी बातें मालूम हुई हैं जिनसे मन विचलित हुआ है। इन लोगों ने अपने अंदर की पीड़ाओं का बखान किया है। अपनी परेशानियों को रखा। कैसे आजाद भारत में इन परिवार वालों के साथ अन्याय हुआ है। कैसे इन लोगों के साथ भेदभाव हुआ है। साथ ही इनके वंशजों की कुर्बानियों को नजरअंदाज किया जा रहा है। वर्तमान सरकारों द्वारा भी इन परिवारों को सम्मान की नजरों से नहीं देखा जा रहा है। खास अवसरों पर भी इनकी अनदेखी की जा रही है। इन परिवारों को इस बात की बड़ी पीड़ा होती है। इनका मानना है कि सरकारें आज भी हमारे पूर्वजों को क्रांतिकारी ही मानती हैं, स्वतंत्रता सेनानी नहीं। जबकि हकीकत में देखा जाये तो हमारे वंशजों ने आजादी की जो अलख जगायी थी उनका ही नतीजा है कि आज हम सब लोग आजाद देश में रह रहे हैं।

इन लोगों को इस बात का भी मलाल होता है कि देश की आजादी में जिन वीरों-वीरांगनाओं और राजाओं ने अपने प्राणों की आहुति दी है उनके परिवारों को तो सरकारें भूलती जा रही हैं या सम्मान की नजरों से नहीं देखती हैं वहीं देश की आजादी में जिन राजाओं ने गददारी की, या कुछ भी योगदान नहीं दिया उन्हें आज राजशाही की गददी दी जा रही हैं। इस तरह की अनदेखी बहुत ही पीड़ादायक है।

हम जानते हैं कि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई 1857 की क्रांति की जनक थी। यही वही क्रांति थी जो देश की आजादी का आधार बनी। रानी के अदम्य साहस, शौर्य और वीरता की गाथाएं आज भी अमर हैं। झांसी की रानी ने आजादी की ऐसी अलख जगायी थी कि पूरे देश में इसके बाद चिंगारी लग गई और पूरा देश अंग्रेजों के खिलाफ खड़ा हो गया। वहीं अमर शहीद तात्या टोपे भारतीय स्वतंत्रता के पहले संग्राम 1857 के एक प्रमुख योद्धा थे। तात्या टोपे न केवल देश के बल्कि विश्व के काबिल योद्धाओं की श्रेणी में आते हैं। उनका युद्ध नियोजन और कौशल अतुलनीय था। अगर शहीद तात्या टोपे शिवाजी के गुरिल्ला युद्ध में भी दक्ष थे। स्वतंत्रता संग्राम में संभवतः वे अंतिम योद्धा थे, जिन्होंने उपरोक्त नीति का प्रयोग युद्ध क्षेत्र में किया था। अमर शहीद तात्या टोपे के अदम्य साहस व बहादुरी तथा उनकी युद्ध निपुणता के कौशल से अंग्रेजों से काफी भय था। अंग्रेज निरन्तर सघन प्रयासों के बाद बड़ी मुश्किल से उन्हें पकड़ पाए थे। उन्होंने मात्र दो वर्षों की अवधि में 300 युद्ध लड़े और उनकी यह युद्धीय संघर्ष 18 अप्रैल 1859 को उनकी फांसी के साथ समाप्त हुआ। इसके साथ मस्तानी बाई के पुत्र शमशेर बहादुर थे। शमशेर बहादुर (कृष्ण राव) एहमदशाह अबदाली से मराठों की ओर से लड़े थे। वह जख्मी हो गये और उनकी मृत्यु हो गई। शमशेर बहादुर के पहले पुत्र अली बहादुर थे। उनको बुंदेलखण्ड का बांदा जिला और वहां के नवाब बना दिये गये। उनके बाद इनके तीन-चार बेटे नवाव बने। अली बहादुर द्वितीय आखरी नवाब हुए। अली बहादुर द्वितीय ने झांसी की रानी के साथ मिलकर अंग्रेजों के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी। झांसी की रानी इनको राखी बांधती थी और भाई मानती थी। झांसी की रानी का अंतिम संस्कार ग्वालियर में हुआ था और अली बहादुर द्वितीय ने उनका अंतिम संस्कार किया था।

चुनाव भी लड़ी। राजमाता सिंधिया की मुलाकात प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरूसे हुई। इस मुलाकात के बाद ही विजयाराजे सिंधिया कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार हुई। विजयाराजे ने 1957 में गुना लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा और

सिंधिया राजघराना अगर झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और पेशवा का साथ देते तो देश 1857 में ही आजाद जो जाता - अरूण राव

हमारे वंशज आई साहब झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने ही सबको एकत्र कर 1857 की क्रांति चालू की थी। दुधारी तलवार से लहू लुहान बाबा गंगादास जी की कुटिया के अंदर जाकर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। अगर सिंधिया ने 1857 में गद्दारी नही की होती तो भारत तब 1857 में ही आजाद हो गया होता। आई साहब ने अपने पुत्र श्रीमंत दामोदर राव को अपने भरोसेमंद सैनिकों के हवाले अपने आखरी वक्त में 07 साल के युवराज को सुपुर्द करके स्वतंत्रता आंदोलन में न्यौछावर हो गई। अंग्रेजों से दो साल बचते हुए युवराज चंद सैनिकों के साथ जंगल में छुपते रहे। बड़ी मुश्किल से दो वर्ष का समय काटा गया। झालावड़ के राजा पृथ्वी सिंह झालरपाटन की रियासत में श्रीमंत दामोदर राव पहुंचे। वहां राजा पृथ्वीं सिंह ने पत्र लिखा कि श्रीमंत दामोदर राव रानी की झांसी लक्ष्मी बाई के पुत्र हैं। ये बहुत ही छोटे हैं और इनको मारने से अंग्रेजों का नाम खराब होगा। इंदौर में यह पत्र अंग्रेज अफसर को दिया गया। अंदर ही अंदर अंग्रेज भी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अद्यम साहस के प्रशंसक थे। जिन्होंने अपना सब कुछ राजपाट, ऐश्वर्य, वैभव सब आजादी के आंदोलन को जलाने के लिये उस ज्वाला में सब कुछ न्यौछावर कर दिया। 1860 में श्रीमंत दामोदर राव इंदौर आ गये। झांसी की रानी मीनिट्स बुक में उल्लेखित किया गया था कि रानी जी के पुत्र जब एडल्ट्री एज जो कि उस समय लंदन में 21 वर्ष हुआ करती थी उसके पूर्ण होने के बाद श्रीमंत दामोदर राव को इनका राजपाट वापस कर दिया जायेगा। उनकी संपत्ति में से उनकी एडल्ट्री तक हजार रूपये वार्षिक पेंशन बांधी गई थी। श्रीमंत के रहने की व्यवस्था छावनी रेसीडेन्सी में एक कोठी में रहने की कर दी गई। रेसीडेन्सी कोठी में रहते हुए उनका उपनाम झांसीवाले हो गया और उनको श्रीमंत दामोदर राव झांसीवाले कहा जाने लगा। श्रीमंत दामोदर राव झांसीवाले एक चित्रकार थे, जब उन्होंने एडल्ट्री एज मतलब 21 वर्ष पूर्ण किये। अंग्रेजों ने इनकी पीठ पर छुरा घोपते हुए इनकी संपत्ति एवं राजशाही नही लौटाई। इस पत्र की कॉपी दिल्ली सरकार के आर्ककाईव में है। श्रीमंत दामोदर राव झांसी वाले की मृत्यु सन् 1906 में हुई।

हिन्दू महासभा के प्रत्याशी को मात दी। हालांकि कांग्रेस के साथ विजयाराजे की बनी नहीं। 1967 तक विधानसभा और लोकसभा चुनाव एक साथ होते रहे थे। मध्यप्रदेश विधानसभा में विजयाराजे सिंधिया के जाने से कांग्रेस की लिए मुश्किल स्थिति खड़ी हो गई थी। कांग्रेस पार्टी के 36 विधायक विपक्षी खेमे में आ गए और डीपी मिश्रा को इस्तीफा देना

इनके पुत्र श्रीमंत लक्ष्मण राव दामोदर राव झांसीवाले से यह रेसीडेन्सी कोठी इनके पिता की मृत्यु के बाद खाली करवा दी गई थी। इसके बाद श्रीमंत लक्ष्मण राव, दामोदर राव झांसीवाले पीर गली इंदौर में एक किराये के घर में रहने लगे। यह एक टाईपिस्ट के रूप में काम करने लगे एवं इनकी पेंशन 200 रुपये प्रतिमाह आती थी। श्रीमंत लक्ष्मण राव दामोदर राव झांसीवाले की मृत्यु सन् 1959 को हुई। आश्चर्य की बात यह है कि भारत के आजाद होने के बाद भी सरकार ने इनकी पेंशन में कोई भी बदलाव नही किया गया। श्रीमंत लक्ष्मण राव दामोदर राव के दो पुत्र थे जिसमें बड़े पुत्र कृष्ण राव लक्ष्मण राव झांसीवाले रानी लक्ष्मीबाई के चौथे वंशज थे। इनकी पेंशन आजाद भारत में 75 रूपये महीना आती थी। श्रीमंत कृष्ण राव लक्ष्मण राव झांसीवाले, हुकूमचंद मिल में स्टेनो टाईपिस्ट का काम करते थे। साथ में इनको 75 रुपये महीना पेंशन मिलती थी, इनकी मृत्यु 1968 में हुई। श्रीमंत कृष्णराव लक्ष्मण राव झांसीवाले के दो पुत्र थे जिसमें बड़े पुत्र मेरे भाई मनोहर राव कृष्णराव झांसीवाले बड़े पुत्र थे, जो कि अविवाहित रहे। मैं अरूणराव, कृष्णराव झांसीवाले बाई साहब की पांचवी पीढ़ी से हूँ। मैंने एमपीईबी में नौकरी की। वहां से मैं सहायक यंत्री के रूप में सेवानिवृत्त हुआ। वर्ष 1994 में मैंने धनवंत्री नगर इंदौर में अपना एक घर बनाया। मेरे पुत्र योगेश राव अरूण राव झांसीवाले झांसी के शाही परिवार की छटवीं पीढ़ी हैं। आज वह नागपुर में निवासरत है और पेशे से साफ्टवेयर इंजीनियर हैं। आज तक झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की कोई ओरिजनल फोटो उपलब्ध नही है। सरकार को इनकी फोटो निकलवानी चाहिए। समय-समय पर भारत सरकार से अंग्रेजों द्वारा हमारे परिवार को किये गये धोखे के बारे में बतलाया गया, देश के लिये सब कुछ न्यौछावर करने वाले हमारे परिवार को झांसी की राजशाही प्रिवीपर्स देने की बात की गई। तब भी सरकार की ओर से कोई मदद नही की गई। कोविनेंट लिस्ट में हमें नही जोड़ा गया। हमने कभी किसी को अपनी पहचान नही बतलाते हैं कि हम किस परिवार से ताल्लुकात रखते हैं। यहां तक कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने मेरा एक बार स्वागत भी किया था।

मैं (श्रीमंत अरूण राव झांसी वाले) आई साहब (रानी झांसी के छटवीं पीढ़ी का वंशज हूँ।) मेरे परिवार की वंशावली इस प्रकार है।

- **पहली पीढ़ी-** रानी झांसी और गंगाधर राव निवाड़कर
- **दूसरी पीढ़ी-** श्रीमंत आनंद राव जिनकी नाम बाद में श्रीमंत दामोदर राव कर दिया गया वह उनके दत्तक पुत्र थे। जिनकी मृत्यु 1906 में हुई।
- **तीसरी पीढ़ी-** मेरे अजोबा श्रीमंत लक्ष्मण राव झांसी वाले थे।
- **चौथी पीढ़ी-** श्रीमंत कृष्ण राव लक्ष्मण राव झांसी वाले श्रीमंत लक्ष्मण राव के बड़े पुत्र थे।
- **पांचवी पीढ़ी-** श्रीमंत मनोहर राव कृष्णराव झांसी वाले सबसे बड़े पुत्र थे जो कि अविवाहित थे। इनके भाई अरूण राव कृष्ण राव झांसी वाले थे।
- **छटवीं पीढ़ी-** इसके बाद मेरे पुत्र योगेश राव अरूण राव झांसी वाले इस परिवार की है।
- **सातवीं पीढ़ी-** इनके पुत्र भी अब के रूप में इस परिवार में शामिल हो चुके हैं।

झांसी में हमें अपने किले का टिकिट खरीदना पड़ता है - साल में हम दो बार झांसी जाते हैं। हमें होटल में रूकना पड़ता है। विडम्बना यह है कि अपने ही किले में हमें टिकट लेकर अंदर जाना पड़ता है। 1857 में जो राजे-रजवाड़े क्रांति में शहीद हुये, जिन्होंने अपना उस समय सब कुछ देश के लिये न्यौछावर कर दिया था, सरकार को चाहिए कि अभी जो आजादी का अमृत महोत्सव का जो उल्लास चल रहा है उनके परिवार को चिन्हित और ओहदा वापस कर देना चाहिए। जिन्होंने देश के लिये सब कुछ न्यौछावर किया। सरकार उनकी उपेक्षा न करे। जबकि 1857 में गद्दारी करने वाले राज परिवार आज हर तरीके के सुख ले रहे हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि जिन्होंने झांसी की रानी के साथ गद्दारी की उनकी तुलना में आई साहब का नाम पूरे देश में इज्जत से लिया जाता है। अगर सिंधिया ने 1857 में गद्दारी नही की होती, जिनके कारण हमारी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की मृत्यु हुई तो भारत देश सन् 1857 में ही आजाद हो जाता।

पड़ा। पहली बार मध्य प्रदेश में ग़ैर कांग्रेसी सरकार बनी और इसका पूरा श्रेय राजमाता विजयाराजे सिंधिया को गया। विजयाराजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी में भी रहीं और वो 1989 में बीजेपी से ही गुना से जीतीं। इसके बाद 1991, 1996 और 1998 में यहां से चुनाव जीतती रहीं। रामजन्मभूमि आंदोलन में भी विजयाराजे की भूमिका रही है। वो कारसेवकों का

एक तरफ सिंधिया को सरकार मंत्री बनाती है दूसरी ओर तात्या टोपे परिवार के वंशजों की पेंशन बंद करती है, यह सरकार की दोहरी नीति : श्रीमती भाग्यश्री टोपे पत्नी स्व. श्री रमेश टोपे

(तात्या टोपे परिवार की चौथी वंशज)

श्री तात्या टोपे के पिता श्री पांडुरंग राव के आठ पुत्र थे। जिसमें श्रीरामचन्द्र राव (तात्या टोपे के नाम से मशहूर), श्री गंगाधर राव, श्री राजकुमार राव, श्री लक्ष्मण राव, श्री विनायक राव, श्री वैजनता राव, श्री रामकृष्ण राव एवं श्री रघुनाथ राव थे। ये आठों भाई तात्या टोपे सहित 1857 की लड़ाई में मारे गये। श्री तात्या टोपे के भाई लक्ष्मण राव टोपे के चार पुत्र थे, बसंत राव, रघुनाथ राव, शंकर राव और नारायण राव (बिठुर)। रघुनाथ राव के पुत्र स्व. श्री रमेश टोपे थे। मेरे परिवार में आगे मेरे पुत्र मुकुल और गौरी हैं। हमारे परिवार ने

तात्या टोपे परिवार की चौथी वंशज श्रीमती भाग्यश्री टोपे से बातचीत करते हुये जगत विजन पत्रिका की संपादक विजया पाठक

स्वागत करती थीं। मतलब साफ है कि वह भी राजनीति में कभी टिककर एक पार्टी में नहीं रहीं और विभिन्न अवसरों पर पार्टियों को छोड़ती रहीं। 1999 में वो सक्रिय राजनीति से हट गई और 2001 में उनका निधन हो गया।

माधवराव सिंधिया- कांग्रेस के बड़े नेता रहे माधवराव सिंधिया ने राजनीति की शुरु आत जनसंघ से ही की थी। वो साल 1971 में लोकसभा चुनाव में गुना से जनसंघ के टिकट पर जीतकर संसद पहुंचे, हालांकि साल 1980 में वो कांग्रेस से जुड़ गए। कहा जाता है कि जिस तरह से विजयाराजे सिंधिया को नेहरू समझाने में कामयाब रहे थे और राजमाता कांग्रेस में शामिल हो गई थीं। उसी तरह से इंदिरा

सियासत में मौकापरस्ती की परंपरा को बरकरार रखा ज्योतिरादित्य सिंधिया ने

1857 संग्राम में अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध लड़ा। भारत माता की रक्षा के लिये मेरे परिवार के सभी पूर्वज मारे गये, जिसमें हमारे आदरणीय श्री रामचन्द्र राव जिन्हें तात्या टोपे भी कहा जाता है। उन्हें पेशवा का दत्तक पुत्र माना जाता था और उनके असीम शौर्य के कारण ही अंग्रेजों की गुलामी के खिलाफ स्वतंत्रता की पहली बिगुल बजी। 1947 आजादी मिलने तक हमारा परिवार अंग्रेजों के बचते बचाते रहा। आजादी के बाद बिठुर में एक मकान को छोड़कर हमको सरकार से कोई सम्मान प्राप्त नही हुआ। न ही हमारी रियासतें, महल, जमीनें हमको वापस की गई। राजा मानसिंह ने (नरवर के) ने अंग्रेजों के साथ मिलकर स्व. श्री तात्या टोपे को पकड़वा दिया। हमारे परिवार वालों ने उस समय सिंधिया से मदद मांगी पर उन्होंने हमारी कोई मदद नही की। 1859 में तात्या टोपे समेत परिवार के अन्य सदस्यों को फांसी दे दी गई। आजाद भारत में हमको हर तरीके की कठिनाई जैसे-आर्थिक, सामाजिक और सबसे ज्यादा वो सम्मान भी प्राप्त नही हुआ। हमारी दुर्गती इसलिये हुई अब लगता है हमारे पूर्वज ने आजादी की लड़ाई के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। अगर भारत माता के सम्मान में अपनी कुर्बानी नही देते तो शायद हम भी उस गद्दार सिंधिया परिवार जैसे रहते। हमको छोटी-छोटी पेंशन मिली, पर जिन्होंने भारत माता को लहुलुहान किया, देश के साथ गद्दारी की, अंग्रेजों के साथ हाथ मिलाया उस सिंधिया राज घराने को प्रीवीपर्क्स दिया गया। आजादी के बाद स्टेट की पेंशन 7 से 8 हजार रुपये प्रतिमाह मिलती थी। बड़ी विडम्बना है कि मीसाबंदियों की पेंशन हमसे ज्यादा थी। तब जाकर सरकार ने मेरी पेंशन 25 हजार रुपये प्रतिमाह किया था। बड़ा बुरा लगता है कि आजादी के बाद सभी राजनैतिक दलों ने गद्दार सिंधिया परिवार को तिलक लगाकर राजनीति में आगे बढ़ाया पर हमारे जैसे राजपाट त्यागने वाले राजघराने वाले लागों के साथ कोई सरकार ने उचित व्यवहार नही किया। अब हमें सरकार से कुछ भी नही चाहिए। यहां तक कि अब मेरी पेंशन बंद कर दी गई। इससे ज्यादा अपमान की बात क्या हो सकती है कि तात्या टोपे और उनके परिवार की शहादत का अपमान किया गया। हमें अब सरकार से कुछ भी नही चाहिए। मेरी बंद हुई पेंशन एवं एरियर से तात्या टोपे के नाम से स्कूल या कोई पुरस्कार दिया जाये ताकि उनकी शहादत अमर रहे।

गांधी माधवराव सिंधिया को समझाने में कामयाब रहीं और वो कांग्रेस में शामिल हो गए। अपनी मां की तरह गुना लोकसभा क्षेत्र से माधवराव सिंधिया ने भी 1977 में कांग्रेस के समर्थन से निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ा और वो विजयी रहे। माधव राव सिंधिया सिर्फ26 साल की उम्र में ही सांसद बन गए थे। माधवराव सिंधिया ने भी अपने राजनीतिक जीवन में

सिंधिया परिवार का माहोरकर बाड़ा पर कब्जा : बाड़े का नामांतरण की कोशिश करने पर कलेक्टर ग्वालियर को आयुक्त नगर निगम ने अवगत कराया एवं टीप में जानकारी दी थी माहोरकर का बाड़ा सरकारी संपत्ति है, इस का नामांतरण नहीं हो सकता।

शिवराज सरकार ने दिया गद्दारों का साथ और बंद करवा दी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तात्याटोपे के वंशजों की पेंशन

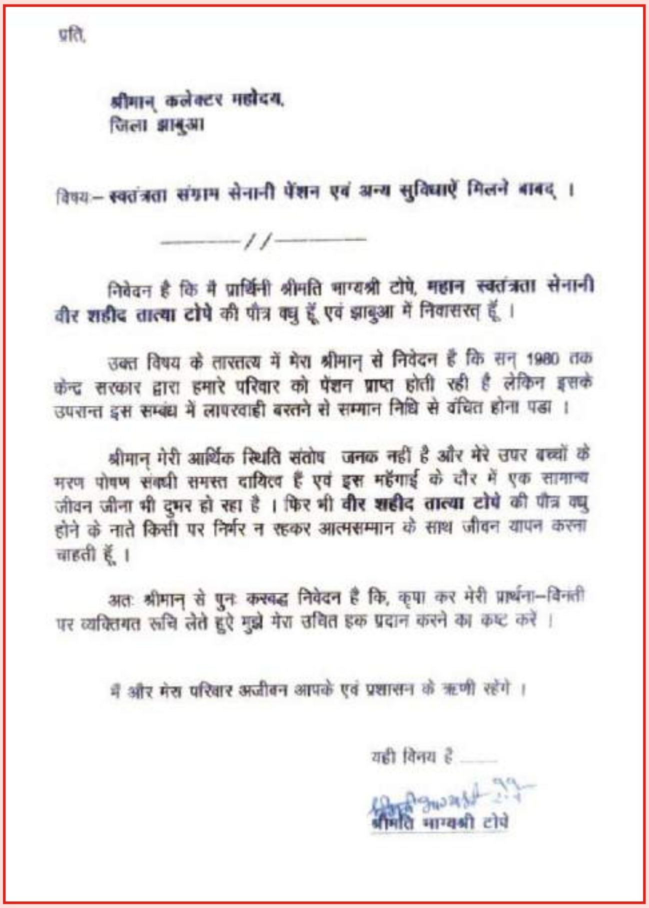

प्रति,

श्रीमान् कलेक्टर महोदय,
जिला झाबुआ

विषय:- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पेंशन एवं अन्य सुविधाऐं मिलने बावद् ।

———— / / ————

निवेदन है कि मैं प्रार्थिनी श्रीमति भाग्यश्री टोपे, महान स्वतंत्रता सेनानी वीर शहीद तात्या टोपे की पौत्र वधु हूँ एवं झाबुआ में निवासरत् हूँ ।

उक्त विषय के तारतम्य में मेरा श्रीमान् से निवेदन है कि सन् 1980 तक केन्द्र सरकार द्वारा हमारे परिवार को पेंशन प्राप्त होती रही है लेकिन इसके उपरान्त इस सम्बंध में लापरवाही बरतने से सम्मान निधि से वंचित होना पड़ा ।

श्रीमान् मेरी आर्थिक स्थिति संतोष जनक नही है और मेरे उपर बच्चों के भरण पोषण संबंधी समस्त दायित्व है एवं इस महँगाई के दौर में एक सामान्य जीवन जीना भी दुभर हो रहा है । फिर भी वीर शहीद तात्या टोपे की पौत्र वधु होने के नाते किसी पर निर्भर न रहकर आत्मसम्मान के साथ जीवन यापन करना चाहती हूँ ।

अतः श्रीमान् से पुनः करबद्ध निवेदन है कि, कृपा कर मेरी प्रार्थना-विनती पर व्यक्तिगत रूचि लेते हुऐ मुझे मेरा उचित हक प्रदान करने का कष्ट करें ।

मैं और मेरा परिवार आजीवन आपके एवं प्रशासन के ऋणी रहेंगे ।

यही विनय है ......

श्रीमति भाग्यश्री टोपे

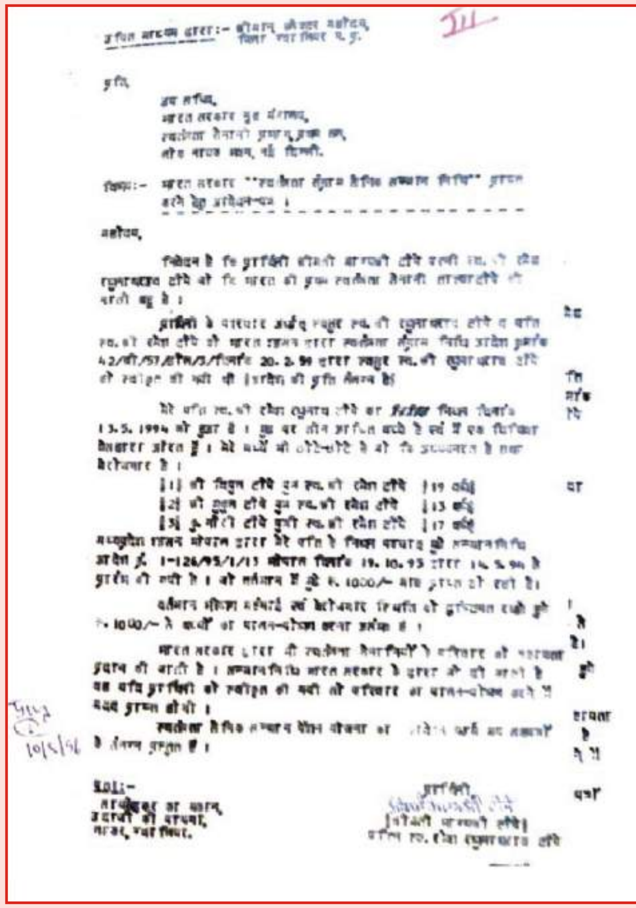

प्रति,

महोदय,

प्रार्थिनी

श्रीमती भाग्यश्री टोपे द्वारा कलेक्टर झाबुआ एवं उप सचिव भारत सरकार को पत्र लिखा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की पेंशन एवं अन्य सुविधायें चालू की जाये।

कई पार्टियों से साथ रहे और चुनाव लड़ा।

जयाजी राव सिंधिया पर 1857 में लगा अंग्रेजों का साथ देने का दाग!

अंग्रेजों ने जयाजी राव को महाराज 28 साल बाद माना था, वह भी लाखों का हर्जाना लेकर। जयाजीराव 1857 में युवा तो हो गए थे, लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें महाराज नहीं माना था और प्रशासन का नियंत्रण अंग्रेजों के पिट्ठू दिनकर राव

कई बार लगा चुके हैं सरकार से गुहार, लेकिन सरकार की बेरुखी ने किए हौसले पस्त

तात्या टोपे के वंशजों को पेंशन की है आस

1857 की क्रांति में आजादी की चिंगारी को शोला बनाने वाले तात्या टोपे के वंशजों को केंद्र सरकार की बेरुखी का सामना करना पड़ रहा है। इंदौर में रह रही तात्या टोपे के वंशजों की चौथी पीढ़ी को केंद्र सरकार की ओर से पेंशन मिलती थी, लेकिन पिछले कई दशकों से उन्हें यह पेंशन नहीं दी जा रही है।

SPECIAL

INDORE (2 Apr.):

तात्या से ये है संबंध

वंशज ग्वालियर व कानपुर में भी

अब इस संबंध में यह परिवार कलेक्टर से मिलकर पेंशन की सूची में नाम शामिल कराने की गुजारिश करेगा।

राज्य सरकार से मिला सम्मान

दो वर्ष पूर्व भोपाल में राज्य सरकार ने माताजी का सम्मान किया था। फिलहाल मप्र सरकार द्वारा हमें सम्मान निधि दी जा रही है, लेकिन केंद्र द्वारा सेनानियों के वंशजों को दी जाने वाली पेंशन हमें लंबे समय से नहीं मिल रही है। पहले ये दादाजी को मिलती थी, लेकिन पिताजी को यह नहीं दी गई। इसे पाने के लिए पिछले कई वर्षों से हम प्रयास कर रहे हैं, लेकिन पेंशन सूची में परिवार का नाम नहीं जुड़ा।

-विपुल टोपे, तात्या टोपे के वंशज

पहले मेरे ससुरजी को केंद्र से पेंशन मिलती थी। पति अस्वस्थ रहते थे, इस वजह से पेंशन सूची में नाम जुड़वाने के लिए भागदौड़ नहीं कर सकी। इसके चलते उनका नाम सूची से हट गया। नियमानुसार हमें पेंशन मिलनी चाहिए, लेकिन इस सूची में अभी तक हमारा नाम नहीं जोड़ा गया है।

-भाग्यश्री टोपे, रमेश टोपे की पत्नी

तात्या टोपे के परिवार का केंद्र सरकार से मिलने वाली पेंशन पर भी हक है। इसके लिए हमने अखिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संगठन एवं उत्तराधिकारी संगठन की ओर से राज्य सरकार व केंद्र सरकार को पत्र लिखा है। इसके अलावा हम राज्यपाल से मिले हैं। इनके परिवार को राष्ट्रीय परिवार घोषित किया जाए और ताम्रपत्र भी दिया जाए। इंदौर में रह रहे तात्या टोपे के वंशजों के बारे में स्थानीय प्रशासन को भी जानकारी नहीं है। प्रशासन को इनका सम्मान करना चाहिए।

CONNECT

अपना फीडबैक आप हमसे यहां शेयर कर सकते हैं.

जिस वीर क्रांतिकारी तात्याटोपे ने अपने प्राणों की आहुती 18 अप्रैल 1859 को दे दी और अंग्रेजो द्वारा उनको फांसी के फंदे पर लटका दिया था। तात्या टोपे की शहादत के 152 साल पर शिवराज सिंह और प्रदेश भाजपा सरकार ने उनकी पेंशन बंद करके उस क्रांतिकारी के परिवार को अपमानित करने का काम किया है। एक तरफ अग्रेजों के वफादार और देश के गद्दार सिंधिया के वंशज चरण वंदना शिवराज और भाजपा करने में लगी है वहीं वीर तात्या टोपे जिन्होंने देश के लिए अपना राजशाही, प्राण, हर ऐशोआराम को त्याग दिया। उनकी पेंशन बंद करने वाला प्रदेश के मामा जी शिवराज सिंह चौहान ही हैं। यह तो भाजपा और संघ जवाब दे सकते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का वे कितना सम्मान करते हैं। आज श्रीमती भाग्यश्री टोपे ने दुखी होकर यहां तक कह दिया कि सरकार हमारी पेंशन और एरियर से हमारे वंशज तात्याटोपे के नाम से कोई स्कूल खुलवा दे या वह पैसा वहां दान दे दे। सवाल यह उठता है कि शिवराज सिंह चौहान और भाजपा ने ऐसे देशभक्त क्रांतिकारियों को त्याग कर देशद्रोही सिंधिया का साथ क्यों दे रही है। जबकि देश की आजादी में सब कुछ गंवाने वाले वीरों के वंशजों को अपमानित किया जा रहा है। आज इन लोगों को भी सम्मान और सहयोग की अपेक्षा है। आजाद भारत में सरकारों से ऐसी उम्मीद बिल्कुल नहीं जा सकती है।

राजबाड़े के हाथों में था। 1857 में जयाजीराव सिंधिया नाम मात्र के महाराजा थे। जब अंग्रेज जयाजीराव को नाम मात्र का राजा मान रहे थे तो ऐसी परिस्थिति में जयाजीराव को रानी लक्ष्मीबाई का साथ देकर अंग्रेजों के विरूद्ध खड़ा होना चाहिए था। लेकिन उन्होंने अंग्रेजो के द्वारा जलील होने के बाद भी लक्ष्मी बाई का साथ नही दिया।

मस्तानी बाई के वंशजों को क्रांतिकारी मानते थे पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नहीं

- फरियाद बहादुर मौजम (मस्तानी बाई की सातवीं पीढ़ी)

मस्तानी बाई

अली बहादुर द्वितीय

मस्तानी बाई राजा छत्रशाल और उनकी रूहानी बेगम की बेटी थी। रूहानी बेगम से छत्रशाल का विवाह हुआ था। मस्तानी मुस्लिम पत्नी से थी। मस्तानी का बाजीराव पेशवा से प्रेम विवाह हुआ था और शादी भी हुई। उसके बाद एक बेटा हुआ कृष्ण राव। उनको मराठाओं ने नही अपनाया और बाजीराव पेशवा की मां ने उसको मुस्लिम करार दिया एवं उसका नाम शमशेर बहादुर रख दिया। शमशेर बहादुर (कृष्ण राव) एहमदशाह अबदाली से मराठों की ओर से युद्ध लड़े थे। वह जख्मी हो गये और उनकी मृत्यु हो गई। शमशेर बहादुर के ज्येष्ठ पुत्र अली बहादुर थे। उनको बुंदेलखण्ड का बांदा जिला और वहां के नवाब बना दिया गया। उनके बाद इनके तीन-चार बेटे नवाव बने। अली बहादुर द्वितीय आखरी नवाब हुए। अली बहादुर द्वितीय ने झांसी की रानी के साथ मिलकर अंग्रेजों के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी। झांसी की रानी इनको राखी बांधती थी और भाई मानती थी। झांसी की रानी का अंतिम संस्कार ग्वालियर में हुआ था और अली बहादुर द्वितीय ने किया था। झांसी की रानी वीरगति को प्राप्त हुई। तात्या टोपे को फांसी हुई, अली बहादुर घायल हुये और उनको महू कोर्ट के जेल में रखा। इनके ऊपर पाबंदी थी कि आप उत्तरप्रदेश कानपुर, लखनऊ, झांसी नही जायेंगे। आप इंदौर में रहेंगे। 27 अगस्त, 1873 में बनारस में इनकी मृत्यु हो गई। महाराजा बनारस ने इनको क्रांतिकारियों के साथ मीटिंग के लिये बुलाया था और वहीं उनकी मृत्यु हो गई और बनारस में इनको दफनाया गया। हमको तीन हजार पेंशन मिलती थी एवं तीन पीढ़ी तक पेंशन दी गई। वह भी सारे वंशजों में 3000 हजार रुपये बंटते थे। इनकी दो पत्नीयां थी। इनको 500-500 रुपये बांटे जाते थे। इसी तरह तीन हजार रुपये का बंटवारा होता था। उनको इंदौर छावनी में रखा था। वही उनके सारे वंशज रहने लगे थे। हमको सरकारी नौकरी नहीं दी गई, सरकार उनको क्रांतिकारी मानते थे पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नही मानते थे। संजय लीला भंसाली ने बाजीराव मस्तानी के उपर फिल्म बनाई थी। पर इनके वंशजों को नही पूछा गया। मस्तानी की पहचान बुंदेलखण्ड में बाजीराव से हुई थी। बाजीराव घायल हुये थे और मस्तानी ने उनकी सेवा की थी और उन्हें उनसे प्रेम हो गया था। लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर युद्ध किया द्वितीय में- जो वे झांसी की रानी के साथ खड़े थे। अली बहादुर द्वितीय परदादा थे। मस्तानी के पुत्र थे- शमशेर बहादुर कृष्णराव, अली बहादुर प्रथम, शमशेर बहादुर द्वितीय, जुल्फकार बहादुर एवं अली बहादुर द्वितीय। मोहम्मद आजम अली बहादुर फरयाद मस्तानी की सातवीं पीढ़ी थी। श्रीमती बहादुर, रजिया सुल्तान बेटी हुई। बेटे का नाम मुक्कार अली बहादुर, बहु का

जब रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ग्वालियर आए तो सिंधिया की निजी सेना ने फिर बागियों के प्रति सहानुभूति दिखाई। लिहाजा ग्वालियर पर विद्रोहियों का कब्जा हो गया।

सिंधिया राजघराने ने लक्ष्मीबाई को दिया धोखा?

आइये पहले जानते हैं कि 1857 में ठीक-ठीक हुआ क्या था। दरअसल, झांसी

नाम नाजनीन बहादुर। बाजीराव पेशवा के प्रतिनिधि बनकर अली बहादुर द्वितीय ने लड़ाई लड़ी। मेरे पिता आसिफ अली बहादुर ने नौकरी छोड़ी थी। वो टेलीग्राम ऑफिस में काम करते थे। उनको पाकिस्तान जाने को कहा था, वो पाकिस्तान नही गये। टेलीग्राम की नौकरी छोड़ दी और उन्होंने कहा कि हमारे यहां से कोई पाकिस्तान नही जायेगा। जितने भी मस्तानी के परिवार जो बांदा में रहते थे। पूना से (पेशवा से) जो फरमान आता था वह मानते थे। आज भी उनके परिवारवालों को बहुत ज्यादा अभिमान है। बाजीराव पेशवा ने अली बहादुर को बहादुर का खिताब दिया था। बाबू कुंवर सिंह, जगदीशपुर (बिहार के राजा थे) जबलपुर से होकर बांदा आये। अली बहादुर ने उनके सोने व ठहरने की व्यवस्था की और उनको बचाकर निकाला। बाद में अंग्रेजों ने उन्हें फांसी दे दी। अगली बार आगे 1873 इंदौर में शादाब खान को फांसी दे दी गई। उनकी लाश को पटक दिया था। और कहा गया था कि इनकी लाश को कोई हाथ नही लगायेगा। बांदा परिवार ने उनको इज्जत से नहलाकर दफनाया था। बांदा खानदान का संबंध साहित्यकारों से भी था। मिर्जा गालिब से उनकी रिश्तेदारी थी। सरकार की तरफ से कुछ भी नही मिला। परिवारवालों को 15 अगस्त एवं 26 जनवरी को नही बुलाया जाता। सरकार ने बांदा की प्रापर्टी जब्त कर ली। सरकार ने बांदा की जमीन, नहर सब ले लिये। हम लोगों को देखने के लिये भी महल नही खोला जाता, उनके नाम से कोई भी कार्यक्रम नही करते। हम चाहते हैं कि हमारे वंशजों का भी सम्मान हो। जब ग्वालियर में झांसी की रानी की मृत्यु हुई थी उस समय अली बहादुर के साथ थे। तात्या टोपे, अली बहादुर, राव साहब बिठुर वाले और नाना फडनवीस जल्दी निकले राजस्थान के चोप शहर में गये। बदनूर (मध्यप्रदेश) में 19 नवम्बर, 1858 को उनको गिरफ्तार किया। महू कोर्ट में इनका ट्रायल हुआ। महाराजा होलकर ने उनकी सहायता की। उन्होंने जमानत ली कि यह अब कोई क्रांति नही करेंगे। मैं इनकी गारंटी लेता हूँ। कलकत्ता गजट में निकलता था इनको जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर 10 हजार का ईनाम दिया जायेगा। भागीरथ सिलावट, बक्तावर सिंह क्रांतिकारियों को फांसी नही दी गई। मस्तानी को पूना में दफनाया गया था। उनकी मृत्यु पावल में हुई थी। पूना से 20 कि.मी. की दूरी पर। शमशेर बहादुर की परवरिश कांशी बाई ने की थी। शमशेर बहादुर के पूर्वज 16 हाथ की साड़ी पहनते थे और मराठी बोलते थे। 1857 के युद्ध के समय कीमती सामान पूना में डाल दिया गया था। बांदा में गदर छेड़ा गया था, बांदा के महल में अली बहादुर द्वितीय ने कहा कि औरतों को कुछ नही होगा। अंग्रेजों ने महिलाओं एवं बच्चों को भी पनाह नहीं दी थी।

मस्तानी बाई के वंशजों से बातचीत करती हुई जगत विजन पत्रिका की संपादक विजया पाठक

में हुए भीषण युद्ध के बाद रानी लक्ष्मीबाई वहाँ से निकलने में कामयाब हो गयीं।

उधर तात्या टोपे को भी हार का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे में इरादा ग्वालियर से मदद लेने का बना। सिपाहियों में फैली क्रांति की चिंगारी ग्वालियर के सैनिकों में भी फैल चुकी थी। ज़ाहिर है, अंग्रेज़ों की कृपापात्र जयाजी राव में घबराहट थी। उसने छल से तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई को

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की हार के जश्न पर महाराज सिंधिया ने दी थी 21 तोपों की सलामी

Pratibha ranade in her book "Rani Laxmi Bai Warrior queen of Jhansi" wrote in her Chapter no 1, History of Jhansi, page 5 "Mahadji Scindia, a Sardar of Peshwa----- As a result, Gwalior flourished.

उपरोक्तानुसार जब पेशवा कमजोर हो गये तो सिंधिया ने उनको इज्जत देना बंद कर दी और ग्वालियर को आज़ाद राज्य घोषित कर दिया। ग्वालियर ने अंग्रेजों के साथ दोस्ती गांठ ली और वह फलने फूलने लगा।

Pratibha ranade in her book "Rani Laxmi Bai Warrior queen of Jhansi" wrote in her Chapter no 3, The Uprising, page 68" Jayaji Rao Scindia, the King of Gwalior, was openly supporting the British......Immediately after the defeat of Jhansi, to celebrate her defeat Maharaj Scindia gave a 21 gun salute! "

उपरोक्तानुसार जयाजीराव सिंधिया ग्वालियर के राजा खुले तौर पर अंग्रेजों की मदद कर रहे थे। इसका खुलासा तब हुआ जब ग्वालियर के पॉलिटिकल एजेंट मैकफर्सन ने अपनी चिट्ठी में लिखा कि जैसे ही झांसी की रानी झांसी हार गई महाराज सिंधिया ने उनकी हार का जश्न मनाते हुए 21 तोपो की सलामी दी।

Pratibha ranade in her book "Rani Laxmi Bai Warrior queen of Jhansi" wrote in her Chapter no 5, Kalpi-Gwalior, page 141-147" Jayaji Rao Scindia........at Agra".

ग्वालियर मध्य भारत में मराठाओं का गढ़ था जिसे पेशवा द्वारा महादजी सिंधिया को दिया गया था। सिंधिया और अंग्रेजों की बीच में मैत्री संधि थी और मैकफर्सन ग्वालियर के पॉलिटिकल एजेंट थे। जयाजीराव अंग्रेजों का वफादार बन गये थे। जयाजीराव ने क्रांति के बीच अंग्रेजों को आश्वासन दिया कि ग्वालियर में उनका कोई बाल भी बांका नही कर सकता है पर क्रांति की चिंगारियां 1857 को अंग्रेजों के कैंप तक पहुँच गई जयाजीराव ने अपनी व्यक्तिगत सैन्य टुकडी से मैकफर्सन एवं अन्य अंग्रेज महिलाएं और बच्चों को आगरा तक छोड़ कर आये। जैसे ही

पकड़ने की योजना बनायी और आठ हजार घुड़सवार लेकर बहादुरपुर गाँव पहुँचा। लेकिन वहाँ उसकी सेना के ज्यादातर सिपाही, स्वतंत्रता सेनानियों के पक्ष से मिल गये (तात्या टोपे के संपर्क और प्रयास का नतीजा था) और सिंधिया को अपने अंगरक्षकों के साथ जान बचाकर भागना पड़ा। ग्वालियर पर क्रांतिकारियों का कब्जा हो गया। एक भारी-भरकम जश्न के बीच

RANI LAXMIBAI: WARRIOR-QUEEN OF JHANSI

your property and lands.
This Fatwa is issued by Walishan, Bandgin, Wali Huzur Rao Pantapradhan Peshwa.

In this letter, Nana Saheb Peshwa called himself a friend of the Badshah (Walishan), his servant (Bandgin) and heir (Wali Huzur Rao).

Jivaji Rao Scindia, the King of Gwalior, was openly supporting the British. This is clear from the letter written later by McPherson, the Political Agent in Gwalior, to Calcutta dated 5 April 1858. He wrote: "We do not know where Rani Laxmibai has gone from Jhansi. We are looking for her. . . Immediately after the defeat of Jhansi, to celebrate her defeat, Maharaj Scindia gave a 21 gun salute! (Tambe, 1958, p. 90)

In the meantime, it appears that Scindia also promised help to the Nawab of Banda. In his letter dated 11 November 1857 to Alibahadur, Scindia wrote: "You have beaten the British and driven them away. That has given me much satisfaction. If anyone opposes you let me know and I will send my army to your aid. I have learned that the King of Rewa has kept the British in safe custody at Nagoda. This behaviour is unbecoming. Even the King of Panna has kept British forces. That too is not good." In yet another letter dated 18 November 1857, the Scindias offered help adding that the letter was sent on the suggestion of the King of Samthar. (Sinha, 1982)

It is possible that Scindia was following a safe policy of keeping both sides happy. He had kept his options open. Sinha had found these letters around 1980. There must be plenty of such letters and other references tucked away somewhere. Dr. Diwekar in his book *1857 che Yuddha: Petlela Dakshin Hindustan*, brought to light the letters and documents from South India written in 1857 showing how widespread the revolt was in that part of the country. As new references emerge, the true and exact nature of the 1857 revolt will come to light.

The Beginning of the End

Although the big war against the British began in 1857,

Kalpi-Gwalior

kept the army at bay on one pretext or the other and persuaded the men to stay back in Gwalior. The army kept demanding money to go to Agra. But Jayaji Rao did not give in to their demand. In the meanwhile, Tatya Tope had met the army leaders and spoken to them. Right after Tatya left, some units from the cavalry followed him and left Gwalior. The rest of the force too was willing to fight for the Peshwa. Apart from Jayaji Rao, Dinkar Rao and a few other courtiers, everybody else was against the British. Among Indians, there was a deep sense of respect for the king who they believed was an incarnation of the Almighty Lord Vishnu. Hence although Jayaji Rao was close to the British, the soldiers were not ready to hurt him. They believed that someday Jayaji Rao would mend his ways and support the soldiers against the British.

It was at this time that news that the Peshwa himself, along with Rani Laxmibai and the army, had reached Amen village on the outskirts of Gwalior, reached Jayaji Rao. He immediately sent his minister Kakaji Moropant to give the message to the Peshwa to leave his kingdom. Rao Saheb Peshwa was furious. He said to Kakaji, "Who are you to ask me to leave? A two penny servant! Are you stupid? And who are those, your king and Diwan? Do they think they are Christians, so they can do anything and nobody can touch them? We are the Peshwa. We have granted this kingdom to Scindia as a favour. Jayaji Rao's ancestor used to stand before the Peshwa with his shoes in his hands. Baijabai (Jayaji Rao's grandmother) had sent us letters supporting us. Do you want to confront us?" Thereupon Kakaji meekly turned back. (Sinha, 1980)

When Rao Saheb claimed that Bayajibai had sent letters of support he was referring to two letters sent by Jayaji Rao to Nawab Ali Bahadur on 11 and 18 November 1857 expressing his support to the revolt, congratulating the Nawab for his battle with the British and offering to send help if required. Jayaji Rao's behaviour was therefore contradictory. On one hand, he was praising the revolt and on the other, he was helping the British. While he was offering help to the revolting sepoys he was also taking and fulfilling the responsibility of

143

पेशवाई फौज़ और रानी लक्ष्मीबाई अमीन गांव ग्वालियर पहुँचे तो जयाजी ने तुरंत अपने मंत्री काकाजी मोरोपंत के हाथों संदेशा भेजा कि आप ग्वालियर से चले जाये।

पेशवाओं के जूते लेकर खड़े होते थे सिंधिया : राव साहब पेशवा

इस बात से गुस्सा होकर राव साहब पेशवा ने बोला हम पेशवा हैं। सिंधिया को उपकार करके ग्वालियर राज्य हमने दिया है। जयाजीराव के वंशज, पेशवाओं के जूते हाथ में लेकर खड़े रहते थे। इसके बाद जयाजीराव ने फिर से लाला बिहारी लाल को भेजा और पेशवा को ग्वालियर छोड़ने को कहा। पेशवा को लगा कि सिंधिया उनका विरोध नही करेगे पर जयाजीराव आगरा में अंग्रेज गर्वनर के साथ सारी बाते साझा कर रहे थे। जयाजीराव ने 26 मई 1858 को 8000 सैनिकों के साथ और 24 तोपों के साथ पेशवा की फौज़ पर धाबा बोल दिया पर रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य के सामने सिंधिया घबरा गये। अपनी हार देखकर जयाजीराव सिंधिया ग्वालियर से भाग कर आगरा पहुँच गये। इसके बाद राव साहब रानी लक्ष्मीबाई सिंधिया के महल में रहने के लिये पहुंच गये और तात्या टोपे ने ग्वालियर के किले पर कब्जा कर लिया। 3 जून 1858 को नाना साहब को पेशवा घोषित कर दिया गया। 16 जून 1858 को ह्यूज रोज़ की फौज ने मुरार पर धाबा कर दिया। 17 जून 1858 रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गई।

नाना साहब को पेशवा घोषित किया गया। ग्वालियर के श्रीमंत सिंधिया ने चाहे अंग्रेजों का साथ दिया हो, वहाँ की सेना का बड़ा हिस्सा और जनता क्रांतिकारियों के स्वागत में बिछ गयी थी। जो शासक जनाकांक्षाओं को नहीं समझ पाता उसे भागना ही पड़ता है। अंग्रेजों के साथ झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के भीषण युद्ध की बात जब भी आती तो, सिंधिया राजघराने का नाम जरूर

सिंधिया की जिद के कारण

ग्वालियर में आकार नहीं ले पाया रोप-वे प्रोजेक्ट

ग्वालियर के जिस जमीन के एक हिस्से पर बीजेपी ने लंबी लड़ाई लड़ने के बाद अपनी पार्टी के ड्रीम के प्रोजेक्ट रोपवे को बनाने का बड़ी धूमधाम से निर्माण शुरू कराया था। सीएम शिवराज सिंह चौहान से लेकर केंद्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर तक सब शिलान्यास करने आये थे, तब भाषणों में तंज भी कसा था कि कुछ लोग ग्वालियर के विकास कार्यों में सालों से बाधा बन रहे हैं, लेकिन अब यह बाधा दूर हो गई है। अब प्रदेश में और देश में दोनों जगह बीजेपी की सरकार है। रोपवे का काम तो अटक ही गया, अब किले पर स्थित वह करोड़ों की कीमत वाली जमीन को

ज्योतिरादित्य सिंधिया ने राजनीतिक रसूख पाते ही बवैध जमीनों पर कब्जा कर अना साम्राज्य स्थापित किया। ग्वालियर और इस आसपास अरबों की जमींन पर सिंधिया का कब्जा है।

आता है। सिंधिया राजघराने पर आरोप लगता है कि उन्होंने 1857 की क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई की जगह अंग्रेजों का साथ दिया था। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 की क्रांति ने अंग्रजों से लोहा लिया

केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादिय सिंधिया की देखरेख वाले सिंधिया स्कूल को ही देने की तैयारी है। बीजेपी को इसे लेकर कसमसाहट है लेकिन बोल नहीं पा रहे।

यह है मामला- सिंधिया परिवार की सरपरस्ती में चलने वाले सिंधिया बायज स्कूल फोर्ट को चलाने वाली वाली संस्था द सिंधिया एजुकेशन सोसायटी ग्वालियर ने राजस्व विभाग से किले पर स्थित 16.53 बीघा राजस्व भूमि अर्थात लगभग तीन लाख 72 हजार 108 वर्गफिट जगह का और आवंटन मांगा है। करोड़ों रूपये मूल्य की यह बेशकीमती भूमि ग्वालियर फोर्ट पर स्थित है। सोसायटी ने ग्वालियर के तत्कालीन कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह के यहां आवेदन लगाया था। जिसके अनुसार आहुखाना कलां मौजे के सर्वे क्रमांक 772/2, 2.100 हेक्टेयर और आगुखाना खुर्द मौजे के सर्वे नंबर 99 में 1.357 हेक्टेयर सोसायटी ने अपने लिये डिमांड की है। नूजल अधिकारी ने यह आवेदन आगे बढ़ा दिया है और 31 जनवरी तक दावे आपत्ति मांगे थे। इसी तरह सर्वे नंबर 777/2 में सोसायटी ने किले पर स्थित 17.577 हेक्टेयर में से 2.100 हेक्टेयर जमीन आवंटन देने की मांग की थी। राजस्व दस्तावेज बताते हैं कि इस सोसायटी के पास पहले से ही राजस्व की 295 बीघा (59.015 हेक्टेयर) से भी ज्यादा जमीन पहले से ही काबिज है। यह जमीन सर्वे क्रमांक 9/2, 345/2,346/2,350/4 क और ख, 345/3, 346/2, 350/2, 777/1 और 2 की कुल 59.015 हेक्टेयर जमीन है।

स्टैंड प्रपोजल हटा- इस जमीन का आवंटन कांग्रेस सरकार ने 2019 किया था, वह भी महज 100 रुपये भाटक यानि डायवर्सन शुल्क सालाना देने की शर्त पर किया था। तब बीजेपी ने इसका जमकर विरोध किया था। पार्टी के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा और पूर्व मंत्री ने तो सिंधिया को भूमाफिया ही बता दिया था, लेकिन अब उन्हीं की पार्टी बाकी की भूमि लीज पर देने जा रही है। इस मामले पर बीजेपी भले ही खुलकर नहीं बोल पा रही है लेकिन उसमें अंदर ही अंदर ज्वालामुखी का लावा खदबदा रहा है। इसकी वजह है कि पार्टी के ड्रीम प्रोजेक्ट रोपवे का न बन पाना। दरअसल सिंधिया संस्थान ने जो जमीन लीज पर मांगी है, बीजेपी के ड्रीम प्रोजेक्ट रोपवे के एक स्टेंड के लिये आरक्षित और आवंटित भूमि भी शामिल है। सर्वे क्रमांक 777/2-3 की चार हेक्टेयर भूमि इसके लिये आरक्षित थी, लेकिन अब यहां से स्डेंड प्रपोजल ही हटा दिया गया है। इससे बीजेपी के नेता से लेकर कार्यकर्ता तक निराश और हताश हैं।

सिंधिया परिवार को नापसंद- जनसंघ और फिर बीजेपी के नेता रोपवे बनाने का सपना देख रहे हैं। योजना के मुताबिक उसका एक टर्मिनल

था। वो 18 जून 1958 को अंग्रेजों के साथ लड़ते हुए शहीद हो गई थी। युद्ध के मैदान में मात्र 29 साल की उम्र में झांसी की रानी को वीरगति प्राप्त हुई थी। कहा जाता है कि अगर 1857 की लड़ाई में रानी लक्ष्मीबाई का यदि ग्वालियर के सिंधिया ने साथ दिया होता और रानी के साथ गद्दारी न की होती, तो शायद अंग्रेजों की जीत नहीं होती। इस मान्यता का जिक्र मशहूर कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में भी मिलता है। उन्होंने लिखा, अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी रजधानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

सिंधिया राजवंश कौन हैं?

सिंधिया मूलतः महाराष्ट्र के सतारा

फूलबाग पर तो दूसरा ऐतिहासिक किले पर बनना प्रस्तावित था। वह टर्मिनल सिंधिया स्कूल के प्राचार्य के बंगले के पीछे खुलना था जो सिंधिया परिवार को नापसंद था। बीजेपी नेता बीते पचास साल से सिंधिया परिवार यानी पहले माधवराव और फिर उनके बेटे ज्योतिरादित्य सिंधिया पर इसके मार्ग में बाधा डालने का आरोप लगाते रहे, किला पर एएसआई की इजाजत मिलना जरूरी है और केन्द्र में कांग्रेस सरकार के होने पर सिंधिया परिवार के ताकतवर होने से वह हासिल नहीं पाती थी, लेकिन एक वक्त ऐसा आया कि नगर निगम, प्रदेश और देश में तीनों जगह बीजेपी की ही सरकार बनी तो तत्कालीन महापौर विवेक नारायण शेजवलकर ने काफी प्रयास कर शिवराज और नरेन्द्र सिंह तोमर की मदद लेकर रोपवे की सारी अभिस्वीकृतियां करवा ली। इसके शिलान्यास का बड़ा ही भव्य कार्यक्रम हुआ। जिसे बीजेपी के नेता से लेकर कार्यकर्ता ने एक तरह से सिंधिया के ऊपर विजय के रूप में प्रचारित किया और समारोह में सभी ने अपना भाषण इसी पर केन्द्रित किया।

रातों रात एनओसी रद्द- 2020 में कमलनाथ की सरकार गिरते ही और ज्योतिरादित्य सिंधिया के बीजेपी में शामिल होते ही रोपवे परियोजना का

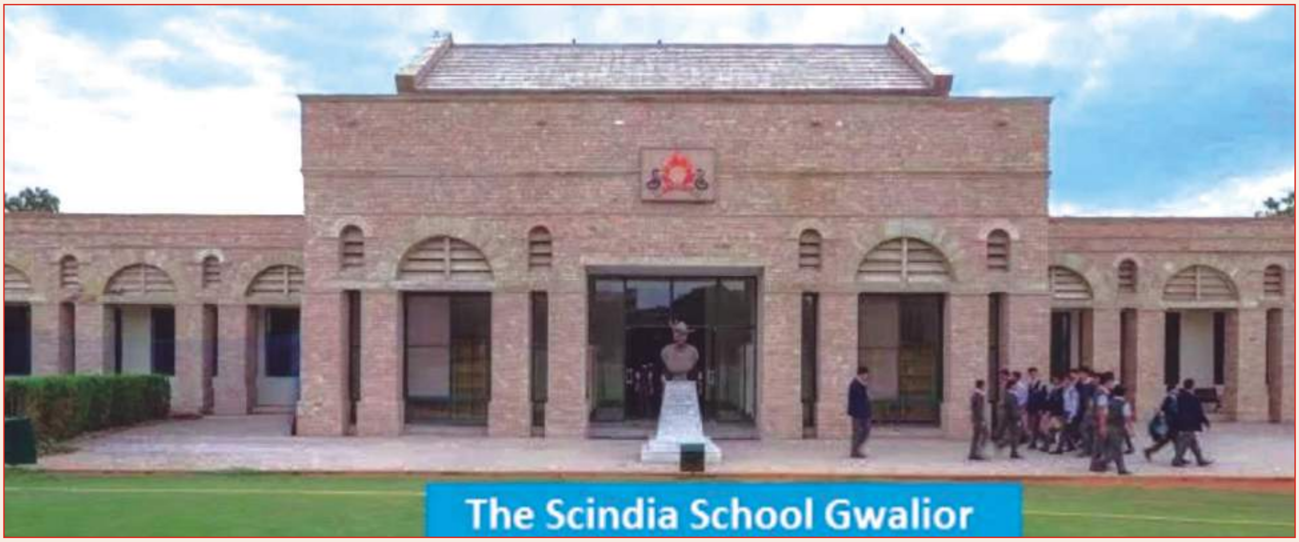

पहिया उल्टा घूमने लगा। हालांकि उस समय इस परियोजना पर निर्माण कार्य शुरू भी हो गया था लेकिन रातोंरात इसकी सारी एनओसी रद्द कर दी गई और कहा गया कि लोवर और अपर दोनों टर्मिनल के लिये पहले दूसरी जगह ढूंढेंगे तब फिर वह काम शुरू होगा। इस फैसले के बाद से ही बीजेपी के नेता और कार्यकर्ताओं के बीच शीतयुद्ध शुरू हुआ जो अब इस जमीन को लीज पर मांगने के साथ और गहरा गया है।

अंदरखाने से जबरदस्त रिएक्शन- इस मामले को लेकर बीजेपी में हालांकि अंदरखाने जबरदस्त रिएक्शन है, लेकिन खुलकर कोई बोलने को तैयार नहीं है। सांसद विवेक नारायण शेजवलकर कहते हैं कि सिंधिया ट्रस्ट के पास तो पहले से ही काफी जमीन है और फिर रोपवे में तो बहुत ही कम भूमि फोर्ट पर चाहिए थी, उनका कहना है कि उन्हें पता चला है कि अपर टर्मिनल बदलने के लिये कोई जगह चयनित की है। अभी तक कोई काम शुरू नहीं हुआ है। पहले से ही 60 हजार हेक्टेयर भूमि है, इसके लिये तो केवल 03 हजार फुट जगह चाहिए थी। भूमि आवंटन कार्यवाही का यह मामला उजागर होने के बाद प्रशासन भी हड़बड़ी में आ गया। तत्कालीन कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने इस मामले पर गोलमोल जबाव

जिले के कन्हेरखेड गाँव के रहने वाले सामान्य परिवार के लोग थे। रानोजी सिंधिया 1720 में मराठा सेना में भर्ती हुए और बाद में पेशवा बाजीराव के मशहूर जनरल बने। मराठा साम्राज्य के विस्तार में

ज्योतिरादित्य सिंधिया की महात्वाकांक्षाओं का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कांग्रेस में रहते हुए वह मुख्यमंत्री कमलनाथ पर लगातार दबाव बनाते रहे। कमलनाथ सरकार में वह सभी अनैतिक कार्यों के लिए दबाव बनाते रहे, लेकिन कमलनाथ सरकार न झुकी तो सिंधिया ने पार्टी से ही बगावत कर दी।

दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि जमीन आवंटन के लिये आवेदन प्राप्त हुआ। जब भी कोई सामाजिक शैक्षणिक संस्था इसके लिये आवेदन देती है तो उसकी एक प्रक्रिया है। उसे दर्ज कर इश्तिहार जारी करते हैं। परीक्षण करते हैं और फिर उसी प्रोसेस में जमीन आवंटन के मामले निपटाये जाते हैं।

रोप-वे न बन पाने का कारण सिंधिया हैं - आरपी सिंह, कांग्रेस प्रवक्ता

कांग्रेस प्रवक्ता आरपी सिंह ने रोप-वे न बन पाने का कारण सिर्फऔर सिर्फकेन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को ठहराया है। क्योंकि वह उस रोप-वे को सिंधिया स्कूल के पास बनते नहीं देखना चाहते थे। उनका सपना पूरा होता दिख रहा है, साथ ही बीजेपी के नेताओं ने इस जमीन को लेकर तो सिंधिया को भूमाफिया बोलते थे। अब क्यों भाजपाई इस मामले में मुंह में दही जमाये हुए हैं।

देश के बोर्डिंग स्कूलों में सिंधिया स्कूल, ग्वालियर, मध्य प्रदेश का नाम आता है। इस स्कूल की स्थापना स्वर्गीय महाराजा माधवराव जयाजीराव सिंधिया ने की थी।

सिंधिया स्कूल रैंगिंग में भी अव्वल- ग्वालियर में सिंधिया स्कूल रैगिंग कांड में भी अव्वल है। दरअसल कुछ वर्ष पहले 9वीं के छात्र आदर्श सिंह के साथ रैगिंग का मामला सामने आया था। इस मामले में बाल आयोग ने भी हस्तक्षेप करते हुए सिंधिया स्कूल प्रबंधन की खिंचाई की थी। सिंधिया स्कूल प्रबंधन ने इस बात को भी स्वीकार किया था कि उनके यहां एंटी रैगिंग कमेटी नहीं है। इसके स्थान पर स्कूल में आंतरिक अनुशासन समिति गठित की गई थी। स्कूल प्रबंधन की ओर से आयोग को भेजी गई अपनी रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि यह आंतरिक अनुशासन समिति पूरी तरह सक्रिय नहीं थी।

उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। 1730 में मालवा विजय के बाद एक तिहाई हिस्सा रानोजी को मिला। बाकी दो इंदौर के होल्कर और धार के पवार को दिया गया। इस तरह सिंधिया एक राजघराने के रूप में अस्तित्व में आया। उज्जैन को राजधानी बनाया गया जो हिंदुओं की पवित्र कुंभनगरी थी। 1857 की क्रांति की असफलता के बाद अंग्रेजों ने सिंधिया को काफी इनाम और सम्मान दिया जिसने मध्य भारत में ग्वालियर को सबसे ताकत वर रियासत बना दिया। बनारस के मशहूर घाट इसी वक्त सिंधिया को सौंपे गये।

लक्ष्मीबाई पर क्या बोलीं थीं वसुंधरा राजे ?

सरकारी जमीन पर पब्लिक रोड नही बनने दे रहे हैं, सिंधिया का कमलाराजे चेरिटेबल ट्रस्ट। अदालत ने माना कि सरकारी जमीन पर सिंधिया का दावा गलत

सिंधिया राजघराने की करीब-करीब सारी संपत्तियां उनके ट्रस्टों के माध्यम से कंट्रोल किया जाता है, इनमें से एक ट्रस्ट कमलाराजे चेरिटेबल ट्रस्ट। जिनके नाम पर बहुत सारी सरकारी संपत्तियां 2018 के बाद हस्तांतरित हो गई थी। ऐसा ही एक मामले को लेकर जिला न्यायालय ग्वालियर में एक ऐतिहासिक फैसला आया जिसमें माननीय न्यायधीश ने अपना फैसला सुनाते हुए लिखा कि "वादग्रस्त भूमि पर वादी पक्ष (सिंधिया) वादी पक्ष द्वारा उपयोग किये जाने विषयक कोई प्राथमिक साक्ष्य अभिलेख पर नही होने से उन्हें अपरिमित क्षति की संभावना नगण्य होने, आम जन की असुविधा एवं शासकीय लोक-उपकारी योजनाओं में संभाव्य बाधा आदि को दृष्टिगत रखते हुए, आवेदक/वादी द्वारा प्रस्तुत अस्थाई निषेधाज्ञा आवेदन पत्र अंतर्गत आदेश 39 नियम 1 व 2 सपठित धारा 151 व्य.प्र.सं. 1908 वर्तमान मामले की परिस्थितियों में स्वीकार्य योग्य नही होने से निरस्त करता है।"

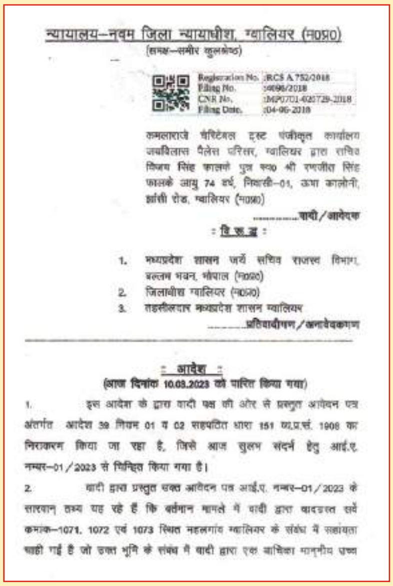
न्यायालय—नवम जिला न्यायाधीश, ग्वालियर (म0प्र0)
(समक्ष—समीर कुलश्रेष्ठ)

Registration No. :RCS A 752/2018
Filing No. :4096/2018
CNR No. :MP0701-020729-2018
Filing Date. :04-06-2018

कमलाराजे चेरिटेबल ट्रस्ट पंजीकृत कार्यालय जयविलास पैलेस परिसर, ग्वालियर द्वारा सचिव विजय सिंह फालके पुत्र स्व0 श्री रणजीत सिंह फालके आयु 74 वर्ष, निवासी—01, ऊषा कालोनी, झांसी रोड, ग्वालियर (म0प्र0)

..........वादी/आवेदक

: वि रू द्ध :

1. मध्यप्रदेश शासन जर्ये सचिव राजस्व विभाग, वल्लभ भवन, भोपाल (म0प्र0)
2. जिलाधीश ग्वालियर (म0प्र0)
3. तहसीलदार मध्यप्रदेश शासन ग्वालियर

........प्रतिवादीगण/अनावेदकगण

: आदेश :
(आज दिनांक 10.03.2023 को पारित किया गया)

1. इस आदेश के द्वारा वादी पक्ष की ओर से प्रस्तुत आवेदन पत्र अंतर्गत आदेश 39 नियम 01 व 02 सहपठित धारा 151 व्य.प्र.सं. 1908 का निराकरण किया जा रहा है, जिसे आज सुलभ संदर्भ हेतु आई.ए. नम्बर—01/2023 से चिन्हित किया गया है।

2. वादी द्वारा प्रस्तुत उक्त आवेदन पत्र आई.ए. नम्बर—01/2023 के सारवान् तथ्य यह रहे हैं कि वर्तमान मामले में वादी द्वारा वादग्रस्त सर्वे क्रमांक—1071, 1072 एवं 1073 स्थित महलगांव ग्वालियर के संबंध में सहायता चाही गई है जो उक्त भूमि के संबंध में वादी द्वारा एक याचिका माननीय उच्च

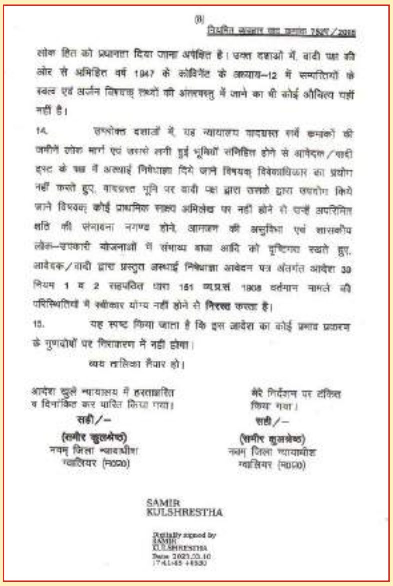
(8)
नियमित व्यवहार वाद क्रमांक 752/2018

लोक हित को प्रधानता दिया जाना अपेक्षित है। उक्त दशाओं में, वादी पक्ष की ओर से अभिहित वर्ष 1947 के कोविनेंट के अध्याय—12 में सम्पत्तियों के स्वत्व एवं अर्जन विषयक तथ्यों की अंतर्वस्तु में जाने का भी कोई औचित्य यहाँ नहीं है।

14. उपरोक्त दशाओं में, यह न्यायालय वादग्रस्त सर्वे क्रमांकों की जमीनें लोक मार्ग एवं उससे लगी हुई भूमियाँ सम्मिलित होने से आवेदक/वादी ट्रस्ट के पक्ष में अस्थाई निषेधाज्ञा दिये जाने विषयक विवेकाधिकार का प्रयोग नहीं करते हुए, वादग्रस्त भूमि पर वादी पक्ष द्वारा उसके द्वारा उपयोग किये जाने विषयक कोई प्राथमिक साक्ष्य अभिलेख पर नहीं होने से उन्हें अपरिमित क्षति की संभावना नगण्य होने, आमजन की असुविधा एवं शासकीय लोक—उपकारी योजनाओं में संभाव्य बाधा आदि को दृष्टिगत रखते हुए, आवेदक/वादी द्वारा प्रस्तुत अस्थाई निषेधाज्ञा आवेदन पत्र अंतर्गत आदेश 39 नियम 1 व 2 सहपठित धारा 151 व्य.प्र.सं. 1908 वर्तमान मामले की परिस्थितियों में स्वीकार योग्य नहीं होने से निरस्त करता है।

15. यह स्पष्ट किया जाता है कि इस आदेश का कोई प्रभाव प्रकरण के गुणदोषों पर निराकरण में नहीं होगा।

व्यय तालिका तैयार हो।

आदेश खुले न्यायालय में हस्ताक्षरित व दिनांकित कर पारित किया गया।
सही/—
(समीर कुलश्रेष्ठ)
नवम् जिला न्यायाधीश
ग्वालियर (म0प्र0)

मेरे निर्देशन पर टंकित किया गया।
सही/—
(समीर कुलश्रेष्ठ)
नवम् जिला न्यायाधीश
ग्वालियर (म0प्र0)

SAMIR KULSHRESTHA

Digitally signed by SAMIR KULSHRESTHA
Date: 2023.03.10 17:41:45 +0530

दरअसल सिंधिया के कमलाराजे चेरिटेबल ट्रस्ट जिसका कार्यालय जयविलास पैलेस ग्वालियर है और उसके सचिव विजय सिंह फालके द्वारा पिटिशन अदालत में लगाई गई थी। अदालत के आदेश में जयविलास की बाउण्डरीवाल तथा लोकमार्ग (पब्लिक स्ट्रीट) के मध्य का भाग लोकमार्ग का ही भाग है और शासकीय भूमि है। इसमें लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाई गई एक सड़क पर ट्रस्ट द्वारा आपत्ति ली गई थी एवं ट्रस्ट उक्त जमीन को अपनी दर्शा रहा था। यह मामला वर्ष 2003 से सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय और जिला न्यायालय के प्रकरण के रूप में सुनवाई हुई। ट्रस्ट द्वारा 2018 में सर्वे क्रमांक-1071,1072 एवं 1073 महलगांव ग्वालियर स्थित भूमि को लेकर प्रकरण क्रमांक-4096/2018 में जिला न्यायालय ग्वालियर में सरकार के विरूद्ध मामला लगाया। उक्त शासकीय जमीन को अपना दर्शाते हुए स्थगन की मांग की गई। इनकी बदनीयती का अंदाजा इसी से लगता है कि कैसे पब्लिक यूज़ वाली सड़क को वह हथियाना चाहते थे। अदालत ने इनका मामला खारिज़ कर दिया है। इस बदनियती से साफ होता है कि कैसे सिंधिया लैंड माफिया की तरह काम करती है।

अगस्त 2006 में राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया को इंदौर में रानी लक्ष्मीबाई की एक मूर्ति के अनावरण के लिए आमंत्रित किया गया था और उन्हें यहां विरोध-प्रदर्शन का सामना करना पड़ा था। वसुंधरा ने तब इन आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया था और कहा था कि एक महिला के तौर पर रानी लक्ष्मीबाई के लिए उनके मन में काफी सम्मान है। चुनाव के

वक़्त सिंधिया परिवार पर उंगली उठाने के लिए अकसर इतिहास के गड़े मुर्दो को अपने-अपने हिसाब से उखाड़ा जाता रहा है। वीर सावरकर ने भी अपनी किताब इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस 1857 में इस राजघराने पर अंग्रेज़ों का साथ देने के आरोप लगाए हैं।

सिंधिया की सरकारी जमीनों पर गिद्ध नजर, कमलनाथ ने फेरा सिंधिया के मंसूबे पर पानी

गद्दारी का किस्सा मनगढ़ंत नहीं

ग्वालियर में सिंधिया परिवार के प्रति वफादार कुछ पत्रकार और बौद्धिक लोग नहीं मानते कि सिंधिया नरेशों ने कोई गद्दारी की थी। वे इसे सुभद्रा कुमारी चौहान की

आजादी के बाद प्रदेश के सबसे बड़े भूमाफिया बना सिंधिया राजघराना

कोवेनेंट लिस्ट के बाहर सिंधिया की सम्पत्तियां होनी चाहिए जप्त

1947 में भारत आजाद हुआ, मध्य भारत बना। एक समझौता सरकारों और राजाओं के बीच हुआ और सभी राजाओं का भारत में मर्जर हुआ। भारत सरकार में एक Covenant तैयार हुआ। अनुच्छेंद 12 में सभी राजाओं को अपने व्यक्तिगत उपयोग की संपत्ति और राज्य सरकार की संपत्ति की लिस्ट देनी थी तो ग्वालियर महाराज ने भी अपनी संपत्ति की लिस्ट भेज दी। भारत सरकार ने उस लिस्ट को फाइनल करके 13/2/1948 को मध्य भारत के मुख्यमंत्री लीलाधर जोशी को भेज दी। सभी राजा महाराजाओं की संपत्ति की सूची 25/7/1949 को मेमोरेंडम के साथ सभी विभागों को भेज दी गई। इस लिस्ट के अलावा ग्वालियर राज्य की संपत्ति भारत में सम्मलित हो गई। भारत के आजाद होने के बाद मध्य भारत गजट में दिनांक 30 अक्टूबर 1948 में राजनीतिक एवं एक्सट्रर्नल विभाग क्रमांक 1674/पी एण्ड ई. ग्वालियर में दिनांक 7 अक्टूबर 1948 Covenant में आर्टीकल 12 में Covenanting राज्य को अपनी निजी संपत्ति की पूरी स्वामित्व उपयोग और आनंद के लिये पूर्व स्वायत्ता दे दी गई। इसके अलावा राज्य प्रमुख के समक्ष 1 अगस्त 1948 तक अपनी अचल संपत्ति, प्रतिभूतियों और नगदी शेष को निजी संपत्ति के रूप में माना जायेगा। इसके अलावा एक प्रमुख प्रावधान में माना गया कि 1 जुलाई, 1949 के बाद संपत्ति पर कोई भी विवाद मान्य नही होगा। यह Covenant स्पष्ट तौर पर सूची पर महत्व दिया गया है, इसके मुताबिक राज्य द्वारा दर्शाई गई निजी संपत्ति के अलावा शेष राज्य की संपत्ति सरकार की हो जायेगी एवं Covenanting राज्य निजी संपत्ति का उपयोग अपने हिसाब से कैसे भी कर सकता है। इसमें महत्वपूर्ण बात सूची क्रमांक 4 है, जो कि महाराजा सिंधिया ग्वालियर की निजी संपत्ति थी जिसे इन्होंने मध्य भारत सरकार को सौंपा। इस सूची क्रमांक 4 में मोती महल पैलेस, गोरखी पैलेस, जयाजी चौक लश्कर, सरस्वती महल कंपू कोठी, जल बिहार और गेंड घर, महेश्वरा कोठी, तिगरा कोठी, गद्दी बैरक, ग्वालियर महल में भदया खुंड

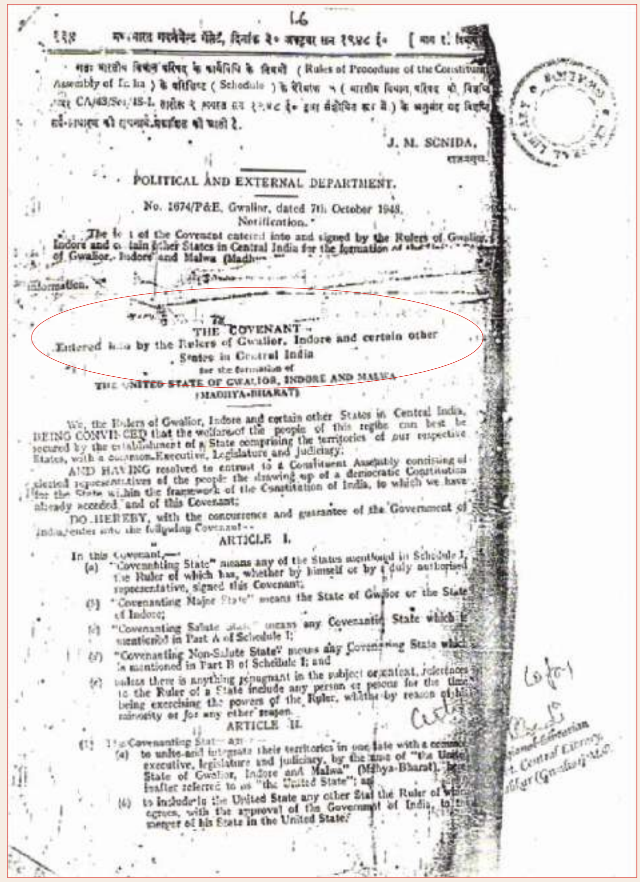

J. M. SCNIDA,

POLITICAL AND EXTERNAL DEPARTMENT.

No. 1674/P&E, Gwalior, dated 7th October 1948.
Notification.

THE COVENANT
Entered into by the Rulers of Gwalior, Indore and certain other States in Central India
for the formation of
THE UNITED STATE OF GWALIOR, INDORE AND MALWA
(MADHYA-BHARAT)

We, the Rulers of Gwalior, Indore and certain other States in Central India, BEING CONVINCED that the welfare of the people of this region can best be secured by the establishment of a State comprising the territories of our respective States, with a common Executive, Legislature and Judiciary;

AND HAVING resolved to entrust to a Constituent Assembly consisting of elected representatives of the people the drawing up of a democratic Constitution for the State within the framework of the Constitution of India, to which we have already acceded, and of this Covenant;

DO HEREBY, with the concurrence and guarantee of the Government of India, enter into the following Covenant:—

ARTICLE I.

In this Covenant,—

(a) "Covenanting State" means any of the States mentioned in Schedule I, the Ruler of which has, whether by himself or by a duly authorised representative, signed this Covenant;

(b) "Covenanting Major State" means the State of Gwalior or the State of Indore;

(c) "Covenanting Salute State" means any Covenanting State which is mentioned in Part A of Schedule I;

(d) "Covenanting Non-Salute State" means any Covenanting State which is mentioned in Part B of Schedule I; and

(e) unless there is anything repugnant in the subject or context, references to the Ruler of a State include any person or persons for the time being exercising the powers of the Ruler, whether by reason of his minority or for any other reason.

ARTICLE II.

(1) The Covenanting States agree—

(a) to unite and integrate their territories in one State with a common executive, legislature and judiciary, by the name of "the United State of Gwalior, Indore and Malwa" (Madhya-Bharat), hereinafter referred to as "the United State"; and

(b) to include in the United State any other State the Ruler of which agrees, with the approval of the Government of India, to the merger of his State in the United State.

आजादी के बाद 1948 में भारत सरकार द्वारा गजट नोटिफिकेशन पर कोवेनेंट दस्तावेज तैयार हुआ

मनगढ़ंत बात बता रहे हैं लेकिन जिस किसी ने भी रानी को केंद्रित कर कुछ भी लिखा, उसने यह भी जिक्र किया है कि सिंधिया राजाओं ने गद्दारी तो की थी। 1857 की क्रांति पर पुस्तक लेखक डॉ. राकेश पाठक बताते हैं कि इस प्रमाण को कैसे खारिज

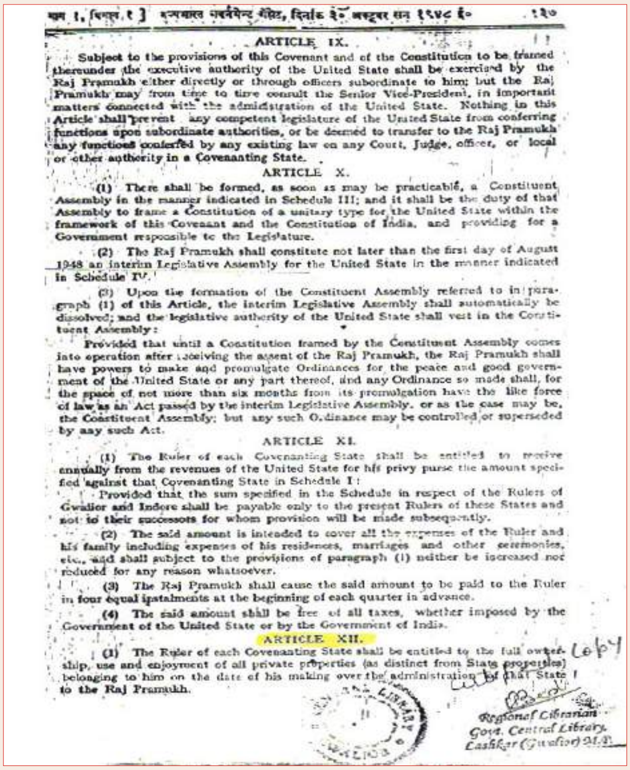
भाग १, विभाग १] मध्यभारत गवर्नमेन्ट गैज़ेट, दिनांक ३० अक्टूबर सन १९४८ ई० १२७

ARTICLE IX.

Subject to the provisions of this Covenant and of the Constitution to be framed thereunder the executive authority of the United State shall be exercised by the Raj Pramukh either directly or through officers subordinate to him; but the Raj Pramukh may from time to time consult the Senior Vice-President, in important matters connected with the administration of the United State. Nothing in this Article shall prevent any competent legislature of the United State from conferring functions upon subordinate authorities, or be deemed to transfer to the Raj Pramukh any functions conferred by any existing law on any Court, Judge, officer, or local or other authority in a Covenanting State.

ARTICLE X.

(1) There shall be formed, as soon as may be practicable, a Constituent Assembly in the manner indicated in Schedule III; and it shall be the duty of that Assembly to frame a Constitution of a unitary type for the United State within the framework of this Covenant and the Constitution of India, and providing for a Government responsible to the Legislature.

(2) The Raj Pramukh shall constitute not later than the first day of August 1948 an interim Legislative Assembly for the United State in the manner indicated in Schedule IV.

(3) Upon the formation of the Constituent Assembly referred to in paragraph (1) of this Article, the interim Legislative Assembly shall automatically be dissolved; and the legislative authority of the United State shall vest in the Constituent Assembly:

Provided that until a Constitution framed by the Constituent Assembly comes into operation after receiving the assent of the Raj Pramukh, the Raj Pramukh shall have powers to make and promulgate Ordinances for the peace and good government of the United State or any part thereof, and any Ordinance so made shall, for the space of not more than six months from its promulgation have the like force of law as an Act passed by the interim Legislative Assembly, or as the case may be, the Constituent Assembly; but any such Ordinance may be controlled or superseded by any such Act.

ARTICLE XI.

(1) The Ruler of each Covenanting State shall be entitled to receive annually from the revenues of the United State for his privy purse the amount specified against that Covenanting State in Schedule I:

Provided that the sum specified in the Schedule in respect of the Rulers of Gwalior and Indore shall be payable only to the present Rulers of these States and not to their successors for whom provision will be made subsequently.

(2) The said amount is intended to cover all the expenses of the Ruler and his family including expenses of his residences, marriages and other ceremonies, etc., and shall subject to the provisions of paragraph (1) neither be increased nor reduced for any reason whatsoever.

(3) The Raj Pramukh shall cause the said amount to be paid to the Ruler in four equal instalments at the beginning of each quarter in advance.

(4) The said amount shall be free of all taxes, whether imposed by the Government of the United State or by the Government of India.

ARTICLE XII.

(1) The Ruler of each Covenanting State shall be entitled to the full ownership, use and enjoyment of all private properties (as distinct from State properties) belonging to him on the date of his making over the administration of that State to the Raj Pramukh.

Copy

Regional Librarian
Govt. Central Library
Lashkar (Gwalior) M.P.

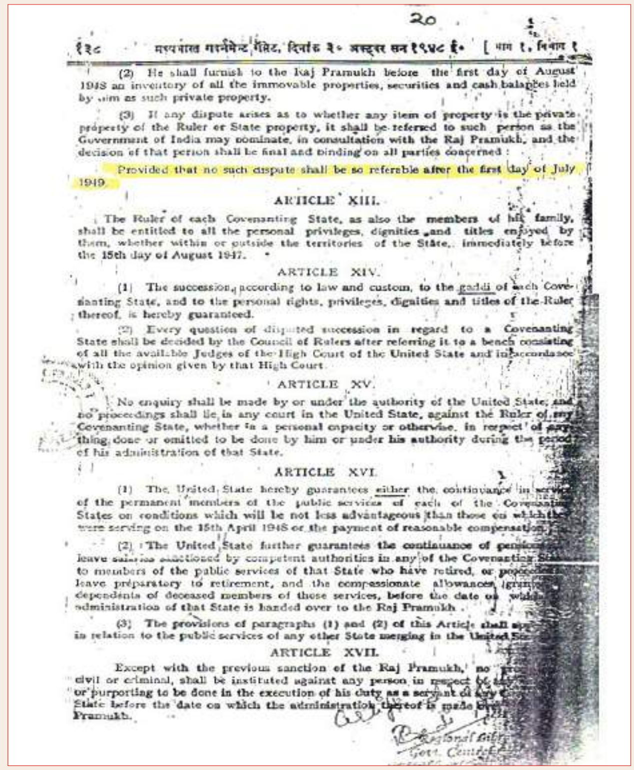
20

१२८ मध्यभारत गवर्नमेन्ट गैज़ेट, दिनांक ३० अक्टूबर सन १९४८ ई० [भाग १, विभाग १

(2) He shall furnish to the Raj Pramukh before the first day of August 1948 an inventory of all the immovable properties, securities and cash balances held by him as such private property.

(3) If any dispute arises as to whether any item of property is the private property of the Ruler or State property, it shall be referred to such person as the Government of India may nominate, in consultation with the Raj Pramukh, and the decision of that person shall be final and binding on all parties concerned:

Provided that no such dispute shall be so referable after the first day of July 1949.

ARTICLE XIII.

The Ruler of each Covenanting State, as also the members of his family, shall be entitled to all the personal privileges, dignities and titles enjoyed by them, whether within or outside the territories of the State, immediately before the 15th day of August 1947.

ARTICLE XIV.

(1) The succession, according to law and custom, to the gaddi of each Covenanting State, and to the personal rights, privileges, dignities and titles of the Ruler thereof, is hereby guaranteed.

(2) Every question of disputed succession in regard to a Covenanting State shall be decided by the Council of Rulers after referring it to a bench consisting of all the available Judges of the High Court of the United State and in accordance with the opinion given by that High Court.

ARTICLE XV.

No enquiry shall be made by or under the authority of the United State, and no proceedings shall lie in any court in the United State, against the Ruler of any Covenanting State, whether in a personal capacity or otherwise, in respect of anything done or omitted to be done by him or under his authority during the period of his administration of that State.

ARTICLE XVI.

(1) The United State hereby guarantees either the continuance in service of the permanent members of the public services of each of the Covenanting States on conditions which will be not less advantageous than those on which they were serving on the 15th April 1948 or the payment of reasonable compensation.

(2) The United State further guarantees the continuance of pensions [illegible] leave salaries sanctioned by competent authorities in any of the Covenanting States to members of the public services of that State who have retired, or proceeded on leave preparatory to retirement, and the compassionate allowances granted to dependents of deceased members of those services, before the date on which the administration of that State is handed over to the Raj Pramukh.

(3) The provisions of paragraphs (1) and (2) of this Article shall apply in relation to the public services of any other State merging in the United State [illegible]

ARTICLE XVII.

Except with the previous sanction of the Raj Pramukh, no [illegible] civil or criminal, shall be instituted against any person in respect of any [illegible] or purporting to be done in the execution of his duty as a servant of any [illegible] State before the date on which the administration thereof is made over [illegible] Pramukh.

Regional Libr[illegible]
Govt. Centr[illegible]

कोवेनेंट के आर्टिकल-12 में राजा/महाराजाओं को अपनी अंतिम निजी सम्पत्ति को सौंपने का तथा 1949 के बाद उस पर न कोई संशोधन, न नामांतरण, न इस सूची की सम्पत्ति के अलावा अन्य कोई सम्पत्ति पर विवाद नहीं हो सकता।

शिवपुरी, श्योपुर पैलेस, पुरानी छावनी कोठी, गिड्र, अप्पाजी काटेज टुंडा, भदका रोड शिवपुरी, भूराखो और टॉवर, अम्माकुंज काठ बंगला, गोराघाट बंगलो, राम नगर महल चंदेरी, पंचम नगर महल चंदेरी, सिंगपुर महल चंदेरी, जौरा कोठी आगर, लाल बंगलो शाजापुर, हाउसेस ऑफ सुंदरेसी, चौदह घर सयार नल खेड़ा, गौ शाला बालाघाट, सदावरत कटी घाटी, फोटरेस छत्रि उमरकोट, कोटेश्वर बाग, फूल बाग, देवी मंदिर नयागांव, समाधि ऑफ स्व.माधव राव सिंधिया और हस्सू डॉग जो कि सरदार साहब के बाग के अंदर स्थित है। निजी संपत्तियों के अलावा बाकी सारी सिंधिया राजघराने की संपत्तियां राज्य सरकार की हो गई। इसके बाद अगर कहीं कब्जा कर, नामांतरण कर अगर ऊपर दर्शाई गई संपत्ति के अलावा सिंधिया राजघराने द्वारा जमीन का सौदा अवैध होगा। पर इसके बाद ही सिंधिया द्वारा अवैध अतिक्रमण सरकारी तंत्र का दुरूपयोग कर अपने क्षेत्र के जमीन का क्षेत्रफल बढ़ाना इसके साथ ही ग्वालियर शहर में कईयों संपत्तियों पर कब्जा करने की बार चेष्टा की गई। इसी तारतम्य में राजमाता विजयराजे सिंधिया ने वी. विश्वनाथन गृह मंत्रालय भारत सरकार को चिट्ठी लिखी गई। जिसमें बहुत सारे मानचित्रों को सिंधिया राजघराने द्वारा सौंपी गई निजी संपत्तियों की सूची जो उन्होंने 1948 में जमा की थी, उस पर मानचित्रों का नया उल्लेख बताया गया। जिस पर केन्द्र सरकार ने पत्र क्रमांक एफ 05/28/68 पॉलिटिकल, दिनांक 16/10/1968 को मध्यप्रदेश सरकार को लिखा गया। इस पत्र के बाद राज्य सरकार के उप सचिव ओमप्रकाश मेहरा पत्र के क्रमांक 469/3096/1 सामान्य प्रशासन

किया जाए कि उस समय के ग्वालियर के जयाजी राव सिंधिया मुरार के युद्ध में स्वयं अंग्रेजों की तरफ से लड़ने गया था। इसके बाद 1857 की क्रांति के बाद जब लॉर्ड कैनिंग ने आगरा दरबार किया तब उस दरबार में जयाजी राव सिंधिया भी आए थे

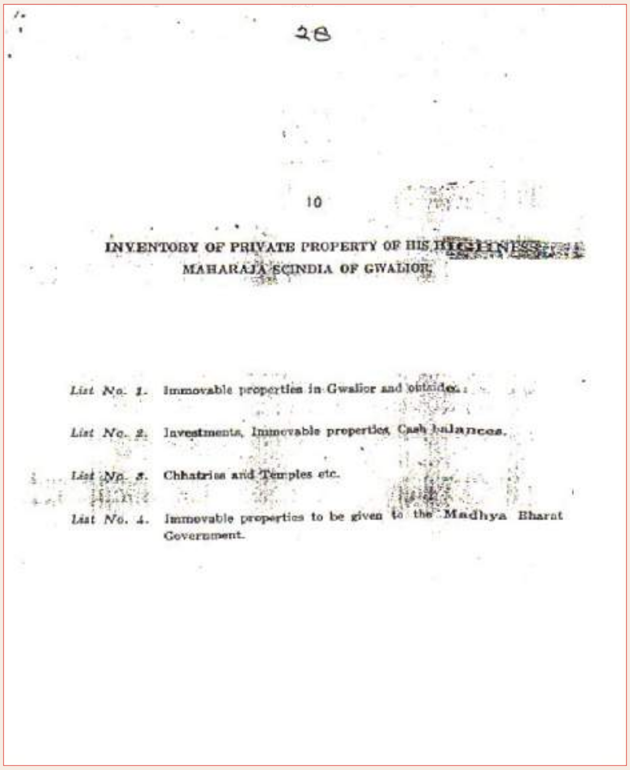

28

10

INVENTORY OF PRIVATE PROPERTY OF HIS HIGHNESS MAHARAJA SCINDIA OF GWALIOR.

List No. 1. Immovable properties in Gwalior and outside.

List No. 2. Investments, Immovable properties, Cash balances.

List No. 3. Chhatries and Temples etc.

List No. 4. Immovable properties to be given to the Madhya Bharat Government.

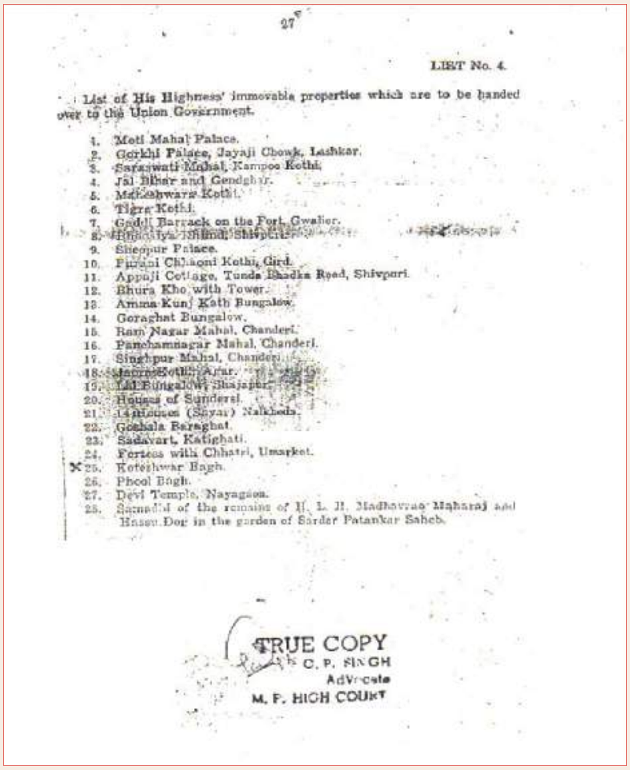

27

LIST No. 4.

List of His Highness' immovable properties which are to be handed over to the Union Government.

1. Moti Mahal Palace.
2. Gorkhi Palace, Jayaji Chowk, Lashkar.
3. Saraswati Mahal, Kampoo Kothi.
4. Jal Bihar and Gendghar.
5. Maheshwara Kothi.
6. Tigra Kothi.
7. Gaddi Barrack on the Fort, Gwalior.
8. [illegible], Shivpuri.
9. Sheopur Palace.
10. Purani Chhaoni Kothi, Gird.
11. Appaji Cottage, Tunda Bhadka Road, Shivpuri.
12. Bhura Kho with Tower.
13. Amma Kunj Kath Bungalow.
14. Goraghat Bungalow.
15. Ram Nagar Mahal, Chanderi.
16. Panchamnagar Mahal, Chanderi.
17. Singhpur Mahal, Chanderi.
18. [illegible] Kothi, Agar.
19. Lal Bungalow, Shajapur.
20. Houses of Sunderal.
21. 14 Houses (Shyar) Nalkheda.
22. Goshala Baraghat.
23. Sadavart, Katighati.
24. Fortess with Chhatri, Umarket.
25. Koteshwar Bagh.
26. Phool Bagh.
27. Devi Temple, Nayagaon.
28. Samadhi of the remains of H. L. H. Madhavrao Maharaj and Hasan Dor in the garden of Sardar Patankar Saheb.

TRUE COPY
C. P. SINGH
Advocate
M. P. HIGH COURT

सूची क्रमांक-4 में सिंधिया स्टेट की कुल 28 निजी सम्पत्ति की सूची भारत सरकार को सौंपी। सरकार सही जांच करें कि सिंधिया और उनके ट्रस्ट ने इन 28 निजी सम्पत्ति के बाद कितने शून्य बढ़ा लिये हैं उससे साबित हो जायेगा कि पूरे देश में इनसे बड़ा भू-माफिया कोई नहीं है

विभाग 11 फरवरी 1969 को एम.एस.सदाशिवम, उप सचिव, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को लिखा गया। इस पर में मध्यप्रदेश सरकार ने ग्वालियर कलेक्टर के माध्यम से संपत्ति के मानचित्र के आधार पर परीक्षण किया और यह पाया कि सूची एवं मानचित्रों में दर्शाये गये संपत्ति में काफी अंतर है। इस पर राज्य के विधि विभाग से भी राय मांगी गई, जिसकी राय निम्नानुसार है- प्रसंविदा, को Covenant के आर्टिकल 12 (2) व 12 (3) से स्पष्ट है कि शासक अपनी निजी संपत्ति की सूची इंवेंटरी, राज्य प्रमुख को 1 अगस्त, 1948 से पूर्व देगा। इसी संपत्ति के वाद विवाद आने पर उसका निराकरण हेतु भी प्रावधान है परंतु यह निराकरण के लिये रेफरेंस 1 जुलाई, 1949 के उपरांत नही किया जा सकता। इससे स्पष्ट है कि इंवेंटरी में जो जायदाद शासक की दर्ज है वही उसकी निजी संपत्ति होगी। इंवेंटरी के अलावा दूसरे कोई भी कंडिशंस पर शासक की निजी संपत्ति नही कही जा सकती। केन्द्रीय शासन के पत्र दिनांक 16/10/1968 से भी यह स्पष्ट है केवल स्वीकृत सूची के आधार पर शासक की निजी संपत्ति ठहराई जा सकती है। इस पत्र में यह भी उल्लेखित है। यदि स्वीकृत सूची में निजी संपत्ति का विवरण पर्याप्त न हो तो दिगर दस्तावेजी साक्ष्य का आधार केवल स्वीकृत सूची को समझने हेतु ही लिया जा सकता है, परंतु ऐसी सम्पत्ति जो स्वीकृत सूची में न हो वह दीगर अभिलेख में शामिल हो तथा शासक का उस पर कब्जा भी हो। उसे शासक की निजी संपत्ति नही कहा जा सकती।

और जयपुर के महाराजा भी। लॉर्ड कैनिंग ने क्रांति को दबाने में सहायक सभी राजाओं को थैंक्यू बोला था और इसी समय उन्हें ग्वालियर का महाराजा घोषित किया गया। इससे जाहिर होता है कि सिंधिया के बारे में लोक मान्यता सत्य है।

अमित शाह का शाही स्वागत

अमित शाह को ज्योतिरादित्य सिंधिया ने खिलाया था चाँदी की थाली में खाना

अभी कुछ दिन पहले केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ज्योतिरादित्य सिंधिया के बुलावे पर ग्वालियर के जय विलास पैलेस महल गए थे। इस शाही महल में गृहमंत्री को शाही भोज दिया गया था। हम समझ सकते है कि यह अमित शाह का यह शाही स्वागत सियासत से जुड़ा हुआ था क्योंकि इस शाही भोज में ज्योतिरादित्य सिंधिया की काफी महत्वाकांक्षाएं परोसी गई थी। इसे विडम्बना ही कहा जायेगा कि जिस परिवार पर गद्दारी का दाग लगा हो उस परिवार के शाही महल में देश की सबसे बड़ी पार्टी की सरकार के गृहमंत्री शाही भोजन कर रहे हैं। जबकि जनसंघ के पुरोधा वीर सावरकर ने इस परिवार के सदस्यों को कोबरा तक कहा था। सत्ता और सियासत में बीजेपी इतिहास को जान बूझकर अनदेखा कर रही है। जबकि दूसरी तरफ देश की आजादी में अपना राजपाट और जान गंवाने वाले वंशजों की पेंशन तक बंद की है।

लॉर्ड कैनिंग द्वारा सिंधिया को थैंक्यू बोलना

मालूम हो कि लॉर्ड कैनिंग ने तीन दरबार किए थे। पहला उस समय जब क्रांति की सुगबुगाहट शुरूहो गई थी और अंग्रेज देशी नरेशों को अपने साथ रखना चाहते थे। उस समय ग्वालियर से जयाजी राव सिंधिया उस दरबार में गए थे। वहां सिंधिया ने को अंग्रेजों के प्रति वफादारी की कसमें खाई थी। इसके अतिरिक्त कैप्टन मैक्फर्सन क्रांति के समय ग्वालियर में रेजीडेंट था, उसने अपनी डायरी में जयाजी राव द्वारा झांसी की

कैसे ज्योतिरादित्य सिंधिया ने गिराई कमलनाथ सरकार

खानदान की गद्दारी की परंपरा को बरकरार रखते हुए गिराई गई थी सरकार

2020 का साल ज्योतिरादित्य सिंधिया के लिए गद्दारी के नाम से जाना जाता है। इस साल ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कमलनाथ सरकार को गिरा दिया था और अपने चहेते कुछ मंत्रियों और विधायकों को लेकर बीजेपी से जा मिले। केवल 15 माह में ही कमलनाथ सरकार गिर गई। इस वाक्या के बाद एक बार फिर सिंधिया वंश पर गद्दारी करने का आरोप लगा। अपनी महत्वाकांक्षा के चलते सिंधिया ने यह कदम उठाया था। 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने मध्यप्रदेश में सरकार तो बना ली लेकिन काफी कोशिशों के बावजूद ज्योतिरादित्य सिंधिया सीएम नहीं बन सके। पार्टी ने कमलनाथ को प्रदेश की कमान सौंप दी। विधानसभा के छह महीने बाद ही लोकसभा चुनाव में मिली हार सिंधिया के लिए दूसरा बड़ा झटका साबित हुई। लोकसभा चुनाव में हार के बाद से ही बार-बार मांग करने के बावजूद सिंधिया को मध्यप्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष का पद नहीं मिला। उसके बाद राज्यसभा भेजे जाने को लेकर तकरार सामने आई। सिंधिया ने कमलनाथ सरकार के खिलाफ सड़कों पर उतरने की धमकी भी दी थी। सिंधिया ने नवंबर 2019 में कांग्रेस पार्टी के सभी पदों को छोड़कर दबाव बनाने की कोशिश की लेकिन उनकी यह कोशिश भी नाकाम रही। मध्यप्रदेश में कांग्रेस के कद्दावार नेता रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। ज्योतिरादित्य सिंधिया साल 2002 में पहली बार कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव जीतकर दिल्ली पहुंचे थे। 2020 में मध्यप्रदेश में कमलनाथ सरकार को बड़ा झटका लगा। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। सिंधिया ही भाजपा में शामिल हो गए। सिंधिया के साथ 06 राज्यमंत्री सहित 19 कांग्रेसी विधायकों ने भी विधानसभा से इस्तीफा दे दिया। 2001 में पिता की मौत के बाद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कांग्रेस में पिता की जगह ली। 2002 में जब गुना सीट पर उपचुनाव हुए तो ज्योतिरादित्य सिंधिया सांसद चुने गए। पहली जीत के बाद से 2019 तक ज्योतिरादित्य सिंधिया कभी चुनाव नहीं हारे। लेकिन 2019 के लोकसभा चुनाव में कभी उनके ही सहयोगी रहे कृष्ण पाल सिंह यादव ने उन्हें हरा दिया। आज वह भले ही बीजेपी में शामिल हो गये हैं लेकिन उन्हें वह सम्मान नहीं मिल रहा है जो कभी कांग्रेस में मिल रहा था। कांग्रेस में सिंधिया को प्रदेश में महत्वपूर्ण नेता के रूप में देखा जाता था।

रानी के विरूद्ध मोर्चा बनाने की बात लिखी है। जयाजी राव ने अपने खजांची अमरचंद बांठिया को इसलिए फांसी दी थी क्योंकि उसने गंगाजली कोष से कुछ धन क्रांतिकारियों को दिया था। ये सब बातें जयाजी राव को अंग्रेजों का मित्र कहे जाने

दगाबाजी और मौकापरस्ती का दूसरा नाम है सिंधिया राजवंश

की पुष्टि करती हैं।

कुत्ते की समाधि की भूमि को सिंधिया परिवार ने बेच डाला

भारत के आजाद होने के बाद मध्य भारत गजट में दिनांक 30 अक्टूबर 1948 में सिंधिया परिवार ने संपत्तियों की जो

ज्योतिरादित्य सिंधिया की तरह राजमाता सिंधिया ने भी गिराई थी कांग्रेस की सरकार

दरअसल 60 के दशक में ग्वालियर की राजमाता विजयाराजे सिंधिया कांग्रेस में हुआ करतीं थीं। मध्यप्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी और द्वारका प्रसाद मिश्र मुख्यमंत्री थे। एक दिन एक मीटिंग में डीपी मिश्रा ने राजमाता को इंतजार करा दिया। उस समय हुए एक छात्र आंदोलन के कारण विजयाराजे और सीएम के बीच मनमुटाव चल रहा था। इस इंतजार ने उस मनमुटाव में आग में घी की तरह काम किया और राजमाता इसे अपना अपमान मान बैठीं। वहां से जब राजमाता लौटीं तो उन्होंने इस अपमान का बदला लेने का ठान लिया और कांग्रेस सरकार के गिराने का भी। विजयाराजे कांग्रेस छोड़ जनसंघ से जा मिलीं और डीपी मिश्रा सरकार को गिराने की तैयारियों में जुट गई। राजमाता ने इसके लिए कांग्रेस के 36 विधायकों को तोड़कर अपनी ओर मिला लिया। इसके लिए राजमाता पर पैसे देने का भी आरोप लगा और अपहरण का भी। क्षितिज का विस्तार नाम की किताब में मध्यप्रदेश के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष और मंत्री डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल लिखते हैं कि तब बजट सत्र चल रहा था। वित्तमंत्री कुंजीलाल दुबे ने बजट पेश कर दिया था और उस पर चर्चा चल रही थी। इस दौरान जब शिक्षा पर चर्चा होने लगी तो शिक्षा मंत्री परमानंद भाई पटेल ने लंबा भाषण दिया। इसके बाद मतदान होना था, तब पता चला कि 36 विधायक गायब हैं। जिसके बाद सारी कहानी सामने आ गई। खबर मिली की 36 विधायकों को राजमाता और जनसंघ ने अपहरण कर लिया है और अज्ञात स्थान पर उन्हें रखा गया है। किताब के अनुसार- गोविंद नारायण सिंह जो बाद में मुख्यमंत्री बने थे, सीढ़ियों पर नोटों से भरा एक सूटकेस लेकर बैठे थे, वो एक व्यक्ति को रोकने की कोशिश कर रहे थे। भागने वाला शख्स एक विधायक था, जो गोविंद नारायण से पैसे नहीं लेना चाहता था। यह घटना बताती है कि उस समय विधायकों की कीमत लगाई जा रही थी। इस घटना को वरिष्ठ पत्रकार दीपक तिवारी ने अपनी किताब राजनीतिनामा मध्यप्रदेश में विस्तार से वर्णित किया है। इन विधायकों को दिल्ली ले जाने से पहले राजमाता ने इम्पीरियल सेबरे होटल में पार्टी दी थी। इसी होटल में देर रात तक विधायकों को तोड़ने की रणनीति गोविंद नारायण सिंह के साथ बनती रही। जब विधायकों की संख्या 36 हो गई तो राजमाता ने उन्हें दो गोपनीय स्थानों पर रखा। उन्होंने विधायकों से कहा- खाना-पीना जो चाहिए वो मिलेगा, यहीं रहो। मैं ग्वालियर से बस मंगवा रही हूं, बाहर खतरा है।

श्रीमंत विजयाराजे सिंधिया

म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री डी.पी. मिश्रा

लिस्ट सरकार को सौंपी थी, उस लिस्ट में वफादार कुत्ते की समाधि की भूमि का जिक्र नहीं था। बावजूद उसके सिंधिया परिवार पिछले कई दशक से यह समाधि की भूमि पर कब्जा करने पर उतारू है। शासकीय तौर पर कई बार हार मानने के बाद बताया जा रहा है कि ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इसे फिर अपने ट्रस्ट के नाम करवा लिया है।

अवसरवादी राजनीति करना सिंधिया राजवंश की पुस्तैनी परंपरा

जिस कुत्ते हुस्सू की बात हो रही है, वह माधराव सिंधिया प्रथम का सबसे वफादार कुत्ता था। हुजु का मालिक के प्रति लगाव ऐसा था कि जब माधराव सिंधिया प्रथम की

अगर झाँसी मध्यप्रदेश में होती तो सिंधिया वंश की राजनीति कभी नहीं चमकती

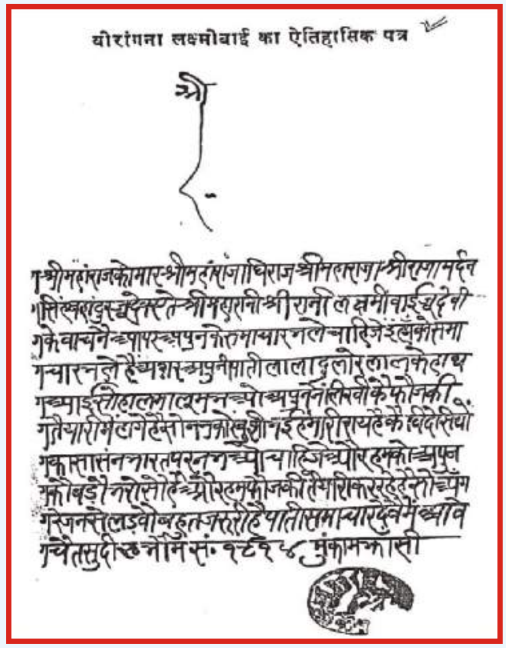
वीरांगना लक्ष्मीबाई का ऐतिहासिक पत्र

यह वह पत्र है जो झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने राजा मर्दन सिंह को लिखा था, जिसमें रानी लक्ष्मीबाई ने लिखा कि हमें अपने लिए नहीं लड़ना है, देश के लिए लड़ना है। विदेशियों का शासन नहीं होना चाहिए।

हम भारत में हमेशा से ये देखते आये हैं कि हमारी जनता की भावनाएँ चाहे वो प्रेम हो या सम्मान पीढ़ियों तक चलती हैं। परिवार का कोई सिद्धांत को सम्मान देता है तो उस परिवार के दूसरे सदस्य, रिश्तेदार, दोस्त और परिचित सभी उसी विचार को अपना लेते हैं। लेकिन यह सिर्फ़ प्रेम और सम्मान तक सीमित नहीं है। अगर इस देश की जनता किसी से नफ़रत करती है तो 158 साल भी उस नफ़रत को कम नहीं कर पाये हैं। यहाँ हम बात कर रहे हैं हिंदुस्तान के उत्तर प्रदेश के महान नगर झाँसी की। एक तरफ़ झाँसी के लोगो में अपनी रानी लक्ष्मीबाई और उनके परिवार के लिए असीम प्रेम और सम्मान है। वही दूसरी तरफ़ सिंधिया परिवार के लिए इतनी घृणा की वो सिंधिया परिवार के किसी शख्स के कदम अपनी झाँसी पर बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। इसे सिर्फ़ किस्मत और संयोग कह सकते हैं कि झाँसी शहर उत्तर प्रदेश में चला गया। अगर यह मध्यप्रदेश में होता तो सिंधिया परिवार के लिए झाँसीवासियों की नफ़्रत संक्रामक रोग की तरह फैल कर संपूर्ण चंबल को अपनी गिरफ्त में ले लेता और आज जो ज्योतिरादित्य सिंधिया प्रदेश और देश की राजनीति में अपने कदम जमा कर बैठे हैं। उन्हें अंगूठा तक रखने की जगह नहीं मिल पाती। राजनेता को समाज और जनता बनाती है और यही जनता अगर किसी नेता को अपने देश की गुलामी के 100 साल और अपनी बहादुर और देशप्रेम वीरांगना की मृत्यु का कुसूरवार माने तो क्या वो देश के राजनीति में कोई भूमिका निभा सकता है। झांसी का एक वाक्या भी है। जब तत्कालीन रेलमंत्री माधवराव सिंधिया किसी कार्यक्रम में झांसी आये थे तो उन्हें रेल्वे स्टेशन में उतरने नहीं दिया गया था और विरोध प्रदर्शन के रूप में काले झंडे दिखाए थे। इससे ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि झांसी के लोग सिंधिया परिवार से कितनी नफरत करते हैं।

तबीयत बिगड़ना शुरू हुई तो हुजु ने खाना-पीना छोड़ दिया था। वहीं जब सिंधिया प्रथम का पेरिस में निधन हुआ तो यहां ग्वालियर में हस्सू ने भी प्राण त्याग दिए। लिहाजा हस्सू की वफादारी और प्रेम को देखते हुए सिंधिया प्रथम के बेटे जीवाजीराव सिंधिया ने हस्सू की समाधि बनावा दी और उन्होंने आदेश दिया कि जिस जगह पर हस्सू ने प्राण त्यागे हैं, वहां पर सिंधिया प्रथम के अस्थि कलश को स्थापित किया जाए। इस आदेश के बाद कुत्ते की समाधि बनाई गई। और वहीं पर माधवराव सिंधिया प्रथम की

झांसी के महाराष्ट्र गणेश मंदिर में हुआ था रानी लक्ष्मीबाई का विवाह

महाराष्ट्र गणेश मंदिर शहर में गणेश बाजार में स्थित है। पेशवा महाराज ने अपने राज्यकाल में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया। गणेश मंदिर की निर्माण शैली से ऐसा प्रतीत होता है कि सूबेदार नारोशंकर ने ही अपने शासनकाल में इस मंदिर का निर्माण किया। प्राचीन काल में पर्दा प्रथा चलते समय मंदिर की दूसरी मंजिल पर महिलाओं के लिए विशेष बैठने के लिए विशेष झरोखे की भी व्यवस्था है। मंदिर में स्थित भगवान गजानन की मूर्ति सफेद संगमरमर की है जो अत्यंत मनमोहक है- गणेश जी की मूर्ति के साथ ऋद्धि-सिद्धि की मूर्ति भी विराजमान है। महारानी लक्ष्मीबाई व राजा गंगाधर राव के विवाह संस्कार में से एक संस्कार श्रीमंत पूजन इसी सभामंडप में हुआ था। वर्तमान में मंदिर में ही मनुबाई छबीली बालक मंदिर नामक शिक्षण संस्था आठवीं कक्षा तक बच्चों को शिक्षित करने का कार्य करती है। मंदिर में गणेश उत्सव, समर्थ रामदास जयंती, शारदा उत्सव व अन्य धार्मिक व सांस्कृतिक समारोह समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। इस प्रकार गणेश मंदिर बहुउद्देश्यों की पूर्ति करता है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार गंगाधर राव ने किया था।

छतरी बनाई गई। दिवंगत महाराज की अंतिम इच्छा थी कि उनके शव को उनके वफादार कुत्ते के पास ले जाया जाए। लिहाजा फ्रांस से जब उनकी उनके अस्थि कलश ग्वालियर पहुंचे तो उन्हें कुछ देर के लिए हस्सू की समाधि पर भी ले जाकर रखा गया। यहां इसका भी स्मारक बनाकर इसमें इस पूरे वृतांत का उल्लेख किया गया है। यह समाधि शहर की सिटी सेंटर इलाके में स्थित कॉलोनी शारदा विहार में है, इसमें सार्वजनिक पार्क है क्योंकि टाउन एण्ड कंट्री प्लानिंग और ग्वालियर विकास प्राधिकरण

इनका कहना है

रानी लक्ष्मीबाई और राजा गंगाधर राव की वैवाहिक वर्षगांठ पर निकाली जाती है शोभायात्रा

महाराष्ट्र गणेश मंदिर कमेटी, झांसी ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और झांसी नरेश श्रीमंत गंगाधर राव का विवाह उत्सव मनाना प्रारंभ किया। इस उत्सव में राजा और रानी की भव्य स्वरूपों में भव्य शोभा यात्रा प्रतिवर्ष निकाली जाती है। इसका उददेश्य है कि आज की युवा पीढ़ी इस ऐतिहासिक तिथि से भी अवगत हो सके। राजा-रानी की 174वीं वर्षगांठ से यह शोभायात्रा निकाली जा रही है। इस वर्ष 181वीं वर्षगांठ थी। हमें इस पर गर्व और अभिमान है। इस यात्रा में छोटे-छोटे बच्चे शामिल होते हैं। इसके साथ ही राजा-रानी के परिवार वालों को बग्गी में बिठाया जाता है और घुमाया जाता है।

-गजानन धनवालकर, सचिव, महाराष्ट्र गणेश मंदिर कमेटी, झांसी

महाराष्ट्र गणेश मंदिर कमेटी, झांसी के सदस्यों से बातचीत करती हुई जगत विजन पत्रिका की संपादक विजया पाठक

देश में वो ही स्टेट बची हैं जिन्होंने अंग्रेजों से समझौता किया था

यह बात भी सत्य है कि आज देश के अंदर वो ही स्टेट जीवित या बची हैं जिन्होंने अंग्रेजों के साथ समझौता किया था। उस समय जिन राजाओं या स्टेट प्रमुखों ने अंग्रेजों का साथ नहीं दिया या समझौता नहीं किया वह परेशान रहे। रानी लक्ष्मीबाई के परिवार वाले बहुत बुरी स्थिति में रहे। सरकारों ने उनकी कुछ भी मदद नहीं की। आज भी रानी लक्ष्मीबाई के जैसे कई स्टेट के वंशज परेशान हैं या बहुत खराब स्थिति में जीवन यापन कर रहे हैं। जबकि इन परिवार के वंशजों ने देश की आजादी में जितना योगदान दिया है वह अतुल्यनीय है। सरकारों को ऐसे वीर पुरूषों या महिला वीरांगनाओं के वंशजों की सहायता करनी चाहिए। उनके जीवन को बेहतर बनाना चाहिए।

-राकेश पाठक, प्रबंधक, महाराज शिक्षण लोकमान्य तिलक कन्या इंटर कॉलेज, झांसी

झांसी के लोगों में सिंधिया वंश के प्रति श्रद्धाभाव नही है

झांसीवासी सिंधिया राजवंश के प्रति श्रद्धाभाव नहीं रखते हैं। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। यही वजह है कि झांसी में सिंधिया वंश के किसी भी राजनेता की पब्लिक मीटिंग नहीं होती है। क्योंकि यहां के लोग सिंधिया वंश के लोगों को उस नजरिये से नही देखते हैं जैसे सिंधिया वंश के राजनेता देखना चाहते हैं। यहां तक कि विजयाराजे सिंधिया भी झांसी नहीं आती थी। वे दतिया तक तो आती थी लेकिन झांसी नहीं आती थी। यहां तक कि एक बार स्व. माधवराव सिंधिया एक कार्यक्रम में झांसी आने वाले थे तो उन्हें झांसीवासियों ने रेल्वे स्टेशन पर ही नहीं उतरने दिया था। झांसीवासियों का सिंधिया परिवार के प्रति यह दुर्व्यवहार रानी लक्ष्मीबाई के साथ सिंधिया परिवार द्वारा की गई गददारी है।

भास्कर टेंगसे, अध्यक्ष, महाराष्ट्रीय समिति, झांसी

द्वारा पारित नक्शे, में यह जमीन नजूल की बताई गई और इसे पार्क के लिए आरक्षित किया गया था। लेकिन कई सालों बाद अचानक पार्क पर कुछ लोग कब्जा करने पहुंचे तो लोगों को पता चला कि इस पार्क को सिंधिया परिवार ने बेच दिया। हालांकि तब सिंधिया कांग्रेस में थे और प्रदेश में बीजेपी की सरकार थी तो उसके नेताओं ने मदद कर पार्क पर कब्जा होने से रोका और कॉलोनी वालों ने रजिस्ट्री रद्द करने की कार्यवाही की।

शिलालेख पर उल्लेख- इस

सियासत के मौकापरस्त शूरवीर ज्योतिरादित्य सिंधिया

सिंधिया परिवार की एक परंपरा काफी सुर्खियों बटोरती है। यह परंपरा है राजनीति में किसी एक पार्टी में न टिक पाना। राजमाता विजयराजे सिंधिया, माधवराव सिंधिया और ज्योतिरादित्य सिंधिया। तीन पीढ़ियों के तीनों नेताओं ने राजनीतिक दल बदले। मौजूदा समय में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी अपनी खानदानी परंपरा को बरकरार रखा और पाला बदला। इन्हें सियासत का मौका परस्त शूरवीर कहा जाए तो गलत भी नही होगा। खुद को महाराजा, श्रीमंत कहलवाना तो सिंधिया पसंद करते हैं, लेकिन अपने स्वार्थ और लाभ के लिए शूरवीरता मौकापरस्ती में बदल जाती है।

समाधि पर एक शिलालेख लगा हुआ है। इस पर लिखा है कि ग्वालियर रियासत के तत्कालीन महाराजा माधवराव सिंधिया प्रथम जब यूरोप गए, तब अपनी महारानी को हस्सू डॉगी दे गए थे। हस्सू अपना ज्यादा समय अपने केयर टेकर मास्टर के साथ बिताता। महारानी चूंकि राजकाज के काम भी देखती। इसलिए दिनभर मास्टर के साथ ही हस्सू रहता।

अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी रजधानी थी
बुंदेले हर बोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी...

सुभद्रा कुमारी चौहान की झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की शौर्यगाथा पर लिखी गयी मशहूर कविता की इन पंक्तियों को किसने नहीं सुना होगा। सिर्फ 29 साल की उम्र में 18 जून 1858 को स्वतंत्रता के लिए बलिदान हो जाने वाली रानी लक्ष्मीबाई का नाम भारतीयों के मन में गौरवभाव जगाता है। लेकिन इस कविता की अगली पंक्तियों में सिंधिया के अंग्रेजों के समर्थन की वो गाथा भी लिखी है, जिसने 1857 की क्रांति को असफल किया। रानी लक्ष्मीबाई को घेरने गये जनरल ह्यो रोज़ और दूसरे अफ़्सरों के बीच हुए पत्रव्यवहार में साफ़ लिखा है- "अगर सिंधिया ने बग़ावत का साथ दिया तो अंग्रेज़ों को बोरिया-बिस्तर बाँधना पड़ेगा!"

दल बदलू और भ्रष्टाचारी सिंधिया से बीजेपी के अन्य नेता भी बनाते हैं दूरी

कांग्रेस से बीजेपी में आये केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से मध्यप्रदेश के बीजेपी नेताओं के साथ-साथ अन्य प्रदेशों के बीजेपी नेता भी दूरी बनाकर चलते हैं। एक वाक्या उत्तरप्रदेश का है। योगी आदित्यनाथ के शपथ ग्रहण समारोह का भव्य आयोजन लखनऊ के इकाना स्टेडियम में रखा गया। समारोह के लिए सभी भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्रियों को न्यौता भेजा गया। शपथ ग्रहण समारोह में लगभग आमंत्रित अधिकत्तर लोग मौजूद रहे। लेकिन इस पूरे समारोह में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को निमंत्रण तक नहीं भेजा था।

यह है न्यौता न भेजने का बड़ा कारण- ज्योतिरादित्य सिंधिया की छवि एक धोखेबाज, दलबदलू और भ्रष्टाचारी नेता की है। उन्होंने कमलनाथ सरकार के समय अपने चहेतों को पहले तो मंत्री बनवाया और उसके बाद प्रदेश में इतना भ्रष्टाचार का आतंक फैलाया कि मुख्यमंत्री कमलनाथ ने उनसे दूरी बनाना ही बेहतर समझा। ज्योतिरादित्य सिंधिया सत्ता के लालच में आकर कभी भी पार्टी छोड़ दूसरी पार्टी ज्वॉइन करने के लिए खास जाने जाते हैं। ऐसे में योगी आदित्यनाथ ये बिल्कुल नहीं चाहते थे कि उत्तर प्रदेश के उनके मंत्रीमंडल के सदस्यों के साथ ज्योतिरादित्य सिंधिया का मेलजोल बढ़े और उनके मंत्री भी सिंधिया जैसी जिद पर अड़कर पार्टी छोड़ने जैसा कदम उठाने का कार्य करें। यही वजह है कि योगी आदित्यनाथ और उनकी सरकार ने सिंधिया को इस पूरे शपथ ग्रहण समारोह से दूर रखना ही बेहतर समझा।

धीरे-धीरे समय बीतता गया। बात 28 नवंबर 1930 की है, जब हुस्सू के मास्टर की अचानक मृत्यु हो गई। अपने मास्टर की मृत्यु का सदमा हस्सू बर्दाश्त नहीं कर सका। वो दिनभर रोता रहा और शाम को उसने भी अपने प्राण त्याग दिए।

इन्वेंटरी है कुत्ते की समाधि- कुत्ते की समाधि इन्वेंटरी में दर्ज है। यह बेशकीमती जमीन है। जिसे सरकारी अफसरों की मदद से फर्जी दस्तावेजों के जरिए सिंधिया ट्रस्ट ने बेच दिया है।

यह है राजस्व रिकॉर्ड- यह समाधि ग्राम महलगांव तहसील ग्वालियर के सर्वे. 916 रकबा 293 (1 बीघा 8 बिस्वा) सन् 1996 तक राजस्व अभिलेखों में राजस्व

सिंधिया निकम्मा और नामर्द राजा

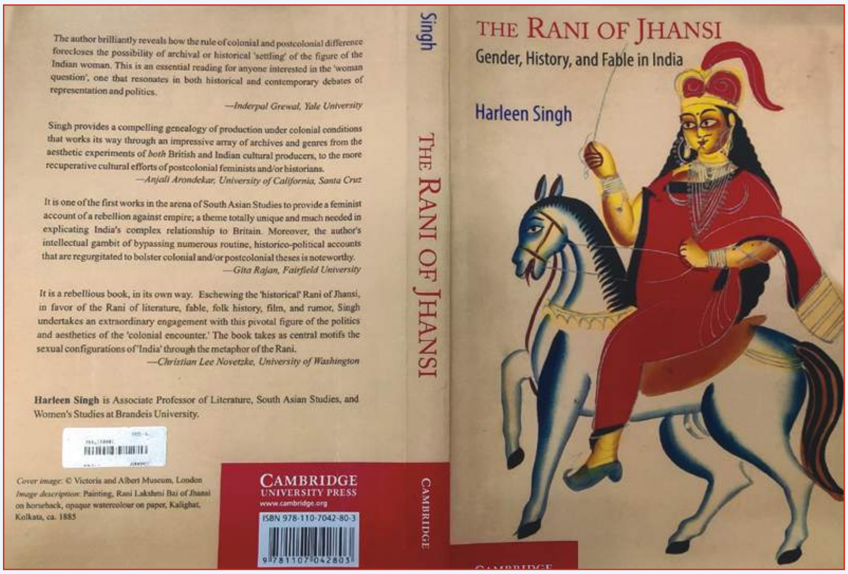

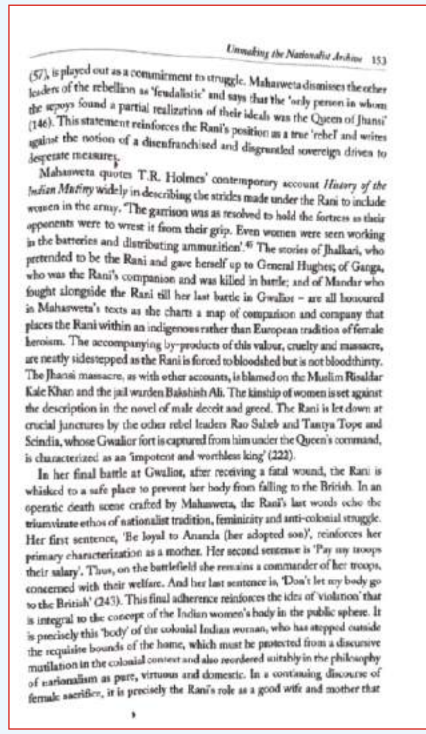

Unmaking the Nationalist Archive 153

(57), is played out as a commitment to struggle. Mahasweta dismisses the other leaders of the rebellion as 'feudalistic' and says that the 'only person in whom the sepoys found a partial realization of their ideals was the Queen of Jhansi' (146). This statement reinforces the Rani's position as a true 'rebel' and writes against the notion of a disenfranchised and disgruntled sovereign driven to desperate measures.

Mahasweta quotes T.R. Holmes' contemporary account *History of the Indian Mutiny* widely in describing the strides made under the Rani to include women in the army. 'The garrison was as resolved to hold the fortress as their opponents were to wrest it from their grip. Even women were seen working in the batteries and distributing ammunition'.[45] The stories of Jhalkari, who pretended to be the Rani and gave herself up to General Hughes; of Ganga, who was the Rani's companion and was killed in battle; and of Mandar who fought alongside the Rani till her last battle in Gwalior – are all honoured in Mahasweta's texts as she charts a map of comparison and company that places the Rani within an indigenous rather than European tradition of female heroism. The accompanying by-products of this valour, cruelty and massacre, are neatly sidestepped as the Rani is forced to bloodshed but is not bloodthirsty. The Jhansi massacre, as with other accounts, is blamed on the Muslim Risaldar Kale Khan and the jail warden Bakshish Ali. The kinship of women is set against the description in the novel of male deceit and greed. The Rani is let down at crucial junctures by the other rebel leaders Rao Saheb and Tantya Tope and Scindia, whose Gwalior fort is captured from him under the Queen's command, is characterized as an 'impotent and worthless king' (222).

In her final battle at Gwalior, after receiving a fatal wound, the Rani is whisked to a safe place to prevent her body from falling to the British. In an operatic death scene crafted by Mahasweta, the Rani's last words echo the triumvirate ethos of nationalist tradition, femininity and anti-colonial struggle. Her first sentence, 'Be loyal to Ananda (her adopted son)', reinforces her primary characterization as a mother. Her second sentence is 'Pay my troops their salary'. Thus, on the battlefield she remains a commander of her troops, concerned with their welfare. And her last sentence is, 'Don't let my body go to the British' (243). This final adherence reinforces the idea of 'violation' that is integral to the concept of the Indian women's body in the public sphere. It is precisely this 'body' of the colonial Indian woman, who has stepped outside the requisite bounds of the home, which must be protected from a discursive mutilation in the colonial context and also reordered suitably in the philosophy of nationalism as pure, virtuous and domestic. In a continuing discourse of female sacrifice, it is precisely the Rani's role as a good wife and mother that

हरलीन सिंह ने अपनी किताब द रानी ऑफ झांसी, जेंडर, हिस्ट्री एंड फेबल इन इंडिया के भाग 5 के पुष्ठ क्रमांक 153 में लिखा कि "Scindia, whose Gwalior fort is captured under the Queen's command, is characterized as an "impotent and worthless king" हिंदी में जिसका मतलब है कि सिंधिया के ग्वालियर किले पर रानी के आदेश पर उससे छीन लिया गया, सिंधिया की विशेषता का जिक्र करते हुए लेखिका हरलीन सिंह ने अपनी किताब में उन्हें नामर्द एवं निकम्मा राजा कहा।

विभाग, कदीम, आबादी, पटोर नजूल के तौर पर दर्ज थी। सन् 1996 के पश्चात् कूटरचित दस्तावेजों के माध्यम से अवैधानिक तरीकों से तहसीलदार, ग्वालियर द्वारा बिना किसी वैधानिक आवेदन, बिना किसी प्रकरण दायर किये और शासन का पक्ष सुने स्व. माधवराव सिंधिया के नाम पर नामांतरित कर दी गई। इस अवैध कार्य में तत्कालीन तहसीलदार ने माननीय उच्च न्यायालय, ग्वालियर की याचिका क्रमांक-61,62,63,64/1969 के आदेश दिनांक 08 सितम्बर 1981 के एक आदेश की भी अनुचित अवैधानिक व्याख्या का दुरूपयोग करते हुए इस काम को अंजाम दिया। क्योंकि तहसीलदार न्यायालय को यह अधिकार न होकर प्रकरण लैण्ड रेवेन्यू कोड की धारा-57(2) के तहत यह अधिकार उपखंड अधिकारी एस.डी.ओ. को प्रदत्त है? इस नामांतरण के बाद माधवीराजे सिंधिया ने

तमाम इतिहासकारों और लेखकों ने सिंधिया राजवंश को माना है अवसरवादी

देवस्थान सिंधिया ट्रस्ट है असंवैधानिक?

भारत के इतिहास में शायद सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट ही एक ऐसा ट्रस्ट है जिसका रजिस्ट्रेशन दो जगह से है। सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन 1950 का बाम्बे पब्लिक ट्रस्ट एक्ट में नम्बर ए-931 पूना के नाम से 5 फरवरी, 1958 को हुआ था। शुरूआत में देवस्थान ट्रस्ट की कुछ संपत्ति पंडरपुर में थी। इसके बाद 14/9/1992 में रजिस्ट्रेशन संख्या 1 अजमेर 1992 के नाम से राजस्थान सार्वजनीन प्रन्यास अधिनियम 1959 में सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट पुनः रजिस्टर्ड किया गया। एक ही ट्रस्ट को दो जगह से रजिस्ट्रेशन कानूनी दायरे में अपराध की श्रेणी में आता है। इसके बाद भी संवित सरकार में देवस्थान ट्रस्ट को रजिस्ट्रेशन से मुक्त करा दिया गया था। पर श्यामा चरण शुक्ल की सरकार ने 1970 में इस आदेश को निरस्त कर दिया। इसके बाद सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट हाईकोर्ट में रिट दाखिल की, जिसमें जस्टिस रैना और जस्टिस तारे द्वारा इनकी रिट को निरस्त कर दिया गया। कुल मिलाकर सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट का निर्माण ही गलत नियत से हुआ है। वर्तमान में देवस्थान सिंधिया ट्रस्ट के चेयरमेन ज्योतिरादित्य सिंधिया हैं।

सेवानिवृत्त कमिश्नर ओमप्रकाश साराश्वत ने एक याचिका दायर करके जानकारी मांगी थी कि सिंधिया ट्रस्ट ग्वालियर में है कि नही। जानकारी में आया था कि सिंधिया ट्रस्ट ग्वालियर में नही है। जो ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन जिस प्रदेश में और जिस जिले में रजिस्ट्रर होता है, उसका कार्य क्षेत्र वही होता है। 12 जुलाई 1968 में राजमाता सिंधिया जो सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट की चेयरमेन भी थी। राजमाता ने गलत जानकारी देकर कहा था कि हमारी संपत्ति दूसरे प्रदेश में भी है। हमें मध्यप्रदेश ट्रस्ट के अंतर्गत कार्य करने की छूट दी जाए। राजमाता सिंधिया ने पीआईएल पहले हाईकोर्ट और बाद में सुप्रीम कोर्ट में दायर की थी। विवेक अग्रवाल जो हाईकोर्ट के जज थे ग्वालियर में उन्होंने आदेश में कहा था कि आपका ट्रस्ट अगर प्रदेश में रजिस्टर्ड है तो इसका यहां कोई औचित्य नही है और याचिका खारिज कर दी। फिर उन्हों ने पीआईएल सुप्रीम कोर्ट में लगाई।

अन्य ट्रस्ट-

- पदमा राजे सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- उषा राजे सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- वसुंधरा राजे सिंधिया पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- कमला राजे सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- यशोधरा राजे सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- जय विलास ट्रस्ट, सिंधिया पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- जयाजी राव सिंधिया पब्लिक, वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- जनकोजी राव ट्रस्ट सिंधिया पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- ज्योतिरादित्य सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- गोरखी ट्रस्ट, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- चिनकोजी राजे सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- रंगमहल ट्रस्ट सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- मून्न महल ट्रस्ट, सिंधिया पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- महादजी सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्डा चेरिटेबल ट्रस्ट
- सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट, सिंधिया पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- मोतोश्री गजराजे, सिंधिया पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- महारानी जीयाजी ट्रस्ट, सिंधिया पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- गजराजा सिंधिया, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- समुद्र महल बाम्बे, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- सरया राजे धर्मशाला, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट
- सिंधिया कलर एण्ड डबलाय मेंट ट्रस्ट, पब्लिक वेलफेयर एण्ड चेरिटेबल ट्रस्ट

वर्तमान में जमीनों का गोरखधंधा देवस्थान सिंधिया ट्रस्ट के माध्यम से ही हो रहा है। वह चाहे माहोरकर का बाड़ा जमीन घोटाला हो, भूतेश्वर महादेव मंदिर जमीन का मामला हो या अन्य जमीनों के मामले हों, सभी के सभी इस ट्रस्ट के माध्यम से

अपने पुत्र ज्योतिरादित्य सिंधिया व पुत्री चित्रांगदा राजे की सहमति के साथ इस भूमि का विक्रय कर दिया।

महाराजा ग्वालियर की ओर से उक्त सर्वे नं. के संबंध में यह बताया गया है कि यह भूमि उनकी व्यक्तिगत संपत्ति है।

देवस्थान सिंधिया ट्रस्ट से संबंधित दस्तावेज

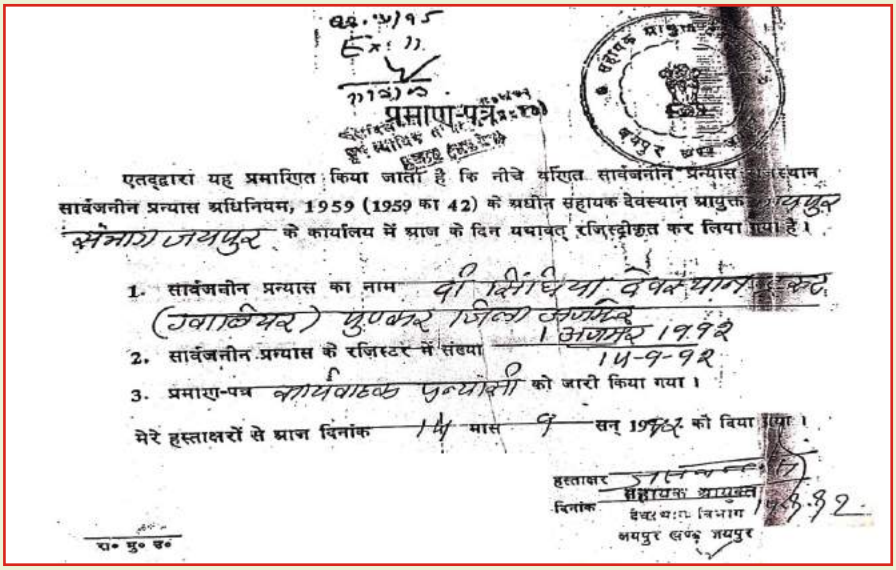

प्रमाण-पत्र

एतद्द्वारा यह प्रमाणित किया जाता है कि नीचे वर्णित सार्वजनीन प्रन्यास राजस्थान सार्वजनीन प्रन्यास अधिनियम, 1959 (1959 का 42) के अधीन सहायक देवस्थान आयुक्त जयपुर संभाग जयपुर के कार्यालय में आज के दिन यथावत् रजिस्ट्रीकृत कर लिया गया है।

1. सार्वजनीन प्रन्यास का नाम दी सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट (ग्वालियर) पुष्कर जिला अजमेर
2. सार्वजनीन प्रन्यास के रजिस्टर में संख्या 1 अजमेर 1992 14-9-92
3. प्रमाण-पत्र कार्यवाहक प्रन्यासी को जारी किया गया।

मेरे हस्ताक्षरों से आज दिनांक 14 मास 9 सन् 1992 को दिया गया।

हस्ताक्षर [illegible]
सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग
जयपुर खण्ड जयपुर

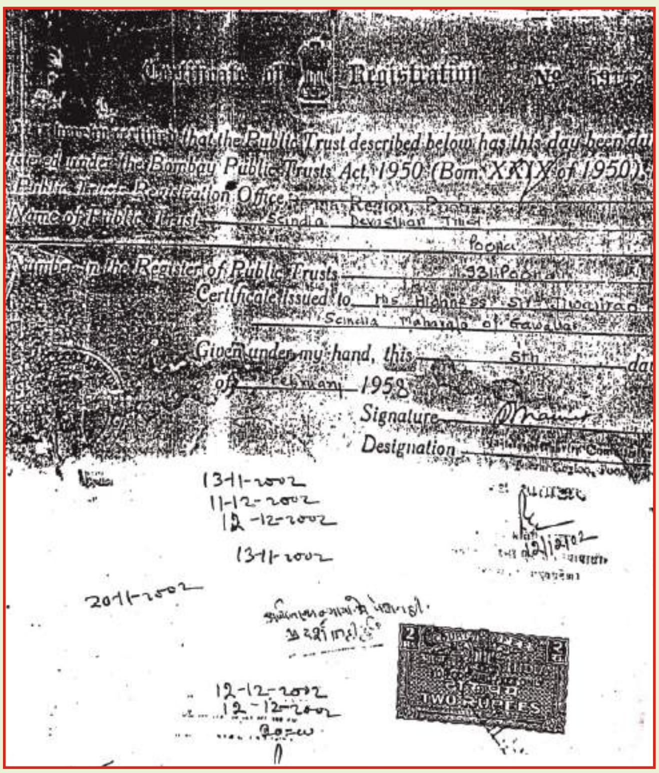

Certificate of Registration No. [illegible]

I hereby certify that the Public Trust described below has this day been duly registered under the Bombay Public Trusts Act, 1950 (Bom. XXIX of 1950) [illegible] Public Trusts Registration Office, [illegible] Region, Poona

Name of Public Trust: Scindia Devasthan Trust, Poona

Number in the Register of Public Trusts: 931 Poona

Certificate issued to: His Highness [illegible] Scindia Maharaja of Gwalior

Given under my hand, this 5th day of February 1958

Signature [illegible]

Designation [illegible]

सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट देश का पहला फर्जी ट्रस्ट होगा जिसके दो अलग राज्यों में रजिस्ट्रेशन दर्ज है। इससे यह सिद्ध होता है कि सिंधिया देवस्थान ट्रस्ट की बुनियाद ही गलत है। सरकार को इस ट्रस्ट को तुरंत भंग कर इसकी सारी सम्पत्ति राजसात की जाना चाहिए। मध्यप्रदेश के बाहर रजिस्टर्ड संस्था होते हुए भी बेधड़क तरीके से मध्यप्रदेश में

हो रहा है। हम कह सकते हैं कि जिस भूमि पर सिंधिया की गिद्ध नज़र पड़ रही है उस जमीन को सिंधिया ट्रस्ट में शामिल करा लेते हैं। यह कार्य पिछले कुछ महिनों में ज्यादा फल-फूल रहा है।

सन 1968 से 2005 तक रजिस्टर्ड सिंधिया परिवार के ट्रस्टों की सूची- अनुविभागीय कार्यालय ग्वालियर में संधारित अभिलेख अनुसार सूची में उल्लेखित ट्रस्टों के नाम से कुल- 4 ट्रस्ट न्यायालय से पंजीकृत हैं। जिनका विवरण निम्नानुसार है-

■ महादजी चेरिटेबिल ट्रस्ट, जय विलास परिसर ग्वालियर के नाम से प्र.क्रं. 12/2002-03/बी-13 (1) आदेश दिनांक 3.11.2003 से पंजीयन क्रमांक 171 ।

■ रंगमहल चेरिटेबिल ट्रस्ट, जय विलास परिसर ग्वालियर के नाम से प्र.कं. 13/2002-03/बी-13 (1) आदेश दिनांक 3.11.2003 से पंजीयन क्रमांक171 ।

■ ज्योतिरादित्य चेरिटेबिल ट्रस्ट, जय विलास परिसर ग्वालियर के नाम से प्र.कं. 14/2002-03/बी-13 (1) आदेश दिनांक 3.11.2003 से पंजीयन क्रमांक 171 ।

■ गोरखी चेरिटेबिल ट्रस्ट, जय विलास परिसर ग्वालियर के नाम से प्र.कं.15/2002-03/बी-13 (1) आदेश दिनांक 3.11.2003 से पंजीयन क्रमांक 171 ।

हकीकत यह है कि भारत सरकार से हुये समझौते के अनुसार महाराजा ग्वालियर की जो व्यक्तिगत पूर्ण स्वामित्व व उपयोग की जो संपत्ति थी, जिसकी चार सूचियां प्रकाशित हुई उसके अनुसार उस सूची 4 के अनुक्रम 28 पर इस भूमि का विवरण/

क्या जायेगी ज्योतिरादित्य सिंधिया की सांसदी?

मध्यप्रदेश के अतिरिक्त महाधिवक्ता अंकुर मोदी किस हैसियत से सिंधिया के केस में हुए प्रस्तुत?

मध्यप्रदेश हाईकोर्ट में राज्य से निर्वाचित राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया के निर्वाचन के खिलाफ नेता प्रतिपक्ष गोविंद सिंह ने 2020 में हाईकोर्ट में एक रिटपिटिशन लगाई थी। दरअसल लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 33ए (1) के अनुसार लंबे अपराधिक प्रकरणों की जानकारी प्रारूप 26 में शामिल करना अनिवार्य स्वरूप का रहता है और इसके छिपाने से प्रपत्र रद्द भी हो सकता है। 2020 में मध्यप्रदेश में राज्य सभा सीट के लिये नामांकन भरते हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इसी लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के कॉलम में निल तथा एन-ए अंकित किया था। इस मामले को लेकर दिग्विजय सिंह ने आपत्ति दर्ज की थी कि ज्योतिरादित्य सिंधिया ने प्रारूप 26 में दिये गये अपने

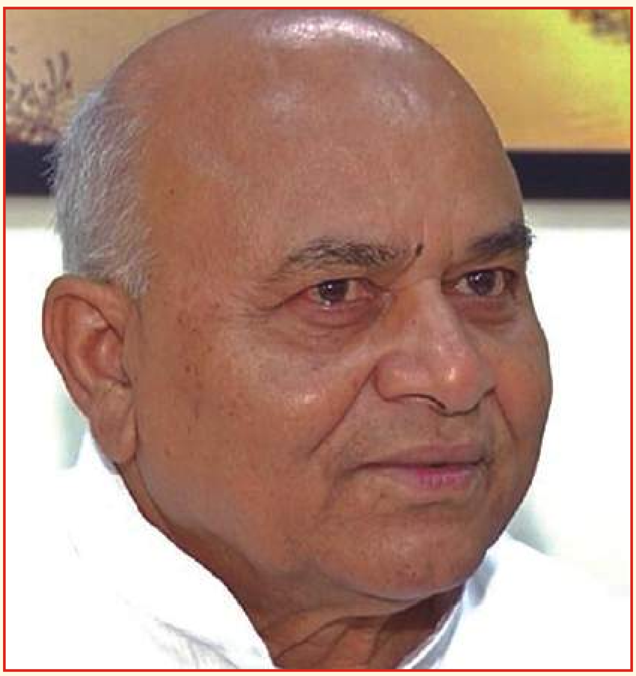

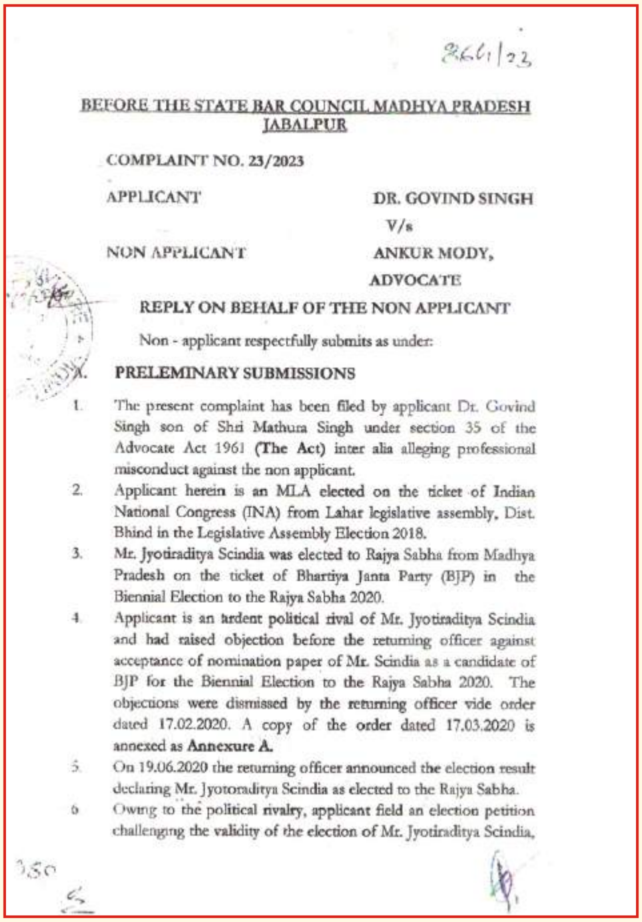

BEFORE THE STATE BAR COUNCIL MADHYA PRADESH
JABALPUR

COMPLAINT NO. 23/2023

APPLICANT — DR. GOVIND SINGH

V/s

NON APPLICANT — ANKUR MODY, ADVOCATE

REPLY ON BEHALF OF THE NON APPLICANT

Non - applicant respectfully submits as under:

A. PRELEMINARY SUBMISSIONS

1. The present complaint has been filed by applicant Dr. Govind Singh son of Shri Mathura Singh under section 35 of the Advocate Act 1961 **(The Act)** inter alia alleging professional misconduct against the non applicant.
2. Applicant herein is an MLA elected on the ticket of Indian National Congress (INA) from Lahar legislative assembly, Dist. Bhind in the Legislative Assembly Election 2018.
3. Mr. Jyotiraditya Scindia was elected to Rajya Sabha from Madhya Pradesh on the ticket of Bhartiya Janta Party (BJP) in the Biennial Election to the Rajya Sabha 2020.
4. Applicant is an ardent political rival of Mr. Jyotiraditya Scindia and had raised objection before the returning officer against acceptance of nomination paper of Mr. Scindia as a candidate of BJP for the Biennial Election to the Rajya Sabha 2020. The objections were dismissed by the returning officer vide order dated 17.02.2020. A copy of the order dated 17.03.2020 is annexed as **Annexure A.**
5. On 19.06.2020 the returning officer announced the election result declaring Mr. Jyotoraditya Scindia as elected to the Rajya Sabha.
6. Owing to the political rivalry, applicant field an election petition challenging the validity of the election of Mr. Jyotiraditya Scindia,

"Samadhi of the remain of H.L.H Madhavrao Maharaja and Hassu dog in the garden of Sardar Patankar Sahab." के रूप में दर्ज और महलगांव के सर्वे. 916 में स्थित है। वर्ष 1992-93 में सर्वे.- 916 शासकीय भूमि के रूप में दर्ज है तथा खाता नं. 12 कैफियत में कुत्ता समाधि दर्ज है और इसका कब्जा पी.डब्ल्यू.डी. के अधीक्षण यंत्री के

आपराधिक मामलों की जानकारी छिपाई थी। वर्ष 2008 में पुलिस स्टेशन श्यामला हिल्स में दिनांक 27.9.2018 में एफआईआर क्रमांक 176/2018 नम्बर से अपराध दर्ज हुआ। इस मामले में दिग्विजय सिंह सह अभियुक्त बनाये गये थे। इस मामले को लेकर सिंधिया ने अपना चुनावी नामांकन में कोई भी जानकारी अंकित नही की एवं पीपल्स ऑफ रिप्रेजेंटेटिव एक्ट के अनुसार इनकी सांसदी इस कारण भी रद्द हो सकती है। इस मामले में चुनाव आयोग ने दिग्विजय सिंह की आपत्ति दरकिनार करते हुए सिंधिया के नामांकन को मान्य कर दिया था। इसी मामले को लेकर कांग्रेस नेता गोविंद सिंह हाईकोर्ट ग्वालियर गये थे। हाईकोर्ट के बाद मामला सुप्रीमकोर्ट भी गया पर सुप्रीमकोर्ट ने वापस हाईकोर्ट जाने का आदेश दिया। अभी इस मामले में सुनवाई 27 जुलाई को हुई थी। सत्ता के नशे में चूर सिंधिया के आगे सरकार कोई नियम मानने को तैयार नही है। सिंधिया की ओर से वकील अंकुर मोदी (एमपी 2530/2000) ने अदालत में सिंधिया के लिये पैरवी की। जबकि अंकुर मोदी इस समय मध्यप्रदेश सरकार के अतिरिक्त महाधिवक्ता हैं और किसी भी हैसियत से सरकार के अलावा किसी और का पक्ष अदालत में नही रख सकते। इस मामले को लेकर वकील अंकुर मोदी का प्रेक्टिस बार लायसेंस त्वरित तौर पर रद्द कर देना चाहिए। कैसे मध्यप्रदेश के सरकारी वकील किस हैसियत से ज्योतिरादित्य सिंधिया के पक्ष में पैरवी की, जबकि इस मामले में मध्यप्रदेश सरकार को पार्टी नही बनाया गया है। यह मामला अगर रफ्तार पकड़ गया तो निश्चित तौर पर सिंधिया को अपनी सांसदी गवानी पड़ेगी साथ में पीपल्स ऑफ रिप्रेजेंटेटिव एक्ट के प्रावधान अनुसार आगे चुनाव लड़ने पर बैन भी किया जा सकता है।

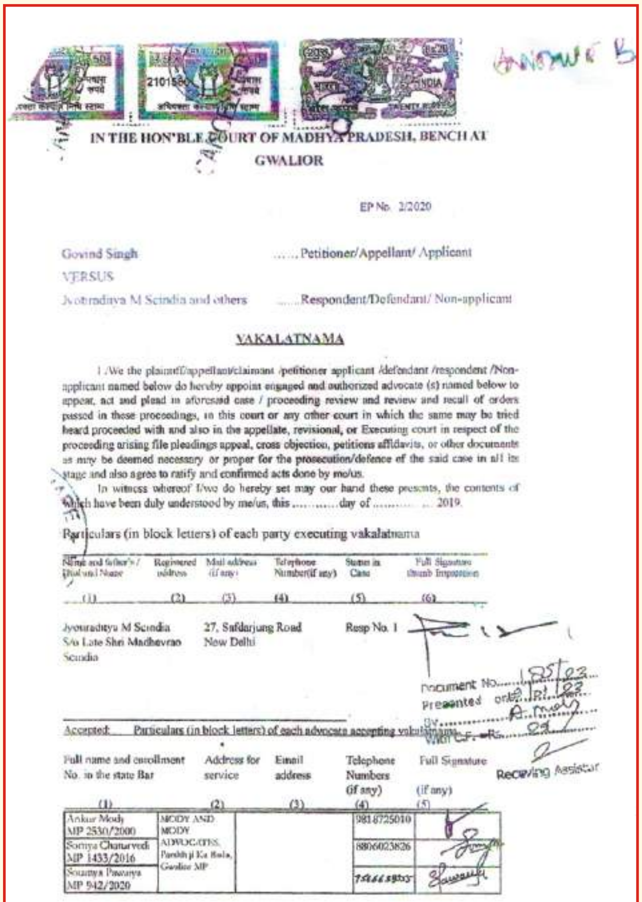

IN THE HON'BLE COURT OF MADHYA PRADESH, BENCH AT GWALIOR

EP No. 2/2020

Govind Singh ......Petitioner/Appellant/ Applicant

VERSUS

Jyotiradiya M Scindia and others ......Respondent/Defendant/ Non-applicant

VAKALATNAMA

I /We the plaintiff/appellant/claimant /petitioner applicant /defendant /respondent /Non-applicant named below do hereby appoint engaged and authorized advocate (s) named below to appear, act and plead in aforesaid case / proceeding review and review and recall of orders passed in these proceedings, in this court or any other court in which the same may be tried heard proceeded with and also in the appellate, revisional, or Executing court in respect of the proceeding arising file pleadings appeal, cross objection, petitions affidavits, or other documents as may be deemed necessary or proper for the prosecution/defence of the said case in all its stage and also agree to ratify and confirmed acts done by me/us.

In witness whereof I/we do hereby set may our hand these presents, the contents of which have been duly understood by me/us, this ....day of .... 2019.

Particulars (in block letters) of each party executing vakalatnama

Name and father's / Husband Name (1)	Registered address (2)	Mail address (if any) (3)	Telephone Number(if any) (4)	Status in Case (5)	Full Signature thumb Impression (6)
Jyotiradiya M Scindia S/o Late Shri Madhavrao Scindia	27, Safdarjung Road New Delhi			Resp No. 1	

Document No. 185/23 Presented on 8/21/23 by A. Mody With C.F. Rs. 29 Receiving Assistar

Accepted: Particulars (in block letters) of each advocate accepting vakalatnama

Full name and enrollment No. in the state Bar (1)	Address for service (2)	Email address (3)	Telephone Numbers (if any) (4)	Full Signature (if any) (5)
Ankur Mody MP 2530/2000	MODY AND MODY ADVOCATES, Parekh ji Ka Bada, Gwalior MP		9818725010	
Somya Chaturvedi MP 1433/2016			8806023826	
Soumya Pawaiya MP 942/2020			7566658505	

आदेश पर कार्यपालक अभियंता पी.डब्ल्यू.डी. ने ले लिया था।

माधवराव सिंधिया ने माननीय उच्च न्यायालय, ग्वालियर द्वारा पारित जिस उक्त प्रकरण क्रमांक का उल्लेख विक्रय पत्र में किया है जिसमें यह बताया गया है कि इसी आदेश के आधार पर सर्वे.क्रमांक- 916 पूर्णतः गलत है, क्योंकि उच्च न्यायालय ने अपने प्रकरण में इस सर्वे नं. का कोई

अंग्रेजों के सबसे परम मित्र थे सिंधिया

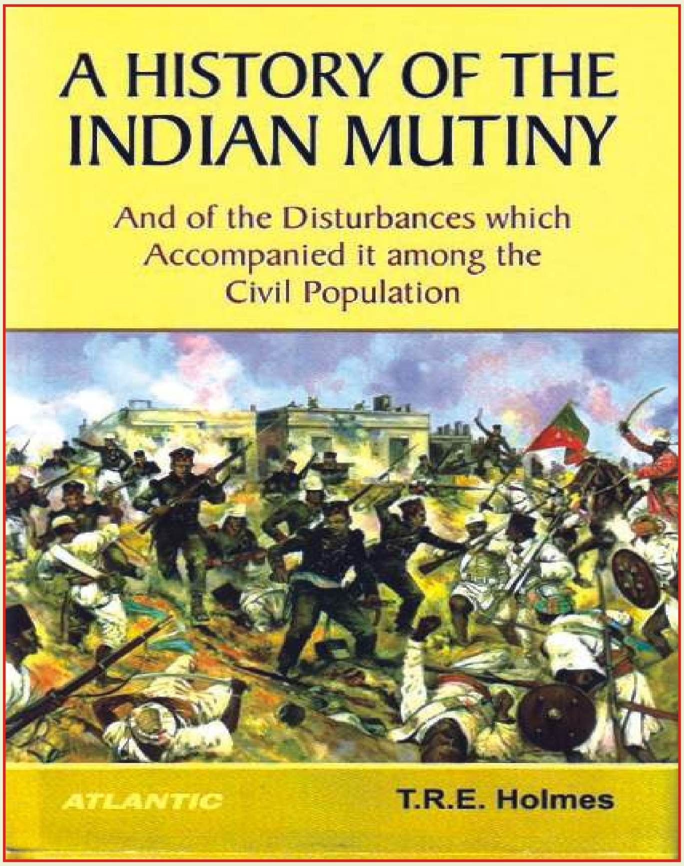

अ हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटिनी नाम की किताब अक्टूबर 1883 को अंग्रेज लेखक टीआरई होम्स ने लिखी। इस किताब के पृष्ठ क्रमांक 28 में लेखक ने लिखा कि एलनबोर्गस द्वारा अंग्रेज और सिंधिया के साथ संबंध स्थापित कराए गये थे। इसके साथ लेखक होम्स द्वारा पृष्ठ क्रमांक 127 से 131 तक अंग्रेज और सिंधिया के मजबूत रिश्तों के बारे में विवरण के साथ बताया कि एलनबोर्गस ग्वालियर राज्य के काम काज में सीधे हस्तक्षेप करते थे, इसके बाद उन्होंने दिनकर राव को पॉलिटिकल ऐजेंट बनाया। दिन प्रतिदिन सिंधिया और अंग्रेजो की दोस्ती गहरी होती गई। इसके बाद मेजर चार्टस मेकफर्सन को पॉलिटिकल ऐजेंट बनाया गया। अंग्रेज लेखक द्वारा महाराजा सिंधिया की तारीफ में लिखा कि वह अंग्रेजों के सच्चे मित्र बन कर रहे। सिंधिया लार्ड केनिन से मुलाकात करने के लिए कलकत्ता गये। महाराजा सिंधिया ने अपनी सेना को भेजकर अंग्रेज महिलायें और बच्चों को सुरक्षा प्रदान की। इसके आगे अंग्रेज लेखक ने महाराज सिंधिया और मेकफर्सन के बारे में लिखा कि मेकफर्सन के कहने पर ही सिंधिया ने अपनी फौज को खामोश रखा था। इसके आगे पृष्ठ कृमांक 140 में होम्स ने लिखा कि जुलाई से लेकर अगस्त तक जब अंग्रेज पूरे देश में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से हार रहे थे तब भी सिंधिया मेकफर्सन के घनिष्ठ बने रहे। चार महीने तक अपनी ही सेना और स्वतंत्रता संग्राम में शामिल राजाओं को वह धोखा देकर, चापलूसी करके, प्रतिरोध के विष भरे बीज अपनों में बोकर ग्वालियर को खामोश रखे रहे। किताब में अंग्रेज लेखक ने उनकी तारीफ में लिखा कि सिंधिया की अंग्रेजो के प्रति गहन निष्ठा थी। इसके आगे अंग्रेज लेखक ने पृष्ठ क्रमांक 470 से 475 तक सिंधिया की तारीफ करते हुये लिखा की 01 जून को सिंधिया ने फौज और तोपों के साथ राव साहब पेशवा, झांसी रानी और तात्या टोपे के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। इस युद्ध में सिंधिया हारने के बाद ग्वालियर छोड़कर आगरा आ गये। अंग्रेज लेखक ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को विद्रोही कहा और 1857 की भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली लड़ाई को विद्रोह कहा। इस किताब में अंग्रेज लेखक द्वारा सिंधिया की तारीफ और उनकी अंग्रेजों के साथ गहरी मित्रता का विशेष उल्लेख किया है।

उल्लेख ही नहीं किया है। यह एक गंभीर किस्म की धोखाधडी भी है, यही नहीं यहां यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि माधवराव सिंधिया के स्वर्गवासी होने के पश्चात उनके वारिसान का नामांतरण भी वैधानिक रूप से नहीं किया गया है।

ग्राम महलगांव तहसील ग्वालियर सर्वे क्रमांक 916 (1 बीघा 8 विस्वा) सन् 1996 तक राजस्व अभिलेखों में राजस्व विभाग, कदीम, आवादी, पटोर नजूल थी जो सन 1996 के पश्चात् अवैधानिक तरीके से तहसीलदार ग्वालियर द्वारा ग्वालियर के पूर्व महाराजा माधवराव सिंधिया के नाम नामांतरित कर दी गई। बाद में महारानी (राजमाता) माधवीराजे

सिंधिया को मिली है विश्वासघात की विरासत

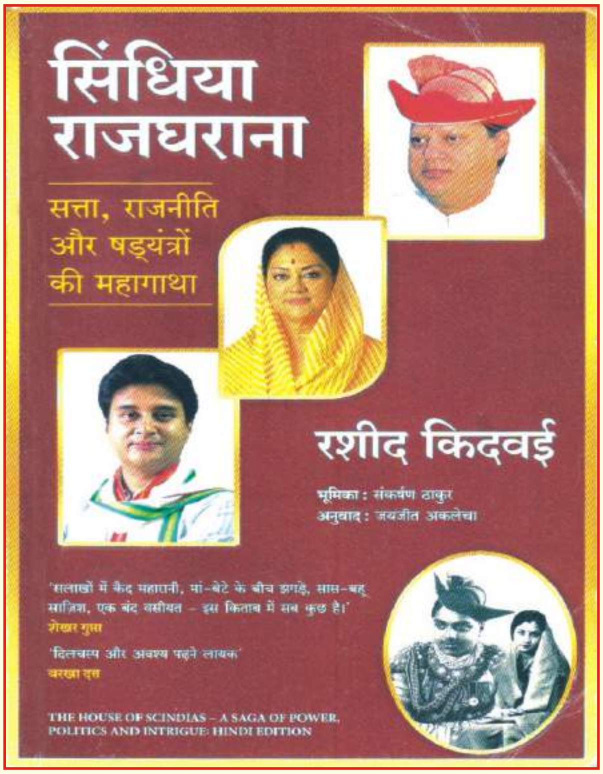

सिंधिया राजघराना नाम की किताब राशिद किदवई द्वारा सन 2022 में हिन्दी संस्करण प्रकाशित किया गया। पृष्ठ क्रमांक 18 में किताब के दूसरे पैरा में लिखा गया कि सिंधिया आर्थिक रूप से कमजोर तबके कुनबी किसान जो अन्य पिछडा वर्ग ओबीसी से ताल्लुक रखते थे। राणो जी एक बहुत छोटी सी नौकरी जिसमें उनका दायित्व बाजीराव की चप्पल को एक डिब्बे में रखना था से ऊपर उठे। पृष्ठ क्रमांक 28, 29 राशिद किदवई लिखते है कि जयाजी राव ने अपनी फौज को तटस्थ बने रहने का निर्णय किया। बुल एवं हक्सर के अनुसार जयाजी राव ने कूटनीति के बजाय चालबाजी से काम लिया। ग्वालियर में जिस स्थान पर रानी लक्ष्मीबाई परास्त हुई थी उससे एक किलोमीटर दूर ही आज का जयविलास पैलेस बना। 1857 के विरोध के शांत होने के बाद ग्वालियर के महाराजा को ब्रिटिश शासन से कई इनाम मिले। पृष्ठ क्रमांक 30 में लेखक ने लिखा कि सिंधिया को विश्वासघात की विरासत मिली है। जयाजीराव को वीर सावरकर की किताब में कोबरा, गद्दार और डरपोक बताया। इस तरह सिंधिया परिवार की गद्दारी के कई किस्से लेखक राशिद किदवई नें अपनी किताब में उल्लेखित किये है।

सिंधिया ने ज्योतिरादित्य सिंधिया तथा युवरानी चित्रांगधेराजे की सहमति के साथ विक्रय कर दी।

■ ग्राम महलगांव तहसील ग्वालियर की सर्वे क्रमांक 916 रकवा.293 है भूमि सिटी सेंटर क्षेत्र में स्थित होकर सन् 1996 तक राजस्व अभिलेखों में राजस्व विभाग, सड़क, कदीम, आबादी, नजूल दर्ज थी। यह माफी भूमि थी। सन् 1989 के पश्चात् इनके नाम दर्ज की है।

■ उक्त भूमि को तहसीलदार ग्वालियर ने स्व. महाराजा माधवराज सिंधिया के द्वारा किसी वैधानिक आवेदन प्रस्तुत किए बिना ही प्रकरण दायर कर उनके नाम नामांतरित कर दी।

यह ग्वालियर का 1000 बेड का वह अस्पताल है, जिसका शिलान्यास सीएम शिवराज सिंह चौहान ने किया था। 2018 में जब कांग्रेस की सरकार आयी तो इसका उद्घाटन करने ज्योतिरादित्य सिंधिया आए तो बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने काले झण्डे दिखाए थे।

अपने आपको *महाराज साहब* कहलवाना पसंद करती हैं यशोधरा राजे सिंधिया

खेल एवं युवक कल्याण मंत्री यशोधरा राजे सिंधिया अपने आपको ***महाराज साहब*** कहलवाना पसंद करती हैं। शिवपुरी जिले में जो अधिकारी-कर्मचारी हैं वो अगर यशोधरा को महाराज साहब नहीं कहते यशोधरा राजे उनका ट्रांसफर कर देती हैं। यहीं नहीं अधिकारियों और कर्मचारियों से बदतमीजी से बात करती हैं। जिला पंचायत के सीईओ उमराव सिंह को शिवपुरी के एक कार्यक्रम में यशोधरा राजे ने मंच से उतार दिया था और उनसे कहा कि मंच से नीचे बैठो। आप नये आये हो, पहले बैठना सीखो। यशोधरा को अगर कोई मेडम कहता है तो उसकी सामत शामत आ जाती है।

■ तहसीलदार ने शासकीय भूमि को शासन का पक्ष सुने बिना माननीय उच्च न्यायालय ग्वालियर के रिट पिटीशन 61,62,63,64/1979 के आदेश दिनांक 8.9.1981 का उल्लेख हुए महाराजा के नाम नामान्तरित कर दिया।

■ तहसीलदार को शासकीय भूमि पर नामांतरण करने का अधिकार ही नही था। प्रकरण लेण्ड रेवेन्यु कोड की धारा 57 (2) के तहत अधिकार उपखण्ड अधिकारी (एस.डी.ओ.) को ही दिया गया। तहसीलदार द्वारा दिया गया आदेश विधि विरूद्ध है।

■ जहां तक माननीय उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 8.12.81 के तहत नामांतरण किए जो का प्रश्न है उक्त निर्णय में जिन सर्वे नम्बरों का विवरण दिया है उनमें सर्वे क्रमांकक 916 का कोई उल्लेख नही होकर कोई निर्णय नही है। माननीय उच्च न्यायालय म.प्र. ग्वालियर का निर्णय दिनांक 8.12.81 को आया। उच्च न्यायालय एवं राजस्व मण्डल के निर्णयों का पालन ही तहसीलदार ने नही किया।

ट्रस्टों के माध्यम से सिंधिया ने कई शासकीय जमीनों पर किया कब्जा।

■ न्यायालय तहसीलदार ग्वालियर के यहां दायर नामांतरण प्रकरण में स्व. महाराजा माधवराज का कोई प्रार्थना पत्र प्रकरण में नही है। किसी अनाधिकृत व्यक्ति महेन्द्र प्रताप सिंह के एक साधारण पत्र पर संपूर्ण कार्यवाही का नामांतरण कर दिया गया। जो पूर्णतः अवैधानिक है।

■ महाराजा ग्वालियर की ओर से उक्त सर्वे नम्बर के संबंध में बताया गया है कि यह महाराजा ग्वालियर को उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति की सूची में दर्शाया गया है। उस कारण महाराज की व्यक्तिगत सम्पत्ति है वास्तविक यह है कि भारत सरकार से हुए समझौते के अनुसार महाराजा ग्वालियर की

यह है जयाजीराव सिंधिया, जो झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के ग्वालियर आगमन के समय आगरा चले गए थे। इन्होंने रानी लक्ष्मीबाई और तात्याटोपे के खिलाफ ईस्ट इंडिया कंपनी को मदद पहुंचाई।

जो व्यक्तिगत पूर्ण स्वामित्व व उपयोग की सम्पत्ति थी जो 4 लिस्ट प्रकाशित हुई उनमें लिस्ट क्रमांक 4 के अनुसार जो सम्पत्ति सिंधिया द्वारा यूनियन गर्वमेंट (भारत सरकार) को सर्मपित की थी उस लिस्ट क्रमांक 4 के अनुक्रम 28 पर इसका विवरण है। "Samadhi of the remain of H.L.H Madhavrao Maharaja and Hass dog in the garden of Sardar Patankar Sahab." वह महलगांव के सर्वे क्रमांक 916 में है।

■ खसरे में सन् 1992-93 में सर्वे क्रमांक 916 शासकीय है तथा खाता नम्बर 12 केफियत में कुत्ता समाधि दर्ज है जबकि यह कुत्ता समाधि लिस्ट में वर्णित इसका कब्जा सुपरिन्टेण्डेंट इंजीनियर के आदेश पर EE PWD ने प्राप्त किया था।

■ माधवीराजे सिंधिया ने माननीय उच्च न्यायालय ग्वालियर द्वारा पारित प्रकरण क्रमांक 61,62,63,64, एवं 64/1979 में पारित आदेश दिनांक 8.12.81 का उल्लेख विक्रय पत्र में कर कहा है कि इसी आदेश के आधार पर यह सर्वे क्रमांक 916 में हम प्राप्त हुआ है जो पूर्णतः गलत है उक्त न्यायालय प्रकरण में इस सर्वे नम्बर का कोई उल्लेख नही।

■ महाराजा माधवराव सिंधिया के स्वर्गवासी होने के पश्चात् उनके वारिसान का नामांतरण भी वैधानिक रूप से नही हुआ है।

■ तहसीलदार ग्वालियर ने भी सीमांकन प्रार्थना पत्र के समय पूर्ण जानकारी उक्त सर्वे नम्बर के संबंध में लेना उचित नही समझा।

■ गलत तथ्य समाचार पत्रों में दिया गया है कि माननीय उच्च न्यायालय ग्वालियर बैंच ने रिव्यू पिटीशन क्रमांक 313/2009 में पारित आदेश दिनांक 17.2.2009 द्वारा भी देवस्थान, कमलाराजे, गोरखी ट्रस्ट भी सिंधिया परिवार का होना पाया गया है। उक्त निर्णय में ऐसा कुछ नही है तथा टाइटल के संबंध में कोई निर्देश व आदेश नही है।

■ वास्तविकता यह है कि सर्वे नं पूर्णतः शासकीय होकर आज भी शासन की संपत्ति हैं इस प्रकरण में तहसीलदार ग्वालियर ने भ्रष्टाचार के आधार पर क्रेताओं का नामांतरण भी बिना संपूर्ण राजस्व अभिलेखों की जानकारी लिए बिना तथ्यों

को छुपाकर किया हैं।

■ डॉ. संजय गोयल कलेक्टर ग्वालियर ने अपने प्रकरण क्रमांक 07/13-14 स्वमेव निगरानी में लेकर ओदश दिनांक 20.6.2017 को शासकीय अभिलेखों में पूर्व की स्थिति कायम करने का आदेश भी दिया है।

■ सुपरिन्टेडेट इंजीनियर PWD B&R नोर्दन सर्किल ग्वालियर ने महाराजा की

सिंधिया के महल जयविलास का कोई खसरा खतौनी और वटांकन नही है। उन्होंने जयाजीराव गृह निर्माण सोसायटी बनाई समझ में नही आता कि खसरा खतौनी नही होने पर कैसे रजिस्ट्रियां हुई। इन्होंने जय विलास पैलेस को ट्रस्ट बनाया है जिसमें पानी, बिजली का खर्च नही लगता।

प्रायवेट प्रापर्टी का चार्ज लिस्ट के अनुसार लेने हेतु पत्र क्रमांक 2307 दिनांक 30.03.50 के पालन में कार्यपालन यंत्री PWD गिर्द डिवीजन ने लिस्ट के अनुसार चार्ज लेकर अपने पत्र क्रमांक 2624/15.04.50 द्वारा अरायश अधिकारी लश्कर को सूचित कर दिया था। भूमि पूर्ण रूप से शासकीय है।

शासकीय भूमि का षड्यंत्रपूर्वक अवैधानिक नामांतरण करके विक्रय किया जाकर करोड़ों रूपये की शासन को हानि पहुंचाई है।

निश्चित तौर पर तमाम पुस्तकों के अध्ययन से पता चलता है कि 1857 की क्रांति के समय सिंधिया राजवंश ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ गद्दारी की थी। कैसे सिंधिया परिवार ने देश की आज़ादी के लिए लड़ी गई इतनी बड़ी लड़ाई की चिंगारी को बुझाने का प्रयास किया। यह भी सत्य है कि उस समय सिंधिया राजवंश 1857 की क्रांति में साथ देते तो देश को 100 साल पहले ही आज़ादी मिल जाती। इतिहासकारों ने इस पूरी घटना का संपूर्ण विवरण प्रकाशित किया है। इसके साथ ही सबसे महत्वपूर्ण बात है, आज देश के अंदर देश की स्वतंत्रता के लिए लड़े वीरों-वीरांगनों के वंशजों की पीढ़ियां कैसे जीवन बसर कर रहीं हैं। इन्हें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा इनके वंशजों ने देश के लिए जो कुर्बानियां दी हैं, उनके ही परिवार वालों को सम्मान नही मिल रहा है। उनकी मौजूदा सरकारों द्वारा अनदेखी की जा रही है। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से इनकी काफी उपेक्षा की जा रही है। जबकि उस समय जिन परिवारों ने अंग्रेजों का साथ दिया और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के साथ गद्दारी की उन्हें मान-सम्मान दिया जा रहा है। उनके परिवारों ने जो दगाबाजी की है उसे भुलाया जा रहा है। इस तरह की जा रही अनदेखी मन को विचलित करती है। क्योंकि आज भी देश के अंदर देश की आज़ादी में जिन्होंने जानें गंवाकर कुर्बानियां दी हैं उनके प्रति सम्मान है। उनके परिवार वालों के प्रति भी सम्मान है। सरकारों को भी इन लोगों के प्रति मान-सम्मान की दृष्टि से देखने की जरूरत है।

मणिपुर हम शर्मिंदा हैं?

रघु ठाकुर

मणिपुर की स्थिति को लेकर समूचे देश में चिन्ता है, बहस भी है और एक प्रकार का विभ्रम भी है। मणिपुर की हिंसा की शुरूआत हुये आज लगभग 03 माह होने जा रहे हैं। इसमें केई दो मत नहीं है कि मणिपुर हिंसा की शुरूआत योजनाबद्ध ढंग से राजनैतिक लाभ उठाने के लिये मणिपुर की भाजपा सरकार के द्वारा शुरू कराई गई। एन. बीरेन सिंह जो वर्तमान में मणिपुर के मुख्यमंत्री है वे मूलतः कांग्रेसी थे और लगभग 30 वर्ष से अधिक कांग्रेस में रहे। वह अभी कुछ वर्ष पूर्व कांग्रेस छोड़कर भाजपा के साथ आये तथा भाजपा ने उन्हें मुख्यमंत्री बनाया। वे स्वतः भी मैतेई समाज के हैं और मैतेई समाज मणिपुर में बहुसंख्यक समाज है। जो अकेले 53 प्रतिशत से अधिक है। उन्हें अपने राजनैतिक फायदे के लिये यह लाभप्रद था कि वे मैतेई समाज को आदिवासियों में शामिल कराकर आरक्षण दिलायें जिससे उनका समाज, उनके लोग संस्थागत व सामाजिक रूप से मजबूत होते। इस माँग के लिये उन्होंने सीधा रास्ता चुनने की बजाय टेड़ा रास्ता चुना और मणिपुर हाईकोर्ट में

मैतेई समाज मणिपुर में बहुसंख्यक समाज है। जो अकेले 53 प्रतिशत से अधिक है। उन्हें अपने राजनैतिक फायदे के लिये यह लाभप्रद था कि वे मैतेई समाज को आदिवासियों में शामिल कराकर आरक्षण दिलायें जिससे उनका समाज, उनके लोग संस्थागत व सामाजिक रूप से मजबूत होते।

एक याचिका दायर कराई गई जिस पर हाईकोर्ट ने सरकार को शीघ्र निर्णय लेने का अधिकार दे दिया। वैसे भी किसी समाज को आदिवासी समाज में शामिल करने के लिये अकेले राज्य की नहीं बल्कि केन्द्र और कभी-कभी शीर्ष न्यायालयों तक से अनुमति/सहमति लेना होती है।

राजस्थान में एक दौर में कांग्रेस पार्टी ने मीणा जाति को आदिवासी में शामिल कर लिया उसके कई प्रकार के परिणाम निकले। उसमें से एक यह कि जो वास्तव में आदिवासी राजस्थान के हैं जिनमें भील, गौड़ आदि शामिल है चूंकि वे ताकतवर स्थिति में नहीं थे अतः उनका सारा आरक्षण का लाभ मीणा समाज ने उठाया और तंत्र में स्थापित हो गये। इसी की नकल करते हुये राजस्थान के गुर्जर समाज ने गुर्जरों को आदिवासी में शामिल करने की माँग की। कई महीनों तक रेल गाड़ियां बंद रही, 100

सत्ता के सहारे मणिपुर में मैतेई समाज ने शुरूकी और हाईकोर्ट के निर्देश के नाम पर मैतेई को आदिवासी की आरक्षित सूची में शामिल कर दिया। इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट ने भी टिप्पणी की और यहाँ तक कहा कि हाईकोर्ट का निर्णय गलत है व उसके अधिकार सीमा से परे है। परन्तु राज्य सरकार ने अपने राजनैतिक लाभ के लिये सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी की अवेहलना की। इस आरक्षण का परिणाम यह हुआ कि कुकी आदिवासी विद्रोह पर उतर आये और वहां कुकी बनाम मैतेई हिंसा फैल गई। चूंकि कुकी समाज के आदिवासियों में धर्म परिवर्तन ज्यादा हुआ है।

से अधिक लोग मारे गये, परन्तु गुर्जर समाज आदिवासी नहीं बन सका। यह उचित भी नहीं था, क्योंकि गुर्जर समाज पिछड़े वर्ग में तो आता है परन्तु वह आदिवासी नहीं है। अब इसी प्रकार की माँग सत्ता के सहारे मणिपुर में मैतेई समाज ने शुरू की और हाईकोर्ट के निर्देश के नाम पर मैतेई को आदिवासी की आरक्षित सूची में शामिल कर दिया। इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट ने भी टिप्पणी की और यहाँ तक कहा कि हाईकोर्ट का निर्णय गलत है व उसके अधिकार सीमा से परे है। परन्तु राज्य सरकार ने अपने राजनैतिक लाभ के लिये सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी की अवेहलना की। इस आरक्षण का परिणाम यह हुआ कि कुकी आदिवासी विद्रोह पर उतर आये और वहां कुकी बनाम मैतेई हिंसा फैल गई। चूंकि कुकी समाज के आदिवासियों में धर्म परिवर्तन ज्यादा हुआ है। और इसलिये भाजपा तथा संघ को यह खेल बहुत रास आया। एक तो मैतेई सब इकट्ठे हो गये और दूसरा जो मैतेई आदिवासी समाज के लोग इसाई मजहब के थे वे भी अपने लाभ और समाज के लिये भाजपा सरकार के साथ एकजुट हो गये।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि कुकी या पड़ोस के नागा या मिजो आदि लोगों में बड़े स्तर पर धर्म परिवर्तन, ब्रिटिश सरकार के

जमाने में हुआ है। और आजादी के बाद भी चर्च और धर्म प्रचारक वहां सक्रिय रहे तथा धर्म परिवर्तन कराते रहे। यह भी तथ्य है कि इसाई प्रचारकों ने या धर्म गुरू ओं ने आदिवासियों में शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में काफी काम किया है। जहाँ सरकार नहीं पहुंची वहां पर पहुंच कर सेवा कार्य किया है। हालांकि सेवा के लिये धर्म परिवर्तन कराना अनिवार्य नहीं है। परन्तु जिन दूरस्थ पहाड़ी इलाकों में सरकार, धार्मिक या सामाजिक

संगठन पहुंचते नहीं थे वहाँ इसाई प्रचारक पहुंचे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का एक लक्ष्य यह भी है कि इसे रोका जाए। यह लक्ष्य पहले गये कुछ गांधीवादियों का भी रहा है। हालांकि उन क्षेत्रों में शिक्षा, चिकित्सा चेतना और जाग्रति का जितना काम होना चाहिये था वह नहीं हुआ। मुझे याद है कि जब मैं आपातकाल के दौरान इंदौर जेल में था तब दादा भाई नाईक जो सर्वादय के बड़े नेता थे ने बातचीत में कई बार इस पर चिंता प्रकट की थी और सर्वादय के लोगों के द्वारा किये गये कुछ प्रचारों का भी उल्लेख किया था। कांग्रेस सरकार के साथ सर्वादय के लोगों का एक लंबे समय का रिश्ता रहा है तथा महात्मा गाँधी की मृत्यु के बाद स्व. विनोभा भावे जी के नेतृत्व में सर्वादयवादियों का एक बड़ा धड़ा कांग्रेस के साथ रहा, उनका कृपा पात्र रहा और कांग्रेस वर्ग संगठन जैसा बना रहा। इसलिये कुछ रिश्तों के चलते, कुछ स्वभाव व रिश्तों के चलते वे धर्म परिवर्तन के विरोधी तो थे परन्तु हिंसक नहीं थे। संघ और भाजपा का मूल और आंतरिक दर्शन साधनों की पवित्रता या अहिंसा का नहीं बल्कि वे समयानुकूल अहिंसक और हिंसक कुछ भी बन सकते है। अब चूंकि वह केन्द्र और राज्य सरकार में हैं। अतः तंत्र के सहारे वे हिंसा का राज्यपोषित व संरक्षित प्रयोग खुलकर कर सकते हैं। यही वह मणिपुर में कर रहे हैं।

मणिपुर में जिस प्रकार आदिवासी बहिनों को नग्न कर जुलूस निकाला गया जो कि अब देश की चर्चा के केन्द्र में हैं। यह सभी के सामने आ चुका है। परन्तु यह भी सामने आया जब इस घटना का वीडियो अमेरिका से भारत आया। यानि कूकी लोगों के विदेशी संपर्क है। यह वीडियो पहले उनके पास पहुंचा और फिर वहां से भारत पहुंचा। निसंदेह यह भी एक चिंता का विषय है। इस अर्थ में भी कि यह सरकार की अक्षमता है कि अपने देश, अपने राज्य में क्या घट रहा है यह उन्हें पता नहीं। और अगर पता है तो फिर इसे छिपाने का अपराध तो और भी बड़ा है।

इस वीडियो के आने के बाद देश में राजनैतिक हलचल बढ़ी है। लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी ने तो इस घटना में माना कि यह राज्य सरकार व प्रशासन की पूरी असफलता है अतः राज्य सरकार को भंग किया जाना चाहिये। मणिपुर के परिणाम

अब मणिपुर के बाहर दिखने लगे हैं। मणिपुर के पास ही मिजोरम है और वहां भी धर्म परिवर्तन के आधार पर अब इसाई आदिवासियों की संख्या ज्यादा है। चूंकि भारत सरकार और मणिपुर सरकार के रवैये से अंततः संघर्ष धार्मिक रूप ले चुका है तथा ईसाई बनाम गैर ईसाई आदिवासी का रूप ले चुका है। इसके चलते मिजोरम में मैतेई लोगों पर हमले शुरू हो गये हैं और लगभग दस हज़ार मैतेई मिजोरम छोड़कर वापिस मणिपुर की ओर आ रहे हैं। धार्मिक आधार पर आबादी का यह विभाजन और आवागमन छोटे-मोटे भारत-पाक बंटवारे का रूप ले रहा है। बल्कि कुछ अर्थ में और भी अधिक चिंताजनक है। क्योंकि महात्मा गाँधी की इच्छा के विपरीत देश का बंटवारा हुआ था परन्तु एक बड़ी आबादी के लिये गांधी एक विश्वास का केन्द्र थे। आज वह स्थिति नहीं है। दूसरे अगर ऐसा कोई रूप बनेगा तो इसलिये भी चिंताजनक होगा क्योंकि ये पहाड़ी राज्य चीन की सीमा के नजदीक है। जाहिर है कि इससे चीन को इन्हें भड़काने और भारत को परेशान और कठघरे में खड़े करने का अवसर मिलेगा। अमेरिका व यूरोप का मीडिया भी इसमें अपनी भूमिका अदा करेगा तथा चर्च पोषित संस्थायें जो धर्मान्तरण को अपना धार्मिक हित मानती है वे भी अपने निहित हितों के लिये भूल पैदा करेगी।

सोशल मीडिया का एक बड़ा हिस्सा जो मोदी और गैर मोदी में विभाजित है वह भी अपने राजनैतिक स्वार्थों के लिये इन घटनाओं को एक विकृत व गलत ढंग से प्रस्तुत कर रहा है। मोदी विरोधी लोगों ने एक वीडियो वायरल किया जिसमें महिलाओं को नग्न हालत में बताया गया। हालांकि कुछ ही समय पश्चात् प्रेस कोंसिल ऑफ इण्डिया के सदस्य व देश के वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश दुबे ने पता कराकर उस वीडियों का खण्डन किया और बताया कि वह वीडियो भारत का नहीं वरन बर्मा का है। मोदी समर्थक मीडिया के बहादुरों ने भी मणिपुर समस्या को लेकर उसे एक सांप्रदायिक व भिन्न रूप में प्रस्तुत करने का

मणिपुर के पास ही मिजोरम है और वहां भी धर्म परिवर्तन के आधार पर अब इसाई आदिवासियों की संख्या ज्यादा है। चूंकि भारत सरकार और मणिपुर सरकार के रवैये से अंततः संघर्ष धार्मिक रूप ले चुका है तथा ईसाई बनाम गैर ईसाई आदिवासी का रूप ले चुका है। इसके चलते मिजोरम में मैतेई लोगों पर हमले शुरूहो गये हैं और लगभग दस हज़ार मैतेई मिजोरम छोड़कर वापिस मणिपुर की ओर आ रहे हैं। धार्मिक आधार पर आबादी का यह विभाजन और आवागमन छोटे-मोटे भारत-पाक बंटवारे का रूप ले रहा है।

प्रयास किया। एक सज्जन जो अपने आपको नई दुनिया का वरिष्ठ संपादक लिख रहे हैं। उन्होंने मणिपुर कांड को राजनैतिक आधार पर बांटने का प्रयास किया है और अपने उत्साह में उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि कांग्रेस गठबंधन जिसे इण्डिया का नाम दिया गया के लोग जिनमें श्रीमती सोनिया गाँधी, अखिलेश यादव, ममता बनर्जी, केजरीवाल के नाम लिखे गये तब वह कहां गये थे जब भोपाल में एक हिन्दू लड़के को गले में पट्टा बांधकर घुमाया गया था। वे बेचारे यह भी भूल गये है कि मध्यप्रदेश में पिछले 19 वर्ष से संघ नियंत्रित भाजपा की सरकार है और अगर ऐसी घटना हुई तो उसके लिये संघ पोषित भाजपा की सरकार ही दोषी है। उन्होंने अपने लेख में यह भी लिखा है कि मणिपुर में राजाओं के बीच में आपसी युद्ध होते थे तथा कमजोर मैतेई राजा पड़ोसी म्यांमार कुकी और रोहिंग्या हमलावारों को भारत बुलाते थे। इसका तो मतलब यही हुआ कि कूकी और रोहिंग्या लोगों ने मणिपुर के मैतेई राजाओं यानि हिन्दू राजाओं की रक्षा की। यानि हिन्दू राजाओं के प्रति तो उन्हें आभारी होना चाहिये। उन्होंने मणिपुर में अफीम की खेती को लेकर चीन को दोषी बताया जबकि तथ्य यह है कि चीन खुद अफीम से परेशान था और वह भारत से दो वर्ष के बाद यानि 1949 में आजाद हुआ। मैं इन मित्र से जानना चाहूंगा कि जब चर्च वहां आदिवासियों को ईसाई बना रहे थे तो आप कहां थे। संघ की स्थापना तो 1925 में हिन्दू धर्म की रक्षा के नाम पर हुई थी और 1925 से लेकर 2017-18 तक याने राज्य में सरकार बनने तक इन लगभग 100 वर्षों में संघ कहां था। उसने तभी आदिवासियों के बीच में जाकर सेवा कार्य क्यों नहीं किया और उन्हें धर्म परिवर्तन क्यों करने दिया। वे लिखते है वर्तमान भारत सरकार ने मणिपुर में अफीम की खेती को रोका तथा यह भी कि 2008 में वहां गृह युद्ध जैसा हुआ तब श्रीमती सोनिया गाँधी के निर्देश पर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने पहाड़ियां पर अफीम की खेती को मान्यता देकर पुलिस कार्यवाही नही करने का आश्वासन दिया। इनसे पूँछा जाना चाहिये कि क्या उनके पास इन निर्देशों व आदेशों के प्रमाण हैं? क्योंकि कोई भी प्रधानमंत्री नारकोटिक्स एक्ट के रहते ऐसा आश्वासन नहीं दे सकता। दूसरे 06 वर्ष तक स्व. अटल बिहारी वाजपेयी भी प्रधानमंत्री थे तो क्या यह माना जाए कि अटल जी अफीम की खेती वालों से मिले या राष्ट्र विरोधी चीन पाकिस्तान से मिले हुये थे। दूसरी तरफमोदी विरोधी शूर वीरों ने एक वीडियो डाला है जिसमें दो युवकों की संघ की वेषभूषा में फोटो है और कहा जा रहा है कि इन्होंने इन बहिनों को नंगा किया है। हालांकि इसका भी जिम्मेवार लोगां ने खंडन किया है यानि यह भी झूठा फोटो है। कुल मिलाकर पक्ष-विपक्ष दोनों ओर से जो कीचड़ फैंका जा रहा है उससे दुनिया में भारत की छवि खराब हो रही है।

इसी बीच 24 जुलाई को राज्यसभा में संजय सिंह ने मणिपुर के मामले को उठाते हुए कहा कि इस पर चर्चा के शुरूहोने के पूर्व प्रधानमंत्री जी को पहले सदन को बताना चाहिए कि उन्होंने दो माह से अधिक से चल रहे हिंसा काण्ड जिसमें हजारों लाखों लोग प्रभावित हो रहे उन्होंने या उनकी सरकार ने क्या किया है? संजय सिंह की यह माँग इसलिये उचित थी कि अगर प्रधानमंत्री जी के बयान से सदन संतुष्ट हो जाता है तो सदन में वाद-विवाद की आवश्यकता नहीं होगी। सदन का समय बचेगा, परस्पर दोषारोपण भी नहीं होगा। परन्तु प्रधानमंत्री

जी का व्यवहार एक निर्वाचित प्रधानमंत्री जी जैसा नहीं है बल्कि एक तानाशाह जैसा है। यह कितना दुखद है कि बहिनों के नग्न जुलूस निकाले जाने वाले वीडियों के वायरल होने के बाद भी वह चुप रहे और जब सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार पर टिप्पणी की तब उन्होंने दिखावटी तौर पर कुछ शब्द कहे। क्या अपने वोट के स्वार्थ के लिये किसी प्रधानमंत्री को इतना क्रू र होना चाहिये? यह सवाल परेशान करने वाला है। संजय सिंह की माँग को जिसका समर्थन लगभग सभी गैर एनडीए दलों ने किया था उनके लिये एक सुअवसर मिला था कि वे अपने चहरों पर लगे दाग को धो सकते थे परन्तु उप राष्ट्रपति जो राज्यसभा के सभापति होते है उन्होंने संजय सिंह को पूरे सत्र के लिये निलंबित कर दिया। संजय सिंह के मन में आक्रोश होना स्वाभाविक है और जिन लोगों ने उन बहिनों के नग्न वीडियो देखे है उनका आक्रोशित होना स्वाभाविक है। मैंने तो एक दिन बाजार में कुछ लड़कों के द्वारा एक लकड़ी को पीटते हुए देखा और जब तक हम लोग उसके पास उसे बचाने को पहुंचते एक सांड उनकी ओर दौड़ा और बच्ची को बचाया। एक जानवर में भी इतनी दया व क्षमता होती है क्या देश के प्रधानमंत्री से इतनी भी अपेक्षा करना अपराध है?

कुछ प्रबुद्ध जनों की यह आशंका है कि संजय सिंह को सभापति ने जिस आधार पर निलंबित किया है वह तो बहाना है। सभापति जी ने कहा है कि श्री संजय सिंह ने अनुशासन व शिष्टाचार का पालन नहीं किया। अनुशासन की परिभाषा डॉ. लोहिया ने जिनका नाम यदाकदा प्रधानमंत्री जी लेते हैं 60 साल पहले कही थी। उन्होंने लिखा था कि वाणी की आजादी व कर्म का नियंत्रण अगर संजय सिंह ने नारे लगाये तो यह तो वाणी की आजादी ही है और क्या इसका प्रयोग जिन राज्यों में भाजपा विपक्ष में है वहाँ विधानसभाओं में भाजपा के लोग नहीं करते। इसमें अशिष्ठता भी क्या है। बल्कि सच्चाई तो यह है कि, प्रधानमंत्री को खुश रखने के लिए सभापति जी ने सभापति के दायित्व की उपेक्षा की है और कर्म की अनुशासनहीनता की है। परन्तु भाजपा लोहिया को उल्टा पढ़ रही है। वह वाणी पर नियंत्रण लगा रही है और कर्म को आजाद कर रही है। सभापति केवल सदन के सभापति नहीं होते बल्कि वे एक प्रकार से सांसदों के अधिकार रक्षा के लिये अभिभावक भी होते हैं। अच्छा होता कि सभापति जी प्रधानमंत्री को निर्देशित करते कि वे सदन में पहले बयान देकर स्थिति स्पष्ट करें। हालांकि मैं जानता हू कि मैं जो उम्मीद कर रहा हूँ वह राज्यसभा के सभापति को संभव नहीं है जो व्यक्तिप्रधानमंत्री जी को तीन-तीन बार नमस्कार करे और प्रधानमंत्री उनकी ओर नजर ए इनायत भी न करें। इसके बावजूद भी उनके स्वाभीमान को चोट न लगे तो फिर सभापति जी से क्या उम्मीद की जाए। बहरहाल लोकतंत्र जनता का और जनता के लिये होता है और उसे बचाना अंततः जनमत का ही दायित्व है।

LESSER KNOWN HEROES OF INDIA'S FIRST WAR OF INDEPENDENCE (1857)

K.K. Khullar

If in Delhi the rebellion spread like wild fire, then in other places such as Muzzafarnagar, Saharanpur, Allahabad, Kanpur, Barelli, Banaras, Bihar and Jhansi it irrupted like a volcano. In rural areas, the spread was the fastest and fiercest where the peasantry came out in large numbers against the oppressive revenue system introduced by the Company Lords. Peasants rebellion in India have been traditionally tax rebellion. Gujjars were the worst rebels through out the rebellion. Between the rivers Jamuna and Ganga, away from the GT Road, at Dadri, Sarsawa, Deoband, Bijnour, Moradabad and Rohilkhand, Gujjar turbulence was so intense that it seemed the company's rule has ended. According to one estimate more than a million Gujjars participated in the revolt. A regular system of correspondence existed between the Gujjars living in different parts of the country. The participation of these pastoral and nomadic communities made the rebellion a truly people's revolt. The Rangars and the Rajput communities were out to prove that the Rajput valour is not a thing of the past. The Britishers forgot rather

conveniently that the Kisan (peasant and cultivator) of the peace time in India becomes a Jawan (solider) in war time. Jai Jawan, Jai Kisan had been a traditional Indian slogan. An extra ordinary fact stands out in the midst of the story of the great rebellions and that is even the main rebel leaders regarded the Mughal Emperor as their Badshah (King). Even those areas where the rebels established their authority they custom in the Mughal Court. Nana Saheb was a brave solider but his daughter Maina who was burnt alive at Bithoor was equally brave. People forgot their differences, communities set aside, their traditional rivalries the whole country faced their enemy as a united community. Udmi Ram of Libaspur, Delhi Abdul Samad of Badli-ki-Serai Libaspur is a Delhi village on way to Narela off bypass Karnal. The Britishers had established a him. As for the English woman he asked a Brahamin lady to look after her in a neighbouring village where she spent some good days among Indian women. But when the scales turned around and the British recaptured Delhi they surrounded Libaspur. Udmi Ram collected his men and fought with rural weapons such as spears, choppers and axes but was defeated. Arrested he was brought to British camp at

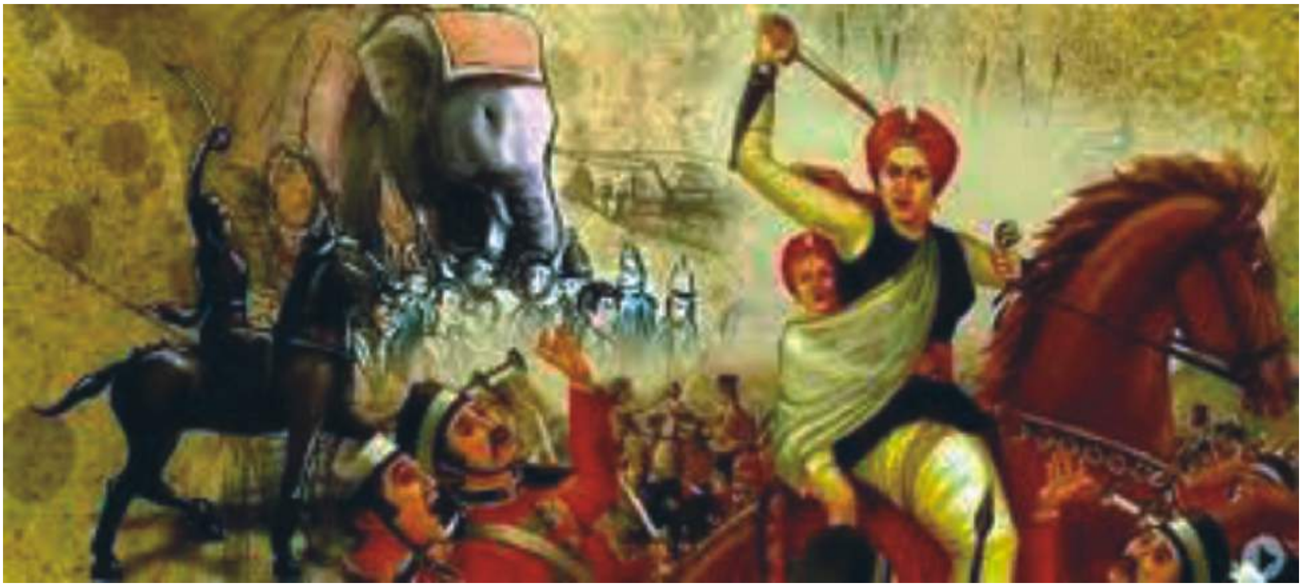

ruled in the name of the Mughal King. Rao Tula Ram of Rewari established his own government but collected the revenue in the name of the Delhi King. Nana Saheb declared himself a Peshwa at Kanpur but under the Mughal authority. The coins were struck in the name of the Emperor and the orders were issued in the name of the Delhi Badshah. The date on the coins were both in Hijri and Samvat as was the camp at Sonepat. Each time they passed they saw the handsome youth, a village Jat named Udmi Ram who had formed a group of strong-bodied Delhi Jats to catch hold of the passing English soldier and to finish him off at an isolated spot where there is a 'Shani mandir' today. One day Udmi Ram spotted out a cart carrying an English family. He asked the man to come out, took him to a lonely spot and finished Rai, tied to a peepal tree for 35 days without water or food till he died a martyr. Similarly Seth Ramjidas Gurwala of Chandni Chowk who financed the rebel movement at Delhi and its environ was executed before his own shop where he sold 'Gur' (Brown sugar candy). Abdul Samad Khan, father-in-law of the Nawab of Jhajjar fought with Punjab-Massacre at Ajnala Punjab was a problem

state. Annexed only in 1849, the Lawrence administration fully exploited the old rivalry between the Punjabi and the Poorbia. Yet there was a rising at Sialkot, at Jhelum, Peshawar, Nowshera and Multan where Ahmed Khan of Khurral tribe revolted. He was joined by other war-like tribes and for several days all communications between Multan and Labore were interrupted. with an iron hand. Rope being in short supply there, three hundred in all, were shot dead. Fredrick Cooper who styled himself as 'Hero of Ajnala' boasted that his men had not wasted a single bullet, a la Dyer statement at Jallianwala Bagh. The tragedy of Black Hole was reenacted, the number of mutineers who died of suffocation was not recorded. was a woman who, perched on a large peepal tree shot a number of British soldiers and was shot in return. The names of these brave women will never be known but what they did will never be forgotton. Lucknow was captured but never subdued, broken but it did not bend. Women's Regiment at Jhansi There was also a women's regiment at Jhansi where

They defeated the British in a number of skirmishes, but Lawerence sent a huge force and Ahmed Khan died in the battle, a hero's death. Another leader Mir Bahawal Fatwana emerged but he too died in the battle. The worst in Punjab took place at Ajnala near Amritsar where the dis-armed army revolted at Mian Mir. The rebellion was crushed

Amazons of Lucknow Under the able leadership of Begum Hazrat Mahal the women of Lucknow played a heroic role. For full eight months the women rebels of Lucknow held the Compnay's forces to ransom. Sir Gordon Alexander noted that among the slain at Sikandrabad there were a few Amazon Negresses. Who had fought like wild cats. There

Virangani Jhalkari played a role that won her a permanent place in the history of Jhansi.. When the fortunes of Jhansi were at a low ebb and the British soldiers were firing from below the fort, Rani of Jhansi decided to leave the fort, Jhalkari, originally a peasant women but now a soldier offered to disguise herself as the Rani, took a small unit of

soldiers and left from the front door while the real Rani left from the rear door. Jhalkari was recognized by a traitor but before dying she had killed a number of British soldiers. Before her martyrdom she shouted : 'Jai Bhawani'. Three Lions from Bihar Kunwar Singh and Amar Singh of Jagdishpur and Pir Ali of Patna are the three lions who taught such a lesson to the British that they were scared of them. In addition the Wahabis were a great threat to the English forces. When the captured Pir Ali was asked by the Commissioner Mr. Taylor whether he had any information to give which might induce the Government to spare his life, 'with dignified composure such as our own people did not maintain', writes Taylor, 'in exciting circumstances, he confronted the questioner and replied: 'There are some cases in which it is good to save life, others in which it is better to lose'. The Jagdishpur brothers were of a different mould. They literally fought like lions and called the British regiment a herd of sheep. When the Indian soldiers revolted at Dinapur on 25th July, 1857 Kunwar Singh seized the opportunity and made the whole regiment his prisoner, till 23rd August. In his anti-English expeditions in UP and MP he was accompanied by his brave Muslim wife Dharman Bibi. The British forces chased him perpetually. While crossing the Ganga he was severely injured.

He cut off his right arm and offered it as his sacrifice to the Mother Ganga. He was arrested in December 1859 and died in jail in 1860. The King of Avadh honoured him with a Robe of Honour. After his death the struggle was carried on his brother Amar Singh, his nephew Ritbhanjan Singh, his Tehsildar Harkishen Singh and his friend Nishan Singh. Mention must be made of Dilwar Singh and Srnam Singh. According to Dr. S.C. Sen in his book '1857', the Rajputs of Shahabad were out to prove that the Rajput valour was not a thing of the past'. Individually every rebel was defeated but they were victors at last. Shaheedon ki Chitaon par lage gay har baras meley Watan par mitne walon ka yahi Quami nishan hoga (Fairs will be held on the pyres of the martyrs That will be the only national symbol they leave behind.) India's First War of Independence threw many times more brave men and women than the combined strength of heroes in the French Revolution and the American War of Independence, tens of thousands of heroes, known and unknown and lesser known, the countless martyrs who did India proud.

जगत पाठक पत्रकारिता संस्थान, भोपाल

जगत पाठक पत्रकारिता संस्थान वर्ष 1998 से सतत् रूप से संचालित हो रहा है। इस संस्थान से अध्ययन कर छात्र-छात्राएं प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अच्छे पदों पर पदस्थ हैं। साथ ही साथ शासकीय पद पर आसीन होकर इस संस्थान को गौरवान्वित कर रहे हैं।

: विषय :

मास्टर ऑफ आर्ट जर्नलिज्म (2 वर्ष)

प्रवेश प्रारंभ

संपर्क सूत्र

विजया पाठक (संचालक) - 9826064596

अर्चना शर्मा - 9754199671

कार्यालय - कार्पोरेट कार्यालय - एफ 116/17, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र.

संस्थान - 28, सुरभि विहार कालोनी, कालीबाड़ी, बी.डी.ए. रोड, भेल, भोपाल, म.प्र.